श्री सिद्ध बाबा मस्त नाथ जी

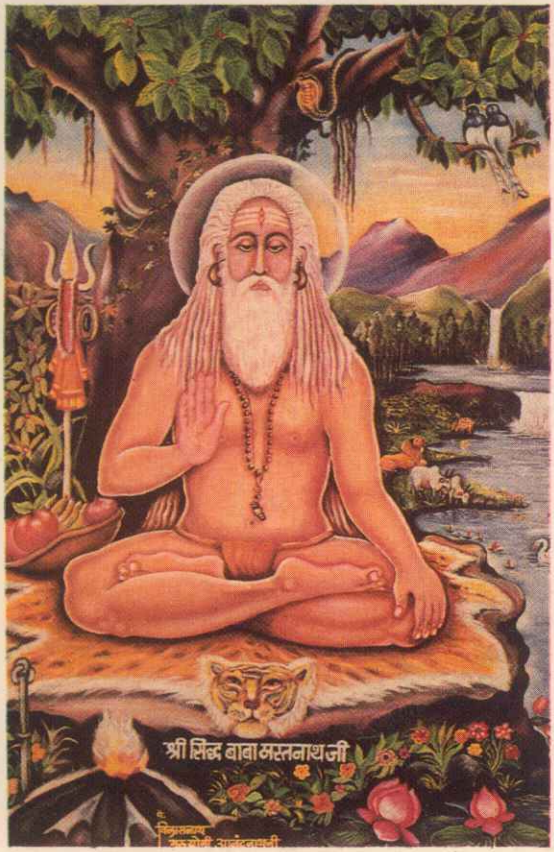

प्रकाशक - अवधूत योगी महासभा, हरिद्वार

श्री बाबा मस्तनाथ जी की कथा

दोहा–पहले गणेश मनाईये सुमर सारदा मात,
ओम नमो परमात्मा परम पिता मस्तनाथ ॥१॥
जिनकी कथा सुणाता हुं सुनियो करकै ख्यास
धर्म कथा के सुणन तैं हो रंज सोग का नास ॥२॥
देशों में एक देश है हरा भरा ये हरियाणा
सच्चा हैं प्रचार जहा घी दूध दही का है खाणा ॥३॥
हरी भगत जहा हैं घणे साधू सन्त के दास
प्रेम जोत जगती रहे ६ रितु १२ मास ॥४॥
पाकसमें के पास में एक है कसरैंटी गाम
सबला रहभारी कोम के जिला रोहतक खास मुकाम ॥५॥
बणज वपार के लिये दिल्ली पहुंचा सुख साथ
जमुना जी के घाट पर तप रहे थे गोरखनाथ ॥६॥
पान फूल और भेंट धर लिये चरण चुचकार,
हाथ जोड़ विनती करै सबला बारम्बार ॥७॥
खुशी हुए श्रीनाथ जी बोले मांग वरदान,
होना चाहिए पुत्र एक तेजवान गुणवान ॥८॥

॥ वार्ता ॥

बाबा—सेवक पुत्र होगा नहीं, पा जायेगा।
सेवक—महाराज कब पा जायेगा।
बाबा—एक साल के बाद में।

यह वरदान देकर गुरु गोरखनाथ जी रमते राम हो जाते हैं।

सबला रहभारी नमस्कार करके अपने घर आ जाता है और अपनी स्त्री से गुरु गोरखनाथ मिलने की और वरदान देने की सारी बात बताई। स्त्री पुत्र के वरदान को सुनकर खुश हो जाती है। उसी दिन से सोचती है कि मेरे गर्भ में कब पुत्र का प्रकाश होगा अब मैं भी पुत्र की माता बनूँगी। रोजाना यही बात दिल पै रहती थी। जब कभी काम धन्धे से फुरसत होती तो वीर मर्द श्रीनाथ जी के विषय में बातचीत करते रहते। उधर गुरु गोरखनाथ जी अपने मन में विचार करते हैं सबला रहभारी ने मेरे से पुत्र का वरदान लिया है इसलिए एक बार बालक रुप बनाऊं।

भजन नं० १

तर्ज—चोक लीया

कला दूसरी धारकै गोरखनाथ गुरुजी आया
बालक रुप बणाकै राह मैं रहभारी नै पाया।

किसका बालक कौण छोड़ग्या कई कई रुक्के मारे
चन्द्रमा सी शान, भान, ज्यों खिल रहे मोहन प्यारे
पूनम जैसा चांद लिकड़ रहा और पास में तारे
बालक नै गोदी में लेकै अपने नगर पधारे
प्रसन्न हो दे रहा हूंकारे मन का मोहद बढाया ॥१॥

सिंह समान थी गठन शरीर की चन्दन कैसा पोरा
मोटी आँख और चोड़ा माथा राज्यां जैसा ठिठोरा
गाम में जाकर बूझण लाग्या किसका है ये छोरा
यो बच्चा तै गाम का कोन्या सबने पाटग्या बेरा
उस बालक का आप ढिंढोरा नगरी में पिट वाया ॥२॥

तुमने पाया तुम्हीं राखो कर दिया तोड़ खुलासा
रहभारी धर आप हरि ने जमा लिया घर बासा
नाथ वचन से पुत्र मिलग्या देने लगे दिलासा
पुरुष स्त्री खुश होगे इसा देख्या अजब तमाशा
कुदरत न करी पुरी आशा कँवर काल जै लाया ॥३॥

सतराह सौ चौंसठ समत्था, लिन्हा देख ध्यान धरकै
मस्त रहे और खेले कूदे बच्चों के संग में फिरकै
साम सवेरे मात पिता के चरणा कै में सिर धरकै
शील वचन वो लेण लागग्या आप गजु सेवा करकै
रामेश्वर ने प्रेम में भरकै नाथ चरित्र गाया ॥४॥

॥ वार्ता ॥

माता पिता विचार करते हैं कि बच्चा घर का काम-काज नहीं कर सकता। कोई नगरी में ऐसा विद्वान नहीं जो बच्चों की शिक्षा देता हो। यह दिन भर खेलता ही फिरता है इसलिये इसको पालियों के साथ गऊ चराने भेज दिया करो। फिर उसकी माता की ममता बढ़ी और क्या कहती है

भजन नं० २

तर्ज—भली करी पणमेसर ने

टेक—माताजी सूता पास बुलाके खाली गोद भरण लागी।
आईयेरे मस्ताने बेटे न्यू हँस हँस नाम धरण लागी ॥
कर्मा करके लाल मिला ज्यों कंगले ने धनमाल मिला
ज्नू मुरगाई ने ताल मिला उठी आशा लहर तरैण लागी॥१॥
सारा संकट दूर भागग्या मेरा दिवे के दिवा लागग्या
नर भाग्ण का भाग जागग्या न्यूँ दिल बीच जरण लागी ॥२॥
मेंट दिया मेरा सकल अंधेरा, बसा बसाया रहग्या डेरा
जग नाम चलेगा मेरा न्यूँ फूली हुई फिरण लागी ॥३॥
मेहर घणी कर गये महात्मा, दुःख बिपता का करा खातमा
रामेश्वर खुश हुई आत्मा गुरु के आन चरण लागी ॥४॥

भजन नं० ३

तर्ज– राधेश्याम

दोहा–रहभारी का पुत्र कहावै दिल तै सेवा ठावैथा।
पालियों के संग में मिलके जंगल कै मैं जावैथा ॥१॥
जिनमें पहले खेला करता वो बालक एक दिन कहन लगे
तेरे बिना तो खेल बिगड़ग्या सब साथी कुन्द रहन लगे॥२॥
बच्चों ऊपर दया करी इसलिये दो रुप बनाये थे
१०१ खेल बच्चों में करने आप सिखाये थे ॥३॥
लिया खेलता देख पिता ने घराँ गया जब बूझी बात
गऊ चराण जाता कोन्या तू खेले बच्चों के साथ ॥४॥

हुआ सबेरा गऊ चरावन जंगल के मैं चला गया
एक रुप फैर बच्चा के महानगरी में ही खेल रहा है ॥५॥

दूजे दिन भी वहीं खेलता बच्चों के महा दिया दिखाई
सांज हुई पालियों से पूछा सांचीं बात बताओ भाई ॥६॥

महारे साथ नित गऊ चरावे करते झूठी नहीं बड़ाई
घड़ी बंब न्यू कहन लगे ताऊ हमने सच्ची बात बताई ॥७॥

साची तै तुम कहते कोन्या, मस्ता से सब डरे बिचारे
मेरे तै मन जची कोन्या पाली झूठ बोलते सारे ॥८॥

॥ वार्ता ॥

सबला रहभारी अपने मन में विचार करता है कि एक दिन आप मैं खुद जाकर देखूँगा फिर बच्चे को धमकाऊंगा। अगले रोज पुत्र वहीं खेलता देखा तो बन में गया रुख के नीचे पुत्र बैठा है गायें चर रही हैं। उसी वक्त गाम में आया पुत्र वहां भी पाया। तब तो चक्कर में पड़ जाता है। उसी वक्त फेर गया, तब भी पुत्र गऊओं के पास मिला जल्दी-जल्दी आवै, जावै दोनों तरफ से दर्शन पावै सबला रहभारी भ्रम जाल में पड़ जाता है और नगरी के मुखिया आदमी साथ लिये तब गाम कै गौरे बच्चों में खेलता दिखाया फेर जंगल में गये तो वहां जाकर देखा कुछ और ही माया पाई। मस्ता सो रहा है। अजगर छाया कर रहा है। यह दृश्य देखकर सभी अचम्भा करते हैं और चुपचाप से उनको देखकर विषधर गुप्त हो जाता है।

भजन नं० ४

टेक–मस्ता सोवे निर्भय होके बालरुप ब्रह्मचारी,
सब लीला ने देख अचम्भा करगे सब नर नारी ॥
उठकै बैठा कंवर दीदारी फूलां केसा लच्छा
कुशल खेम सब बूझण लागे ख्याल बताया अच्छा
गाम के गोरे मिला वोहे बच्चा एक शिक्ल ३ उनहारी ॥१॥
सयाणै मानस न्यू बोले यो मतलब हमें टोह लिया
विषधर छाया सिर पै कर रहा है निर्मय आप सो लिया
यौ बालक कोयें सिद्ध औलिया सही अलख औतारी ॥२॥
राजा और महाराजा बनज्या सै इसा कर्म सितारा
ऋषि मुनि सन्यासी योगी तप कर रहा सै भारा
रहभारी के स्वर्ग द्वारा तेरा पुत अधिकारी ॥३॥
जीयानन्द ब्राह्मण भोले जो विद्या का दान करैं,
संध्या, तर्पण, हवन, गायत्री, पारब्रह्म का ध्यान करैं
रामेश्वर सम्मान करें सब देख के लक्षण भारी ॥४॥

भजन नं० ५

तर्ज – जौहरी उदेभान

टेक–निराकार, भोपाल बनके रहभारी का लाल
पूरे होंगे बारह साल वो बन में गऊ चरावै था ।
हमने भी तिस्स लगी बाछडु मरे तछाऐ माहरे ।
सब पाली घर जाँ सै मस्ता तुम भी चालो प्यारे
बोला सारे सुन लो भाई इब चाह बै सै बारिस आई
गुरु ने ऐसी बात बताई सबकी टाल करावै था ॥१॥

मस्ता की ना माने पाली चले गाम की राही
कुछ थोड़ी सी दूर गये थे घटा गगन में छाई
लाई दाता ने झड़ी मेघा बरसा पैहर घड़ी
बोल की तोल दी घड़ी, चहन करकै दिखालावे था ।।२।।
अपने अपने घर जाकै न सब न जिकर चलाया
जो मस्ताना सबला का है इसने जल बरसाया
माया फैरी जिसने आप जग के काटे तीनों ताप
इसके जती सती माँ बाप न्यू उनके चरण पुजावै था ।।३।।
रामेश्वर मेहमा न्यारी ना भेद किसे ने पाया
जात बरण का ब्यौरा कोन्या यो किसने जन्माया
आया देव लोक तै भूप सै यो बालक महानूप
सबनै समझे एक सवरुप न्यू सारा गाम सहरावै था ।।४।।

भजन नं० ६

तर्ज— सदके जावे

टेक—एक दिन पाली गऊ चराते कर गए सीमा पार,
म्हारे करतार सुनो ।
दिलकै मां बिस वास खास हे मस्ता तेरी बाणी का
मेरे तिसाये जो लिकड़ा टेम सधा है हानि का
पानी का सब जिकर चलाते हुए चलन ने तैयार
म्हारे करतार सुनो ।।१।।
चलकै एक बाछड़ी आई धर दिया उसके ऊपर हाथ
एक बालटी दूध निकाला सबने देख ली करामात
मस्तनाथ फिर न्यू फरमाते दूध पियो मेरे यार
म्हारे करतार सुनो ।।२।।

अमृत रस बरसे वाणी देवता के मन मोहकैं न
मन चंगा तो पास ही गंगा दाग दिलों के धो कैं न
खुस हो कैं न दूध पिलाते हो रही जय-जयकार
म्हारे करतार सुनो ॥३॥
रामेश्वर एक बारात जा रही उनको पास बुलाया था
आदर सहित बैठाकर उनको छिक-छिक दूध पिलाया था
मन भाया था शीष झुकाते देते दुवा हजार
म्हारे करतार सुनो ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सभी बराती मस्ता से पूछते हैं भाई तू किस जात का का है। कहता है मेरी कोई जात नहीं और पाली बताते हैं ये रहभारी का है। सबला इसके बाप ता नाम है और किस्रहटी इसका गाम है। यह सुनकर बराती मस्ता को राम-राम करते हैं और अपना रस्ता लिया श्याम हुई जब सब पाली अपने घर आये और अपने कुटुम्ब वालों से ये दासतान बताते हैं।

भजन नं० ७

टेक—लगी प्यास जोर की एकदम जान लुबा पै आई
उसी समय मस्ता बोला मत घबराव मेरे भाई।
नदी, कुवा, तालाब नहीं हो पानी का फरमाला
किते पानी पाया कोन्या जंगल देखा भाला
लई बाल्टी हाथ, नाथ ने योगी अजमत वाला
थापी मारी गऊ की कड़ में रटकै दीन दयाला
जिस बछिया का दूध निकाला वा बछिया थी बिन ब्याई ॥१॥

कोयल जैसी मीठी वाणी सबके मनको भाती
सारे पाली पास बलाये सजकै बैठी पाँती
कोए भी बाकी रहने ना पाए दूध पियो मेरे साथी
जुग जुग भला होवै मस्ता का कहते बोल सुहाती।
उसी वक्त धोरे कै जाती दई बारात दिखाई ॥२॥
रुक्का देके पास बुलाए सबको दूध पिलाया,
एक बार दूध निकाला ना हाथ दूसरैं लाया
उस पातर में दूध घना वो एकदम कितनैं आया,
मस्ता तै कोए असल देवता इसकी अद्भुत माया,
आँखा देखा हाल बताया करते नहीं बढ़ाई ॥३॥
रामेश्वर बचपन में विद्या बण नादान सीख ले,
साधू गऊ ब्राह्मण का तू करना मान सीख ले
आसान विद्या तपोः नः दानम् वेद पुरान सीख ले
सुबह श्याम जा बैठ भजन में लाणा ध्यान सीख ले
जियानन्द का ज्ञान सीख ले, मिले स्वर्ग की राही ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनो बालक जाण कर विश्वास नहीं करते हैं वापिस बरात कसरेंटी गाँव में आई और सबला रहभारी का घर पूछा और मस्ता के चरण पूजने लगे मस्ता कहता है मेरे पिता का मान करो मेरा नहीं उसके कहने पर सबला रहभारी के चरणों में सभी बाराती लक्ष्मी चढ़ाकर चरण लेने लगे। और नमस्कार करके अपने घर चले जाते हैं। इस चमतकार को देखकर तमाम गाँव उसका सत्कार करता है। यह कोई देवता है इसको पाली मत भेजो और इसकी सेवा करो। इसमें ही हम

सबका कल्याण होगा सबला रहभारी अपने पुत्र से कहता है कि तुम गऊ चरावण मत जाओ, घर बैठे हरि के गुण गाओ।

दोहा–मिसर नाम का एक ब्राह्मण नगरी में विद्वान।
सज्जन शील और देवता सादा पुरुष महान॥

॥ वार्ता ॥

उसी दिन से सबला रहभारी के घर में आंगन के बीच में ठीक आधी रात के बाद देव सभा लगा करती ब्राह्मण दर्शन किया करता वही ब्राह्मण एक दिन सोचता है कि सबला रहभारी के यहां बहुत महात्मा आए हुए हैं। किसी दिन जाकर कै दर्शन करूंगा। किसी कामकाज के लिए एक दिन फिरता-फिरता सबला रहभारी के घर आया देखता है तो न साधू है नहीं वहाँ पर धूना मिला कोई निशानी भी नहीं मिली तब तो ब्राह्मण इस आश्चर्य में पड़ जाता है और चुपचाप रहा फिर सबला रहभारी पूछते हैं कि पंडित जी कैसे आए थे। पंडित जी कहते हैं कि वे सन्त महात्मा कहां गए। सबला रहभारी कहता है कि यहां कोए सन्त महात्मा नहीं आए।

भजन नं० ८

तर्ज—चौक लिया

टेक–ब्राह्मण जागै नगरी सोवै सज्जन पुरुष बड़ा भागी।
रहभारी तेरे बगड़ बियालै देखी देवसभा लागी॥

करकै दर्शन होज्या प्रसन्न दिल में खुशी मनावै था
दिन में जाकै देखूंगा न्यू भी दिल में चाहवै था

जागै बैठे भजन करै इसलिए दर्शन पावै था।
सबला रहभारी के आगे सारी बात बतावै था
इसलिए अचरज आवै था आंख्यां देखी झूठी पागी ॥१॥
बार-बार में बात सोचता कतई ध्यान में आती नहीं
सहमग्या ब्राह्मण बात चलाई वी जाती नहीं
जिकर तै जरुर करूं पर निशानी भी पाती नहीं,
भक्ति और तपस्या मेरी रही ज्ञान गाती नहीं,
धर्म रहा मेरा साथी नहीं न्यू करकै तबियत घबरागी ॥२॥
सबला बेटे तेरे की तकदीर बहुत घणी आच्छी,
उसके घर का किसने बेरा किसने कर्म रेखा बांची,
नकली से तो असली करदें छोड़े नहीं बात काची,
पंडित जी तू बहका दिया ना अकल बीच बात जाँची
झूठी ने तो करदे सांची तुरत बात घड दे सागी ॥२॥
म्हारे पुत्र ने बाबा कहते हम रोवैं सिर ने धुण कै
आड़े ना कोए बाबा ना कोए घूना तू आया किततैं सुनकै
बिना हुई ये बात चलावें ६० बताऊ में गिनकै
दुनिया का कुछ ठीक रहा ना ढावैं भीत नई चिनकै
रामेश्वर पागल बनके ये दुनिया भूल भाग रवागी ॥४॥

भजन नं० ६

तर्ज—भर रहा चाव में

टेक—कर ध्यान लिये, पहचान लिये, मेरी मान लिये,
ना झूठी बात कही।
गंधरप आ पहुंचे फिलहाल, सूरत सुत की है कर ख्याल,
लाल भी तेरा, धन माल भी तेरा, महीपाल भी तेरा,
है गोरखनाथ यही ॥१॥

बीत गई जब सारी रात अपने घरां गया प्रभात
फेर बात बताई, सुने लोग लुगाई, ना धूणी पाई,
वा दिन में कड़े गई ॥२।
पिता ने पुत्र बुलाया पास, मनैं तू भेद बता दे खास,
न्यू अचरज आया, भेद ना पाया, इसी देखी माया,
अब मिली पहचान नहीं ॥३॥
रामेश्वर इसी देखी बात, वैसा ही पेश करा हालात,
सुनो माता पिता, मैंने नहीं पता, दियो आप बता,
ज्यूं मुक्ति मिले सही ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनों सबला अपने पुत्र को कहता है कि तुम गऊ चरावन मत जाओ। घर बैठे हरि भजन करो। उसी दिन से भजन करै और मस्त रहा कुछ दिन के बाद वहां नरमाई नाथ नाम के एक महात्मा आए। गांव से पश्चिम की तरफ धूना लगाया। कैस रेंहटी गांव के सेवक उनके पास आने लगे और उनके प्रवचन सुनने लगे। गांव के मुखिया आदमी कहने लगे कि मस्ता को उन महात्मा के चरणों में भेंट कर दो। सबला रहभारी अपने पुत्र को लेकर कुटुम्ब सहित आकर के नरमाई नाथ जी के चरणों में मस्ता को चढ़ा देते हैं। और कहते है कि महाराज मैं तुम्हारा चेला रहा। उनकी बात सुनकर गुरु "नरमाई नाथ" न्यू कहने लगे।

भजन नं० १०

टेक–स्वामी जी न्यू कहन लगे मैं चेला करता कोन्या,
ना समझी में सिरपै बोझा अपणे धरता कोन्या।

म्हारा चेला होगा वो आप बणेगा करके सुभा मुलायम
ले जाओ जिसका बालक सै यो म्हारे कोन्या काम,
सहम लजावै नाम के हमने चेल्यां बिन सरता कोन्या ॥१॥
पढ़ लिख के बाबूजी बण जा लड़का तेरा नबाब
मेरी गैल्यां फिजूल फिरेगा इसका के जबाब
करदे भजन खराब फेर म्हारा लागे पड़ता कोन्या ॥२॥
जिसने बंधन तोड़ दिये वो बंधन में ना रहता
ज्ञानी के धोरे बैठे वो बात ज्ञान की कहता,
बण मे शेर अकेला रहता वो किसे तै डरता कोन्या ॥२॥
रामेश्वर कुछ कर्म देख कै सिर क ऊपर हाथ धरा,
"अलख" मिलन में सुरति तेरी दिल अपने में नहीं डरा
भजन करे नित गुरुदेव का सूना फिरता कोन्या ॥४॥

भजन नं० ११

तर्ज—राखिये आ॰रमान

टेक–सतगुरु जी महाराज लाज रख मेरी,
चेला कर लो नाथ करो मत देरी ॥
तुम सन्त, महात्मा, दया रुपी बड़े भारी
खुश हो करो कबूल अमानत थारी।
सिर पै धरदे हाथ बात बता सारी,

जिस सै हो पूरा ज्ञान बनूं तपधारी,
बिना भजन अस्तल धूल की ढेरी ।।१।।
करो मेहर मैं थारी शरण में आया,
होज्या पूरा ज्ञान हो मन चाहा,
ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ही गुरु बताया,
भवसागर से पार करो गुरुराया
पायां में सिर धरूं करूं टहल धनेरी ।।२।।
सब दुनियां को बंधन से मुक्त कराते,
हो वैतरणी पार शरण जो आते,
मिटज्या आवागमन लाईन पर लाते,
भ्रम जाल की फांसी काट गिराते,
बंधे धर्म का पाला न्यू माला टेरी ।।३।।
गुरु जियानन्द विद्वान ज्ञाने बतला दे,
भंवर बिचाले नाव गुरु पार लगा दे,
मास, पक्ष, शुभ तिथि और लगन बतादे
ले ले चोटी गुरुमन्त्र सैन सिखादे
रामेश्वर थारा नाम रटूं शाम सवेरी ।।४।।

"काफिया"

फिर नरमाईनाथ खुश होग्या, बोल्या तू बालक है बड़ा स्याणा, तेरे घट भीतर ज्ञान अटूटा, तनें मैं इबेए दूंगा बाणा, समृत १७७६ था गुरु का हुया बोहर में आणा ।

।। वार्ता ।।

सज्जनों–मास, पक्ष, शुभ तिथि का विचार किया। लगन, नक्षत्र, मुहूर्त, योग देखकर गुरु मंत्र विधि पूर्वक सिखाया तथा नाम धरा 'मस्ताईनाथ' तब उसकी माता रहभारन कहती है कि हे महाराज मेरे लड़के का नाम लड़की जैसा रख दिया। फिर महाराज बोले माई तेरे लड़के का नाम मस्तनाथ रख दिया तब माई कहती है कि महाराज यह ठीक है। माई ने तड़वा दी आई; फिर गुरु ने अस्थल बोहर की सुरति लाई। गुरु अपने शिष्य को लेकर बोहर आए। यहाँ पागल पंथ के साधू थे। वे किसी को रोटी नहीं दिया करते थे। और देते भी कुछ काम करवाकर। गुरु वृद्ध थे। चेला जवान था। यहां का वर्तमान पीर कहता है कि मस्तनाथ तुम घास ले आओ बूढ़े बाबा को आराम करने दो। श्री मस्तनाथ जी कहते हैं जो आज्ञा महाराज, सुधा जड़ खोद लाऊं। पीर बोला हाँ सुधा जड़ ले आओ। ऊसी वक्त एक भंडारी बोलता है कि जड़ तो छोड़ दिया 'महाराज'। मस्तनाथ जी महाराज उसकी बात सुन खुश हुए और बोले कि तेरा वचन रहेगा 'मस्तनाथ जी ने खेत में जाकर उनकी जड़ खोद दी, दो साबत एक आधा पागल पंथ के ढाई योगी रख दिये। सिर से सवा हाथ ऊपर दूब की गठड़ी आई। तब तो फिर पहचान गया कि यह कोई सिद्ध पुरुष है। यह चमत्कार करके बाबा श्री मस्तनाथ जी पेहवा तीर्थ पर चले जाते हैं।

भजन नं० १२

टेक–मस्तनाथ भगवान ध्यान खुद ज्ञान से करता,
चेत की अमावस का मेला पेहवे में भरता।

सरस्वती नदी के ऊपर जाकै धूणा लाऊं,
सतनाथ ब्रह्म की नगरी प्रचा अजब दिखाऊं,
बारा पंथ महीं भंडारा जाकै दर्शन पाऊं,
घणा महत्व है तीर्थ का इसलिए जल्दी जाऊं,
फेर बोहर में बापिस आऊं इतने रहे म्हारी सुरता ॥१॥

शिष्य अनेक संग में लेके तीर्थ पेहवा आगे,
धूणा लगा दिया सरस्वती पर सबके आसन लागे,
लगी भजन में सुरति जिनकी अलख मिलन में जागे,
मस्तनाथ भगवान हुए जो साहिब सतगुरु पागे
बैठे थे निखाणी नागे हाथ वैरागण धरता ॥२॥

नाथा के नौ मन्दिर बन रहे पीरां का पूरा डेरा,
सहस्त्र योगी तपन लागरे जती सती का है फेरा,
उसी दिन कोई अलक भेष में योगी भंडारा दे रहा,
माल पदार्थ घुटन लागरे सारे कै पटग्या बेरा,
बारा पंथ भेष गुरु मेरा सब मर्यादा से डरता ॥३॥

मस्तनाथ कै धोरे आके एक साधू या बात कहै,
चलो रसोई जिमन फक्कड़ पाछे रहके कष्ट सहै,
मस्तनाथ न्यू कहन लगे थारी खोटी करणी आण दहै
वो साधू अजमत का पूरा जो सिद्धा की सैन लहै,
रामेश्वर सदा अमर रहे यो जीव कभी ना मरता ॥४॥

।। वार्ता ।।

पहेवा तीर्थ पर एक दिन कोई महात्मा भंडारा दे रहा था। कुछ साधु बाबा मस्तनाथ के धूणे पर इन्हें भोजन के लिए निमंत्रण देने आए। सज्जनों वे योगी कुछ अन्तर रखकर कहते कि चलो जल्दी पंगत में, बाबा मस्तनाथ कहते हैं कि सुनो महात्मा हमारी बात मैं ऐसी रसोई नहीं जीमता पहले हमारी भेंट पूजा दें। बारा कम्बल बारा अगवानी, बारा भंडारी बारा पंथ के साधु भेंट लेकर आएं व धूणे पै चढ़ाये। इस बात को सुणते ही बहुत धणे साधू तड़तड़ाके पड़े व कहने लगे हे औघड़ तू बहुत बावला है तेरे जैसे मलंग लफड़े-जफड़े करते फिरते हैं। भेष की मरयादा को भंग करते हैं। हम दर्शनी साधू तेरे चरण कैसे पूजेगे। ये सब जानते हैं कि दर्शनी में करामात होती है और औघड हमारी सेवा करता है यदि तेरे अन्दर करामात है तो करामात दिखाओ।

भजन नं० १३

टेक–दिखा कोए करामात नाथ जी जब पूजेगे चरण तुम्हारे
जै न पाई करामात तै घणे कानून सख्त सैं म्हारे।

बड़ा दर्शनी छोटा औघड़ सेवा के में रहता।
पूरी विद्या याद हुए बिन ताड़ फाड़ सब सहता।
निति और मर्याद भेख की अक्षर-२ लहता।
तू करता अपमान भेख का पाप धार में बहता।
सोच समझ के कोन्या कहता बात कहे से बिना बिचारे ।।१।।

मस्तनाथ न्यू कहण लगे सुनो तपसी नाथ श्री।
ढील मिन्ट की लाऊं कोन्या करामात लो देख खरी।
एक दम रचना चार युगों की लगे दिखावन आप हरि।
मर-मर जावै भेद ना पावे बहुत घणी दुनियां निगुरी।
फेर बूझियो जात मेरी सब राहां पेटे भरज्यां थारे ॥२॥
सतयुग में सोने के दर्शन चांदी तरेता करो पहचान।
तांबा द्वापर कलियुग माटी बांध दिखाई आण और काण।
सेली सिंगी नाद जनेऊ दर्शन कर लो तुम अनजान।
फेर नहात्मा न्यू बोले कोए बाजीगर है वेऔसान।
हम ना करते प्रमाण इसे बाजीगर बहुत फिरैं हैं प्यारे ॥३॥
बाजीगर ज्यूं करा तमाशा करके साफ हाथनै।
भेख बावला सा होग्या माने ना करामात नै।
सात सनुन्द्र मुख के अन्दर बहा दिये आप ताप नै।
फेर चरणों में पड़े तपस्वी डाटो इलामात ने।
रामेश्वर गुरु मस्तनाथ ने तोड़ दिखाए हर के तारे ॥४॥

दोहा—जोगी भेख अलेख है भेद ना पावे कोए।
ना जाने किस रुप में नाथ निरंन होय ॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनों अब साधु अपनी गलती की क्षमा मांगकर बारापंथ भेष में जाते हैं और जा करके क्या कहते हैं आई पंथ के साधू श्री नरमाई नाथ के शिष्य अदभुत सिद्धियाँ जानते हैं और कहते हैं कि बारा पंथ प्रर्चा लेओ और हमारी भेंट पूजा देओ। इस वचन के सुनते ही योगी क्रोधित हो जाते हैं और

कहते हैं कि केवल श्री गोरखनाथ को तमाम भेख पूजा दे सकता है। हम और किसी को नहीं मानये। भेख की मर्यादा को मानते हैं। कानों में कुंडल नहीं, गले में नाद जनेऊ नहीं, भला दर्शनी योगी उसके आगे कैसे सिर झुका सकते हैं। जाकर के उससे कह दो कि मान बड़ाई हम नहीं देते। कलियुग के जीव बहुरुपिया बनके आते हैं। जगत को भरमाते हैं। श्री मस्तनाथ जी अपने मन में विचार करते हैं कि भेख को लगातार कई सिद्धियां दिखाऊं। तब ये पूजा करेंगे। ये कहकर पवन देवता छोड़ दिये।

॥ काफिया ॥

एक दम दिन तें रात वणा दी, आंधी घणे जोर आई, जिसका कोए प्रमाण मिला ना एसी धुंध गगन में छाई, व्याकुल हुए तपस्वी सारे करने लगे राम दुहाई ॥

भजन नं० १४

तर्ज—फेंरा की त्यारी कर दी

टेक–शिखर चढ़ा दिया रेत पता लाग्या ना सूल छड़ी का
होग्या अरसा चार घड़ी का ॥

रात दिन का बेरा कोन्या अपने और पराए का,
महा घोर अन्धेर माच्चा फरक लगा ना क्याहे का,
अण समझी में कष्ट भोग्या पता लगा ना गाहे का,

रुख पाड़ कै शिकर चढ़ा दिये गिरने लगे आकाश तैं,
छोड्डी कोन्या बस्तु कोये उड़ा दी पास तैं,
गोरखनाथ गुरु पूरा देख्या नहीं ख्यास तैं,
भेख बावला सा होग्या यो फायदा मिला अड़ी का ॥१॥
दूजी माया मस्तनाथ नै करकै नै दिखाई थी,
श्वांस तक खींच हवा घट में समाई थी
सूर्य कला चेतन करके एक ही जगहै टिकाई थी
रोक दिया अर्थ जिसका थाम दिया चलता महमान,
सूर्य से अग्नि पड़े डटके होण लागे ब्यान,
भून दिये साधु सारे होने लगे परेशान
टोहण लागे छाया शरणां लेगे खड़ी पड़ी का ॥२॥
एक दम व्याकुल होगे सारे तड़ाके का पड़ै धाम,
एक जगह डाट दिया हुई नहीं सुबह साम,
सरस्वती से विनती करें सतनगरी ब्रह्म का धाम,
ब्रह्म के पुराने मन्दिर सरस्वती ने खतरा रहे,
चालो तुम सूरज भगवान श्री मस्तनाथ कहै,
खुशी रहें तीर्थवासी भेख कष्ट आप सहै,
गुरु मस्तनाथ नै हाथ मैं बटुआ ठालिया ज्ञान जड़ी का ॥३॥
खोदण लागे समाधि साधू गुरु पै होके कुरबान,
घट में गोरखनाथ बिराजे आपस में बंधाई आण,
एक-एक में दो-दो बड़गे २४ होगे अंर्तधान,
बालक योगी हट करके ने समाधी खुदवान लाग्या,
गुरु ने जब बेरा पाट्या हाथ पकड़ समझावन लाग्या,
श्री मस्तनाथ के धोरे लेग्या चरणा में चढ़ावन लाग्या,
रामेश्वर यो जतन जंजीरा मोती खास लड़ी का ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनों उस बालक योगी का गुरु श्री सिद्ध मस्तनाथ से प्रार्थना करता है कि हे गुरु गोरखनाथ मेरे चेले को बख्श दो। हम आपके नाम के आधार से जीवित रहते हैं। इस वचन को सुनते ही श्री सिद्ध मस्तनाथ जी उस बालक के सिर पर हाथ रखते हैं और कहते हैं कि जाओ बख्श दिया। उस बालक का हठ छूट गया और ज्ञान प्राप्त हो गया। इस दास्तान को देखकर तमाम भेख समझ जाता है कि यह सब लीला इस योगी की करी हुई है। तब तो समस्त भेख पूजा भेंट लेकर उनके चरणों में चढ़ाते हैं।

सवैया १५

सिद्ध मस्तनाथ थारी माया न्यारी पूजां चरण ठेठ आकै।
सुख शान्ति का शद्ध मिले सै धूल थारी माथे लाकै।
पहले सोधी नहीं सम्भाली ईब समझे ठोकर खाकै।
मन इच्छा फल सब कोए पावै पीर फकीरां ने ध्याकै।
चार युगां के चारों दर्शन दिखा दिये कानों में पाकै।
सात समुन्द्र मुख के अन्दर तुमने दिखा दिये बाह कै।
आंधी छोड़ी सूरज डाटया २४ गये कसम खाकै।
रामेश्वर मन मिले शान्ति गुरु थारी महिमा गाकै॥

दोहा–चन्दा चलै, सूरज चलै, धरण चले दिन रात।
योगी अचल कदै ना चले, कह गए गोरखनाथ॥

भजन नं० १६

तर्ज—चौक लिया

टेक–लख चौरासी जीया जून का रखने वाले मान तुं ही,
अजर अमर अविनाशी दाता मस्तनाथ भगवान तुं ही।

अंधो को नेत्र देते, भूलों को राह बतलाते जी,
अगम अगोचर ब्रह्म स्वरूपा, त्रिभुवन आप कहाते जी
घट-घट आप समाते जी, हो परम पद का ज्ञान तूंही ॥१॥

पूजा की सामग्री सारी भागे दौड़े फिरते,
पां चूचकारो मस्तनाथ के क्यों सहम तबाई भरते,
हाथ जौड़ के विनती करते सच्चे ईश महान तूंही ॥२॥

गुरु गोरखनाथ ने भेख समझग्या है म्हारा सरदार,
क्या तारीफ करें गुरु साईं लीला अपरम्पार,
कलियुग के अवतार श्री गुरु मस्तनाथ निर्वाण तूं ही ॥३॥

रामेश्वर उस दिन की शोभा माया अजब निराली थी,
लगा दलीचा पेहवे के में शोभा देखी भाली थी,
रही भेख की लाली थी सब मुश्किल और आसान तुही ॥४॥

भजन नं० १७

तर्ज—इशारा हो गया

टेक–कोठ खोखरे बण में, सिद्ध चौरंगी आया था,
ऊँची पौड़ी सिद्ध जोगी ने धूणा लाया था।

आठ पहर सुरति राखै था उस भगवान में,
किसे किस्म की आशा तृष्णा कोन्या ध्यान में,
जंगल बियाबान में अस्थान जंचाया था ॥१॥
लखी नाम एक बंजारा चला हुआ जा रहा था,
हाथी, ऊँट, गधे और घोड़े दल लस्कर भारा था,
एक धूने के ऊपर आ रहा था उसते जिकर चलाया था ॥२॥
कौण सी जिनस भरके ने तुम चाले कौन से गाम,
इन बौंरा में नून सै बाबा थारैं कोन्या काम,
रोहतासगढ़ जा आम मुनाफा बहुत कमाया था ॥३॥
ले जाओ तुम नून खरा सै क्यों ज्यादा जंग झोया,
बने व्यापारी धर्म कर्म तैं जड़ा मूल तैं खोया,
रामेश्वर बंजारा रोया चक्कर खाया था ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनों रोहतासगढ़ में आके बेचने लगे बोरा के टांके खोले तो नून पाया। लखी बंजारा हैरान हो जाता है और कहता है कि सब नौकर मेरे पास आओ मैंने खांड के पैसे दिए थे और तुमने लाद दिया नून ये सब मामला कैसे हुआ है इसके बारे में बताओ।

तब एक बंजारे का सेवक कहता है जहाँ आराम किया था वहां मैं देव आले पर हुक्का भरन के लिए गया था तब धूणी तपते हुए बाबा ने मेरे से पूछा था कि इन बोरा में क्या माल भरा है। मैंने सोचा कि खांड कही तो महात्मा सवाल करेगा। बोंरा के टांके खोलने पड़ैंगे। इसको सेर-दो सेर खांड देनी

होगी, फेर बोरे सीमने होंगे। इस झंझट से बचने के लिए मैंने कह दिया कि बोरां में नून भरा है। उस साधू ने कहा कि अच्छा भाई नून ले जाओ। खांड पलट के नून उस महात्मा ने किया है। लखी बंजारा उस सेवक को साथ में लेकर उस महात्मा के पास आया और महाराज इस नौकर ने आपके सामने खांड का नून बताया इसलिए आपने खांड का नून ही बना दिया। आप सिद्ध पुरुष हो और इस नौकर का क्या बिगाड़ हुआ। जबाब लखी बंजारे का।

भजन नं० १८

टेक–पैर पकड़ के छोड़े कोन्या रोया था बंजारा,
एक नौकर की गलती पै मैं पटक धरण में मारा ॥

चार धड़ी की खांड खरीदी नून चौगुना जा सै,
सारी जिंदगी सुलझी जा नै चिंता चितने खा सै,
आप गुरु और यो मेरा नौकर मेरा बता के राह सै,
मेरे बच्चे गाला में रलगे यो बता कौन सा न्याय सै,
नानी खसम करन जा सै दण्ड दोहता पा रहा ॥१॥

फिरे गुरु की मेहर देर ना सूता भाग जागज्या,
शुभ कर्म कोए आगे अड़ कै टोटा दूर भागज्या,
रह चौगुणा नफा तनै सिरसै ने पैर दाबज्या,
दसवां हिस्सा दान करो या दौलत तने फाबज्या,
खांड के भा तेरा नून लागज्या ना बनती खांड दोबारा ॥२॥

जगत गुरु तै कहें ब्राह्मण, ब्रह्म गुरु सन्यासी,
तुम योगी करनी के पूरे काटो जम की फांसी,
बोहर के मैं स्वर्ग द्वारा मथुरा कहो चाहे काँसी,
जिसके ऊपर जोगी कोपै जून चलाज्या छयासी,
थारे लिए है बात जरा सी मैंने पहाड़ तैं भारा ॥३॥

नाथां में नाथ सिद्धों में सिद्ध और जतियों में जती,
कर्म, वचन मन सहित संकल्प करके तेज रती,
सतवादी सादे बाणे में मिलती परम गति,
चौरंगी के चरणां में वो पड़गे जती सती,
रामेश्वर मतिमन्द छन्द गुरु जीयानन्द समझारया ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनों अब बंजारा महात्मा की बात को मान कर सिरसा चला जाता है। वहां नमक की इतनी मांग पाई जाते भी खड़ा नहीं रहा जिस भाव खांड बेचना चाहता था उसी भाव में उसका नून बिक जाता है। बंजारा खुश हो जाता है। फिर सिद्ध चौरंगीनाथ के पास आया और कहता है कि बोलो महाराज क्या सेवा करूं। सिद्ध चौरंगीनाथ कहते हैं कि सेवक हमें कोई सेवा की जरुरत नहीं फिर भी महाराज कोई सेवा बताइये। अच्छा भाई तू नहीं मानता तो यहां एक तालाब बनवा दे। जब सब जीव पानी पीकर तेरा यश गाएंगे, सुख पाएंगे।

भजन नं० १६

तर्ज—चौक लिया

टेक—नाथ निरंजन नखर गढ़ तैं पत्थर लाऊँगा,
थारी सेवा में एक सुन्दर सा एक महल बनाऊँगा ।।
सिद्ध चौरंगी नाथ गुरुजी धन थारी जोत सवाई,
आई चौदस दूध रहैगा, घर घर चढ़े कढ़ाई,
जोत लगावें, भेंट चढ़ावें, दर पै बंटे मिठाई,
सादिक के तुम मन का प्रश्न लाओ सतगुरु साईं,
गुरु थारे कहने पर यहीं तालाब खुदवाऊंगा ।।१।।
दुनियां के में अमर रहेगा करले काम कोए जस का,
उतना करिए काम अरे सेवक जितना हो तेरे वष का,
उन बंदा ने मिले बुराई जो झगड़ा बांधे आपस का,
चकमक होजा बैठ भजन मैं जिसके लगे ज्ञान चसका,
माह की शुक्ला चौदस का मेला भरवाऊँगा ।।२।।
भक्ति के बारे मैं दुःख सुख तन पै खेके ने,
ध्वजा चढ़ावें भेली बांटे चित भक्ति में भेकै नै,
तन मन धन कर दान गुरु के चरणा मैं देके नै,
हो जागा कल्याण धर्म में पैर टेकै ने,
सभी कुटुम्ब ने लेके ने सालाना आऊँगा ।।३।।
रामेश्वर जिनकी श्रद्धा शुभ कर्मा में बढ़ी,
उनके खेड़े नगर बसे से शहर और गढ़ी,
सिद्ध पुरुष की ध्वजा शिखर में फरकै सै चढ़ी,
सतगुरु के चरणां में विद्या बचपन में पढ़ी,
भारत के में मढ़ी चौरासी में भेंट चढ़ाऊँगा ।।४।।

॥ वार्ता ॥

सज्जनों रिद्धि सिद्धि गणेश भैरों शिव की स्थापना करी और एक महल बनाया। इतनी सेवा करके लखी बंजारा लाहोर चला जाता है। श्री सिद्ध चौरंगीनाथ जी ने अस्थल बोहर मठ (रोहताश गढ़) में पूरे बारह वर्ष तपस्या की। उनके सदियों बाद यहां श्री सिद्ध बाबा मस्तनाथ योगी आए। कोठ खोखरे वन घूमते-घूमते देआले पर धूना डाल दिया। और मन लगाकर तपस्या करने लगे।

भजन नं० २०

तर्ज – वण्या बनाया किला भी डहज्या

टेक–कोठ खोखरा देख्या भाला बांध्या खास धर्म का पाला,
दे आले पर सिंहासन डाला बाबा मस्तनाथ ने।

विधि पूर्वक धूना लाया, फिर मंत्र का शब्द सुनाया,
माया घणी विचित्र कर दी हृदय में शीतलता भर दी,
सहन लगे सब गर्मी सर्दी धूने पै बरसात ने ॥१॥
अलख मिलन से ध्यान लगावे आसन छोड़ कहीं ना जावै,
सिद्ध बतावे अगम का रास्ता सब चेलों ने दे दिया बस्ता,
गगन मण्डल में सौदा सस्ता दिन घूमों चाहे रात नै ॥२॥
बात या बोहर गाँव में चाली, सिद्ध पुरुष आया तत्काली,
खाली जिसकी जा ना वाणी, देआले में निर्मल पानी,
चीते, शेर, वघेरे प्राणी सिर धरवावे हाथ ने ॥३॥

रामेश्वर चर्चा घर-२, वण में चलें तो लागे डर,
गिरधर नम्बरदार हो लिया, शुभ कर्मों से जगत मोह लिया,
खोखर वण में गुरु टोह लिया मुश्किल तै पंचायत नै ।।४।।

।। वार्ता ।।

सज्जनों बाबा मस्तनाथ के पास चीते, शेर, वघेरे, भालू, मोर, कपोत, तोता, मैना इत्यादि जीव बैठे थे। गाँव के आदमी घबरा जाते हैं। तब बाबा मस्तनाथ ने उन सबको हुक्म दिया कि अब तुम जाओ गुरु महाराज का वचन मानकर जीया जून सब चली जाती है। तब वह सेवक आगे आए और अपने दुःख दर्द की बात बताने लगे।

भजन नं० २१

टेक–सुनके ने तारीफ करके क्यास आए सैं।
मुश्किल तै महाराज आपके पास आए सैं।

दीनबन्धु तुम दीनानाथ, मेहर करके सिर पे धरियो हाथ,
म्हारी पूरी करियो चाहत न्यू घणे निराश आए सै ।।१।।
नदी नाले में पानी ना सै, जल बिन खेती सूकी जा सै,
यो फिकर कालजा खासे, बणे इतलास आए सैं ।।२।।
तुम ही हो पूर्ण शेष, महेश, थारा गुण गावें सकल नरेश,
थारा मानेंगे आदेश चरण के दास आए सैं ।।३।।
रामेश्वर ३६ सो जात, थारा गुण गावेंगे दिन रात,
सब की से एक बात कर एक सांस आए सैं ।।४।।

।। वार्ता ।।

बाबा—सुनाओ सेवकों सुख समाज भी है।

सेवक– महाराज सुख समाज तो नहीं है। खेती सूकी जा रही है। राम कोप रहा है। जल नहीं बरसाता। संकट दुःख अनेक प्रकार से हो रहे हैं। प्रजा सुखी नहीं। मनोकामना पूरी करो महाराज, सदा आपके गुण गाऐंगे। हे तीन लोक के नाथ आपकी शरणों में आकर के नगरों में सुःख शब्द होना चाहिए। श्री बाबा मस्तनाथ योगीराज कहते हैं सेवकों गुरु महाराज की माया है। कर्म प्रधान।

जवाब बाबा मस्तनाथ का

भजन नं० २२

टेक–दया धर्म दिल से बिसरा दिया, खोल पाप का खाता।
पाप जगत में छाया इन्द्र न्यू ना मेह बरसाता ।।

धार्मिक प्रचार नहीं, तुम चालो सो बेढंगे,
दुःखी करें तुमने धणे साधू ब्राह्मण करते नए अपंगे,
गरीबा ने धमका कै बोलो ऊतपने में नंगे,
फिर दिल कैमां न्यू चाहो सो, काम बनें म्हारे चंगे,
होतें नए फिसाद और दंगे, कैसे खुश हो दाता ।।१।।
गांव बोहर के न्यू बोले तुम हरो कष्ट म्हारे नाथ सही,
इबतै आगे सब मानेंगे जो कुछ कह दो बात सही,
गुरु मस्तनाथ नै खुश होकै न सिर पर धर दिया हाथ सही,
दया धर्म और पुण्य बधगा पूरी होगी चाहत सही,
करो शील सभा दिन रात सही, थारी करदे मौज विधाता ।।२।।

मस्तनाथ बोहर वालों को दे रहे थे उपदेश,
सभी जीव सुख पावेंगे तुम कर दो खत्म द्वेष,
जीव की हत्या मतना करियो कहन लगे दरवेश,
नाथ निरंजन शिक्षा दे रहे फिर कद जागी पेश,
यो मानो आदेश सेवकों मैं और नहीं कुछ चाहता ॥३॥
सतगुरु जी महाराज आपने ज्ञान की बात बताई,
आज तै आगै चलें वचन में ठीक बता दी राही,
परमार्थ के काम करेंगे इसमें है म्हारी भलाई,
मर्ज के ऊपर बांधन खातर दे दी खास दवाई,
रामेश्वर नाथ करै कविताई छन्द भाषा में गाता ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनों सेवक कहते हैं कि हे महाराज म्हारे धन भाग हैं जो आपके दर्शन होंगे। हमारे जन्म सफल होंगे परमार्थ की राह बताई। आप अपने चरणों में राखियो जी। गुरु मस्तनाथ भगवान की जय हो तमाम गाँव वाले इस प्रकार से जय के नारे लगाने लगे। बाबा मस्तनाथ खुश हो जाते हैं और कहते हैं जाओ प्रातःकाल बर्षा जरुर होगी। सेवक खुश होकर अपने–२ घर चले जाते हैं। घर आकर के सब बातचीत बताते हैं। जब आधी रात के बाद चौथा पहर आया तब आकाश में बादल छाए। मेघ माला आई। बिजली चमकने लगी। राम बादल गरजने लगे और मिंह बरसने लगा सूर्य निकलने के समय तक ऊँचा नीचा डौला नाका एक बना दिया। पूरे दिन पानी बरसता रहा। सारे जीव जन्तु सुखी हो गये। तब तो

गाँव बोहर वाले इकट्ठे होकर के बोले चलो बाबा श्री मस्तनाथ जी के पास। तमाम नगरी भेंट पूजा लेकर के बाबा श्री मस्त नाथ जी के चरण पूजने के लिए चल पड़े। पान, फूल, रोट, लंगोट, पूजा, सामग्री गोला, मिश्री, दाक, छुआरे और धूप, दीप, चन्दन इत्यादि सामग्री लेकर गांव के मुखिया आदमी गिरधारी नम्बरदार अपने संग के साथियों को लेकर के बाबा मस्तनाथ के धूणे पर आए।

भजन नं० २३

तर्ज—भूलगे हथियार

टेक–बालक बूढ़े और नर नारी एकदम मिलकै सारे आगे।

सतगुरु जी के चरण लिए फिर दिल से करण आरती लागे। योगी मस्तनाथ महाराज म्हारे तुम सिद्ध करियो सब काज, बड़े आनन्दी के साज बाज वो ज्ञान गंग के जल में न्हागे।१। जाट गिरधारी नम्बरदार रहा जो नगरी का सरदार, शुकर मनावे बार-बार कहें भाग पूर्व ले म्हारे जागे।२। शंख, घड़ावत और नाद बजाए मस्तनाथ घट-घट में छाये, प्रेम सहित आनन्द गुण गाए होके लीन दोष सब त्यागे।३। रामेश्वरनाथ धर्म का रस्ता सीधा चाल्या जइए हँसता, प्यार बाजार में सोदा ए सस्ता सिद्ध पुरुष ऐसे फरमागे।४।

।। वार्ता ।।

सज्जनों अब सब सेवक अपने-अपने घर आ जाते हैं। बाबा मस्तनाथ का यश गाते हैं। नगरी में सत्ये का प्रचार हुआ

तब एक अपंग नारी गांव में रहती थी। उसने भी सिद्ध भगवान की तारीफ सुनी। अपने मन में विचार करती है कि मैं भी बाबा मस्तनाथ के दर्शन करके अपना जन्म सफल करुं। दर्शन करके ही आत्मा को शान्ति मिलेगी यह दृढ़ विश्वास करके घर से चली।

भजन नं० २४

तर्ज—चला भाई पाई राही माधोपुर नैं

टेक–एक जन्म की दुखिया नार थी घणी चालण से लाचार थी,
दुःख भरती, मरती पड़ती, सुरती धूणे की लाई।
गोडे और कुहनी फूटगे, अनगिन कोटे टूटगे,
हाल साल हुई काल चालके बहुतै दुःख पाई ॥१॥
जब भी जोटा लावै थी वा तै बाबा के गुण गावै थी,
कर आस खास विश्वास दास बन चाली ज्ञान राही ॥२॥
सारे छिक लिए पाली थामकै, वो तै चली बाबा के नाम पै,
कर ज्ञान ध्यान, भगवान मान लिया हे सतगुरु साई ॥३॥
रामेश्वर नाथ जस पालिये ज्ञान गुरु का गा लिए,
जित करता धरता, ला रहे सुरता, हरता पीड़ पराई ।४।

।। वार्ता ।।

बालक, बूढ़े, जवान सभी प्रकार के सेबक बेटे थे। एकदम सबने देखा। उस अबला को देखकर कहते हैं चलो तुम नंगी भिखमंगी यहाँ क्या लेने आई हो। भाग जाओ यहाँ से। यहाँ तो दिगम्बर योगी हैं। यहां तेरा क्या काम। यह कह करके आपस में ठट्ठा करने लगे। श्री बाबा मस्तनाथ जी ने उस

अबला की तरफ देखा। और कहते हैं सेवकों आने दो इसको भी। तब तो अबला भी बोली हे गांव के मुखिया लोगों मैं महात्मा के दर्शन करने के लिए आई तथा बहुत दुःख पाई। तुम दूर से ही उल्टी भगाने लगे। तुम क्यों पाप के भागी बनते हो। मैं तो अपना भोग भोग रही हूं यह कहकर आगे बढ़ी और धूने पर आई। बाबा मस्तनाथ जी ने उस अपंगी और कुरुप पर दया करी। अपने चेले से कहने लगे मेरा वचन सुन

।। काफिया ।।

एक दिन कुब्जा कै घर जाकै श्री कृष्ण नै कूब हटाया। ऐसे ही तुम कूब बिनाशो न्यू गुरु मस्तनाथ फरमाया, योगी लात मारता कड़ में एकदम सुन्दर होगी काया।

।। दोहा ।।

कूब कटा खड़ी हो गई बदल दिया सब रुप,
सुन्दर काया मिल गई हो गई महा अनूप ।।

भजन नं० २५

टेक–होगी खड़ी कुबड़ी नारी सुकर मनावण लागी,
बार-बार आदेश करे फिर शीश झुकावण लागी।

शुभ कर्म कोए अड़ा अगाड़ी होग्या मनका चाहया
घिसड़-घिसड़ कै चाल्या करती संकट मेरा मिटाया
काया कल्प मेरी कर दी मैंने जन्म दूसरा पाया

सोलह राशि नारी बणगी कितवो कुरुप बहाया
श्री मस्तनाथ सतगुरु की माया वो घर ने जावन लागी ।।१।।
भुंडी, भराडी, नकटी, होढली वणी इन्द्र की पातर
ईट गार की रही नहीं, करदी मुखमल की कातर
बारह रानी बनगी एकदम धणी अक्लमंद चातर,
सीधी होगी खड़ी जिस्म का नहीं फालतू जाथर,
कुबड़ी ने देखण की खातर दुनिया आवण लागी ।।२।।
किस्मत का है लेख मेरा दोष नहीं पिता माता का,
शिव गोरख का भजन करूं थी ख्याल था दिन रात का,
फैल रही करामात नाथ की जिकर ना और बात का,
एक नजर तै देखे योगी ना झगड़ा जाँत पांत का,
सब आगे गुरु मस्तनाथ का वा जिकर चलावण लागी ।।३।।
रामेश्वरनाथ जैसानाथ द्वारा जग में और ना ऐसा धाम,
आठ पहर रहै हरिभजन में और नहीं कुछ मेरा काम,
संख घडावल नौबत बाजे दोनों वक्त सुबह और श्याम
चाहे धरती कै औड़ चला जा सारे कै होरा सर नाम,
गुरु मस्तनाथ का नाम रटा मुक्तिपद पावण लागी ।।४।।

।। वार्ता ।।

उस कुबड़ी का कूबड़ कटा देख नगर के आदमी उस अंधे ब्राह्मण के पास जाते हैं और कहते हैं कि अंधे क्यों यहाँ पड़ा है बेकार पने में, बाबा श्री मस्तनाथ के पास जाओ तेरे भी नेत्र खुल जाएगें और दिखने लग जाएगा। तेरी जिंदगी सफल हो जाएगी। उन सब की बात मानकर भाना ब्राह्मण

बाबा मस्तनाथ के धूणे की तरफ चल पड़ता है रास्ते में अन्दाज से लाठी टेकता हुआ पड़ता गिड़ता बाबा के धूने पर पहुंच जाता है। और सेवक देखकर उसे कहते हैं कि अंधे यहां क्या लेने आया है। अन्धा कहता है बाबा के चरण लेने हैं। जबाब अंधे ब्राह्मण का बाबा श्री मस्तनाथ जी से।

भजन नं० २६

टेक–दीनदयाला हे प्रतिपाला, राखत जग की लाज,
हे गुरु मस्तनाथ महाराज।
भाना ब्राह्मण बोहर गाँव का बड़ा चतुर प्रवीन था,
नत्थु राम का पुत्र सही वो धूर का ही नेत्र हीन था,
ये दिल में हुआ यकीन था आग्या करकै अन्दाज ॥१॥
जन्म का दुखिया फिरता हूं मेरे पै अहसान करो,
सब दुनियां के पाप काटते मेहर आप भगवान करो,
आंख्या का तुम दान करो मेरे सिद्ध हो ज्यांगे काज ॥२॥
सन्त महात्मा बिन दुनिया का होता कतई उद्धार नहीं,
थारे बिना तै हम जैसा का कोए करणियां प्यार नहीं,
बिना आंख्या संसार नहीं सूं टुकड़े का मोहताज ॥३॥
उनके कटगे पाप सही शरण तुम्हारी जो आया,
दुःख रोया जो आगै आके झट होग्या मन का चाहया,
जियानन्द गुरु की माया खोल दिए सुरसाज ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनों अब श्री मस्तनाथ जी ने धूने में से भभूति

लेकर उस अंधे ब्राह्मण को दे दी और कहते हैं कि सेवक अपनी आंखों में लगा ले। भभूती के लगते ही आँखों का अंधकार दूर हो जाता है। सरशद्ध रोशनी आ जाती है। भाना राम ब्राह्मण को अब सब कुछ दीखने लगा। चित प्रसन्न हो जाता है। बाबा श्री मस्तनाथ जी को बार-बार आदेश करता हुआ ब्राह्मण अपने घर को चला जाता है। अब श्री मस्तनाथ जी अपने चेलों के साथ रमते हुए घूमते फिरते गहरे बण में चले जाते हैं। वहां जाकर कई सदियों पुरानी बात याद आ गई।

।। दोहा ।।

धर्म कर्म को मेट कर नगरी का हुआ नाश मात,
मात पिता गुरु सन्त का रहया नहीं विश्वास।

भजन नं० २७

टेक–चेलों के संग रमते रमते देखा ऊजड़ नगर अठाही
ऊँचा टीला नजर पड़ा गुरु मस्तनाथ नै हांसी आई ।।
गुरु के साथ रहे दिन रात, आज या न्यारी देखी बात,
फिर बोली जोग जमात गुरु से सबने बात बूझणी चाही ।।१।।
गुरु संग भाग हमारे जागे, भक्ति की पटड़ी पै आगे,
देखन लागे आगे पीछे गुस्ताखी किसनै फैलाई ।।२।।
दिल मैं गैस ज्ञान का चसता, गुरु नै ठीक बताया रस्ता,
कभी गुरु ना देखा हँसता, कहन लगे सारे गुरु भाई ।।३।।
सोच समझ कै चाले ठीक रहे जो पकड़ धर्म की लीख,
गुरु जियानन्द पै ज्ञान सीख रामेश्वरनाथ करें कविताई ।।४।।

।। वार्ता ।।

शिष्य कहते हैं गुरु महाराज दया करके यह कारण हमें बताओ तब बाबा मस्तनाथ जी कहने लगे किसी समय यहाँ हमारी जमात आई थी। अब ये नगर ध्वस्त पड़ा है। जब तो ये नगर शुभास्य बसै था। जो ये ऊँचा टीला पड़ा है यह अठाही गाँव था। हमने जमात के साथ यहाँ धूना लगा रखा था।

। दोहा ।।

लोभी जिनके ठाकरां, ऊजड़ जिनके बास।
प्यासे को पानी नहीं अवश्य होगा नाश ।।

यह त्रेता युग की बात है ध्यान देकर के सुनो। भोजन बनाने के लिये एक योगी हांडी मांगने के लिये कुम्हार के घर गया, कुम्हार घर पर था नहीं। कुम्हारी बैठी थी चुल्हे पर काली हांडी धरकै पानी तपा रही थी। योगी उसके दर पै जाकै कहने लगा हे माई एक हांडी हमको भी दियो। हम रोटी बनाएंगे। यह सुनके वह नारी कुछ नहीं बोली। योगी ने फिर दुबारा कहा हे माई एक हांडी दियो मै जाकर कै रसोई करूंगा (तू तो जाति की कुम्हार है) इस बात को सुनते ही चुल्हे पर सै काली हांडी उतार कै उस योगी के मुंह की तरफ जोर से फैक कर मारी। योगी मुंह बचा गया हांडी फूट गई। वह कलिहारी नार फिर बुरे वचन बोलने लगी ना जानो कहां के कंगले यहाँ आए हैं। यहां क्या तेरे बाबा के नौकर बैठे हैं।

।। दोहा ।।

दया धर्म कुछ था नहीं, नहीं धर्म प्रचार जती।
सती कोए था नहीं, सब नगरी गद्दार।

।। काफिया ।।

जिसके ज्ञान ध्यान ना होता उनकी अकल चरख होवे सै
बल शान्ति रंग रुप रहना उनके घर में नरक होवे सै।
जहां कोई जती सती ना होता उड़ैतै बेड़ा गर्क होवे सै।

फिर गुरु मस्तनाथ जी रमते घूमते खोखरे कोट में आ जाते हैं अस्थल बोहर मठ अपने धूने पै।

।। वार्ता ।।

भालौठ गांव का शीलका जाट साधु सन्तों का बहुत बड़ा सेवक था। कोट खोखरे में बाबा मस्तनाथ कोई सिद्ध पुरुष पधार रहे हैं। यह समाचार शीलका को मिला। श्याम सुबह दूध लेकर बाबा की सेवा में आने लगा। क्योंकि साधुओं से उसे अति प्रेम था।

भजन नं० २८

तर्ज—हो रंगीले सेहरे आले

टेक—सेवा तगड़ी करन लगा जाट शीलका भालोट आला।

देख गुरु मस्तनाथ की शक्ति, दिल में जोत ज्ञान की जगती,
पैर भक्ति में धरण लगा, एकदम सत का बांध्या पाला ।।१।।

सलामत सुबह श्याम आवै था, दोनों वक्त दूध लावै था,
चाहवे था गुरु के चरण लगा, होग्या हृदय में उजियाला ॥२॥
समझै चार कोस आसान, पार कर जंगल बियावान,
ज्यान से भी नहीं डरण लाग्या मेरा तै वो से रव रखवाला ॥३॥
रामेश्वर मतिमन्द का जित बाजै सै साज आनन्द का,
छन्द का जोड़ भरण लाग्या, रटकै परमेश्वर की माला ॥४॥

॥ बोहा ॥

श्री मस्तनाथ कहने लगे सेवक से कर प्यार,
कोई चोर लुटेरा मिल गया तो तेरे लेगा वस्त्र तार ।

॥ वार्ता ॥

बाबा मस्तनाथ कहने लगे सेवक श्याम को मत आया करो शीलका बाबा मस्तनाथ के सामने अपने बल की प्रशंसा करता है जबाब शीलका का ।

भजन नं० २६

टेक–अपना रास्ते आना जाना मैं नहीं किस तै राड़ करूं,
जो अनरिति करे मेरे संग पाकड़ के पछाड़ गिरूं ।

एक घंटे में आज्यां सूं या कुछ भी ज्यादा बाट नहीं,
चौरा तै डरकै रहग्या तै मैं असली फौगाट नहीं,
मैं किसै तै घाट नहीं न्यू पकड़ बीच ते पाड़ गिरूं ॥१॥

दंगा जवान सोच कै लें थे मैं गया नहीं भरती कै में,
जितने गुंडे इस इलाके के रहैं येरी सुरति कै मैं,
खड्डा खोद कै धरती कै में पौड़ की तरियाँ साड़ गिरूं ।।२।।
कलानौर का कोला तोड़ा मेटी खास अकड़,
खरखौदे का मेहरदीन था एकदम दिया जकड़,
पैर पकड़ पूली की तरियां सारा नक्शा झाड़ गिरूं ।।३।।
नाम शीलका जगत जानता देखे और भाले नैं,
रोहतक जिला देश हरियाणा इस भालौट आले नैं,
रामेश्वर बोदे काले ने मैं नजरांए ते ताड़ गिरूं ।।४।।

।। वार्ता ।।

उन भगवान बाबा मस्तनाथ के आगे शीलका अभमान भरे वचन कहता है। ठाठा बोल शिखर से पटकता है। बाबा मस्तनाथ अपने दिल में विचार करते हैं, चेला तो लायक है इसको पूर्ण ज्ञान कराऊं लेकिन पहले इसका गर्व चूर्ण करूं। एक दिन शीलका संध्या के बाद काफी देर तक धूने पर बैठा रहा। अंधेरी रात थी जब रात हुई तब घर को चला। श्री बाबा मस्तनाथ ने शीलका से भी आगे आकर के उसका रास्ता रोक लिया और बड़ा विशाल डाकू का रुप धारण किया। और ललकार कर कहने लगा कि जाने वाले मुसाफिर सब दे दो जो कुछ तुमारे पास हो। ये सब कपड़े शीघ्र उतार कर रख दे नहीं तो तेरे को ज्यान से मार दूंगा। शीलका उसके गोडे (घुटने) से भी नीछे रह जाता है। भय के मारे शीलका ने सब बस्त्र उतार कर उसके सामने रख दिए। और सोचता है कि

इसके सामने मेरा कुछ भी वश नहीं चल सकता।

सब कपड़े उठा करके डाकू चला जाता है। शीलका धीरे-धीरे अपने घर की तरफ मन में संकोच किए जाता है। बाबा मस्तनाथ जी शीलका का रूप बना करके जहाँ शीलका सदा-सदा ही बैठता और सोता था वहाँ वस्त्र जाकर के रख देते हैं। वापस घर से जाते समय शीलका की माता ने देखा कि मेरा पुत्र आया है वस्त्र रखकर अब बाहर गया। फिर सबेरे शीलका आया। दरवाजे पर आकर आवाज लगाता है कि माता कोए वस्त्र दिओ। माता समझती है कि कोई द्वार पर भीख मांगने वाला अतीत (भिखारी) आया है। आकर के दरवाजा खोला। दरवाजे पर बाहर शीलका नंगा बैठा पाया। जबाब उसकी माता का—

भजन नं० ३०

टेक–के होग्या मेरे लाल तारके धर दिए लते चाल
हाल के करां तनै।

मैं समझी कोई भिक्षा मांगन दरवांजे पै आया है,
समझण जोगा सायाणा होके क्यों इसा सांग बनाया है,
के भांग धतूरा खाया है, तेरे कौन सी लागी बाल ॥१॥
सभी मुहल्ला देखन आया हांसी ठट्ठा करन लगे,
नाटक लीला अच्छा सीखा वार फेर सब करन लगे,
नाम कई-कई धरण लगे कतई मचा दिया परमाल ॥२॥
लोग कहैं यो साँग बनाया, शर्म शीलका ने आई,

माता का घणा लहू जला झट भीतर तै चादर लाई,
तन ढक कै न्यू बोल्या भाई आज मेरा था काल ॥३॥
रामेश्वरनाथ माता बोली, मनैं खुदही (तू) आता देखा,
घर में बस्त्र धरकै ने फिर बापस जाता देख्या,
ईब इसा आण सुनाया लेखा हंस भूलगा ताल ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनों यह कह कर शीलका की माता तमाम बस्त्र शीलका के सामने रख देती है। वस्त्र देखकर शीलका आश्चर्य में पड़ जाता है और मन में सोचता है कि यह सब माया गुरु मस्तनाथ जी की है। जिसने पहले डाकू का रुप बनाया फिर शीलका (मेरा) रुप धारण किया। शीलका अपने परिवार के सामने रास्ते का तमाम दास्तान बताता है फिर प्रातःकाल गुरु के दर्शन करने के लिए गया। जबाब शीलका का

भजन नं० ३१

तर्ज—नारा ए बसाऊगी

टेक—इसा चरित्र देख लिया हैरान शीलका होग्या,
गुरु मस्तनाथ के चरणां में कुरबान शीलका होग्या।
कहा करें सै मनुष्य के सिर पै आती हैं हर साल दिशा,
कोए दिशा तो अन्नधन कर दे कोए करै कंगाल दशा,
श्री मस्तनाथ का पहला चेला और नहीं शिष्य बना इसा,
त्याग और वैराग के अन्दर छोड़ दिया बेकार विसा,
राजा, रंक, गरीब, किसा समशान शीलका होग्या ॥१॥

छुपकर बैठा जाये शीलका मान्या कोन्या डर,
कैसे रात बितावैं सतगुरु गया नहीं वो घर,
देख रहा करामात गुरु की बणकै ने गुप्तचर,
अजगावी खिल गई रोशनी आ बैठे सिद्धवर,
देवसभा के दर्शन कर वरदान शीलका होग्या ।।२।।
विषय विकार कतई त्याग दूं इब रहूं ना भोगी,
पक्की दिल में ठान लई मैं जरुर बनूंगा जोगी,
सारी जिंदगी भजन करूंगा बीते उम्र असोगी,
रहूं गुरु के चरणां कै मैं जब मनशा पूरी होगी,
पति और पत्नी योगी खुद सन्तान शीलका होग्या ।।३।।
रामेश्वर कोन्या मान्या फेर हुआ मजबूर गुरु,
चोटी काटूं करूं चेलका सिर कै ऊपर हाथ धरूं,
रिद्धि सिद्धि बख्स दई सब जन्म जन्म की पीड़ हरूं,
तीनों के दिए कान पाड़ फिर भक्ति कै में हुए शुरु,
और घणा के जिकर करूं भगवान शीलका होग्या ।।४।।

।। वार्ता ।।

सज्जनों शीलका अपने पुत्र और पत्नी को लेकर गुरु को शरण में आता है और बाबा मस्तनाथ का चेला बन जाता है। गुरु ने शीलनाथ नाम धरा और पुत्र का नाम मिर्चनाथ धरा। माइ मेना गुरु की भक्तिऔरतपस्या करते हुए गाम बालन्द जिला रोहतक में समाधिस्त हुए। उसके बाद बाबा मस्तनाथ का एक शिष्य उनके पास धूने पर रहा करता था। सेवा में ही लीन (ध्यान) रहा करता। एक दिन गुरु के पैर दबाते हुए गुरु से

पूछा महाराज सुना है गोपीचन्द भतृहरि अमर हैं। गुरु जी कहने लगे हाँ भाई वे तो अमर हैं

भजन नं० ३२

तर्ज—जत्ती मरद की

जबाब जोगराज का

टेक–गुरु मस्तनाथ के धूने पर एक योगीराज रहा करता।

सिद्धा के दर्शन करवा दो गुरु से रोज कहा करता।

गोपीचन्द भर्तहरि राजा जग में अमर कहें सैं,
मनैं कहीं पर देखे कोन्या एसे कहां रहें सै,
दोनों सिद्ध दुःख सुख सहें सैं उनपर गुरु दया करता ॥१॥
अन्धे, लूले, लंगड़े, बहरे करके ठीक खन्दाये,
बाझां कै तुम पुत्र देते मुर्दे मरे जिवाए,
मेरे भी करियो मन के चाहे और ना घणा बयां करता ॥२॥
राजपाट नै त्याग तपस्या करी जिनै जग में भारी,
जिनका तपबल सारे जग में आज तलक भी है जारी,
दर्शन की अभिलाषा म्हारी मैं या कथा लहा करता ॥३॥
भक्ति कारन बिदुर भक्त ने घर पै कृष्ण मिलगे,
गोपीचन्द भर्तहरि आगे होके प्रसन्न मिलगे,
रामेश्वर तनै दर्शन मिलगे गुरु कै चरण गहया करता ॥४॥

॥ दोहा ॥

चेले के सुन वचन को कहन लगे गुरुनाथ,
दरस कराऊं प्रातः को होते ही प्रभात।

।। वार्ता ।।

बाबा मस्तनाथ कहने लगे योगीराज निश्चित होकर आराम करो सबेरे दर्शन जरुर होंगे ।

भजन नं० ३३

टेक–दिन लिकड़या पीली पाटी जब गोपीचन्द भर्तहरि आए,
मस्तनाथ सतगुरु साईं ने अपने चेले पास बुलाए ।
गोपीचन्द भर्तहरि हरकै दर्शन कर लेनै मन भरकै,
दुनिया कै में देखो फिरकै इनके तप बल सारै छाए,
इनके दर्शन करने खातर हर इन्सान भटकते पाए ।।१।।
इब करले दर्शन दीदार फिर मत कहना दूजी बार,
करले नै सतकार प्यार से पूरन करिये मन के चाहे,
पूर्व जन्म के शुभ कर्म थे समझ लिए तेरे भाग सवाए ।।२।।
सेवा हमारे लिए कुछ कहिए तुम्हारे वचन शब्द ने लहिए,
सतगुरु की सेवा में रहिए नाथ भर्तहरि न्यू फरमाए,
अटल इरादा है तेरा तू मान कभी ना धोखा खाए ।।३।।
बांधे सतधर्म के पाले सैं सिद्धां के ढंग निराले,
रामेश्वर बलियाने, आले चित करके नै ये छन्द गाए,
करकै दर्शन होगे प्रसन्न ज्ञान गंग के जल में नहाए ।।४।।

।। वार्ता ।।

योगीराज हाथ जोड़कर गोपीचन्द भर्तहरि से कहता है कि हे महाराज गुरु गोरखनाथ के कभी दर्शन नहीं हुए । सो कृपा करके गुरु गोरखनाथ जी के भी दर्शन करवाएं ।

भजन नं० ३४

टेक–लागे कहन भतृहरि राजा जोगराज तनै जाण नहीं,
आठ पहर तू धोरे रहता फिर भी तनैं पहचान नहीं।

सतगुरु गोरखनाथ विराजे धूने पर सही,
इनकी वाणी सच्चे दिल तै जिस जिस नै लही,
नीति और मर्याद कहीं इन जैसी आण और काण नहीं ॥१॥
वो जोगराज पैरों में पड़ग्या सुनके प्रश्न कैसा,
दर्शन करता मन भरकै गोरखनाथ गुरु ऐसा,
कहें भर्तहरि सतगुरु जैसा देख्या राग रसाण नहीं ॥२॥
गुरु गोरख नै कलियुग कै में नाम धराया दूजा,
जहाँ तहाँ सिद्धि दिखलाते तब भी मैंने गुरु सूझा,
निशि दिन करो गुरु की पूजा इसमें पड़ता ताण नहीं ॥३॥
नाथ भर्तहरि योगीराज ने ठीक-ठीक समझावें,
सतगुरु जी की सेवा करिए तू भी सिद्ध हो जावै,
रामेश्वर गुरु मुक्ति दिलावे कतई लगावे हाण नहीं ॥४॥

॥ वार्ता ॥

श्री बाबा मस्तनाथ जी अपने अनेक शिष्य साथ में लेकर घूमते-घूमते देश पटियाले में आ जाते हैं। यथा उचित धूणा लाया विधिपूर्वक योगीराज अलख का सुमिरण करने लगे सूबा पटियाला था। उचाणा गाँव था। सन्त महात्माओं के भजन की प्रशंसा सुनकर गांव के मुखिया आदमी आए। दर्शन करके प्रसन्न हो जाते हैं। और कहने लगे किस विधि इनकी सेवा की जाए।

चमोला ३५

पटियाले के पास में एक नगर उचाणा गांव,
गुरु मस्तनाथ भगवान ने जाकर किया मुकाम ॥१॥
जाकर किया मुकाम नगर के सज्जन पुरुष पधारे थे,
किस विधि सेवा इनकी होगी न्यों आपस में बतग्लारे थे ॥२॥
उन सबका प्रधान था कहन लगा या बात,
ठाकुर द्वारे में चलो मिलकर के साथ ॥३॥
जैसा हुकम गुरुदेव का उसी करेंगे टहल,
मठ मन्दिर था नगर में बहुत पुराणा महल ॥४॥

॥ वार्ता ॥

गांव के आदमी मठाधीश के पास जाकर के कहने लगे स्वामी जी नगरी के गोरै आज बहुत बड़े-बड़े महात्मा आए हैं। योगीनाथ तपस्वी, मौनी, दूधाधारी, फलाहारी और उनके गुरु का जग में बहुत नाम हो रहा रहा है। श्री मस्तनाथ जो देश में सरनामी योगी हैं। यह खबर उचाने गांव वालों ने मठ के महन्त को दी। यह सब बात सुनकर मठ का महात्मा क्या कहता है।

भजन नं० ३६

तर्ज—होलो तैयार बराती

टेक–पूजा हो खाड़े द्वारे की श्रद्धाकर पहुंचाइयो,
जो कोए आवे रमता साधू भोजन जरुर जिमाइयों।

इनका चालै जोर नहीं के बस्ती ने ठावेंगे,
आज सांझ ने रोटी खाके कल चाले जावेंगे,
एक रसोई बढ़िया दे दो खुश होके पावेंगे,
जो पूजा दे दी तुमने ये फिर हटके आवेंगे,
थारे बच्चे भी दुःख पावेंगे मत लाग दूसरी लाईयो ॥१॥
पूजा भेंट नहीं कुछ देना चाहे कैए दिन राखो डेरे,
रमते भ्रमते फिरते हैं ये भयागत रुप चरण चेहरे,
इस मण्डल के हम हैं मालिक और फिरे सैं टूक टेरे,
के ताकत दिखलावेंगे ये फौज नहीं कुछ ये लेरे,
देश गाम के हम हैं पुजेरे हमने पूजन आईयो ॥२॥
सब नगरी श्रद्धा करके मार रेख में भेख दियो,
सीधा पानी ले जाकै ने उनकै आगे टेक दियो,
आप बनाके खालेंगे तुम बन के सज्जन नेक दियो,
आपनी सलाह तैं मैनें बतादी तुम भी आगा पीछा देख लियो,
फक्त रसोई एक दियो मत आगै जिकर चलाईयो ॥३॥
सब नगरी के राजी होगे फूल कंवल ज्यों बिलकै,
गुरु मस्तनाथ के धोरै आगे एकदम सारे मिलकै,
चन्द्रमा सी शान मान जैसे नौलख मध्य झिलकै,
रिता पातर छिलकेगा यो भरा कदे ना छिलकै,
रामेश्वरनाथ मण्डली में मिलके साज बाज तै गाईयो ॥४॥

। वार्ता ॥

सज्जनों उस साधू ने गलत सलाह देकै गाम वालों को अंधकार में डाल दिया। जती सतियों का पुण्य उलटा मोड़

दिया। गांव के साधू ने बाबा मस्तनाथ का मान नहीं करने दिया। गांव के लोग कहने लगे महात्मा जी मन इच्छा रसोई का सामान बताओ। हम तमाम गांव की तरफ से एक रसोई देना चाहते हैं। बाबा मस्तनाथ कहते हैं सेवकों हम सबसे पहले धूणे की पूजा करते हैं। फिर बाद में भोजन करते हैं। यह सुनकर तमाम गांव वाले कहने लगे हम पूजा नहीं देंगे। सिर्फ रसोई का सामान दे सकते हैं। श्री बाबा मस्तनाथ जी ने जबाब दिया सेवकों धूने की पूजा पहले होगी। बाद में रसोई होगी। यह सुनकर गांव वाले उठकर के चल पड़ते हैं और मन्दिर वाले बाबा के पास आकर के कहने लगे—

।। दोहा ।।

सुनकै ने म्हारी बात को गुरु कही ललकार,
पहले पूजा होएगी ना तै भोजन से इन्कार।
मत जाओ उनके पास में घर बैठो तुम जाय,
उस नगरी के महन्त ने लोग दिए भरमाय।
अपने अपने घर गए जती सती सब लोग,
फिर बात पूछी नहीं लाग्या आण कुजोग।
गुरु मस्तनाथ कहने लगे है नगरी का अन्त,
याद करेंगे बाद में आया था कोए सन्त।

भजन नं० ३७

जबाब बाबा मस्तनाथ जी का

टेक–कुरड़ी पर से गाभा चुगना मतना ज्यादा देर लगाईयो,
बांध गाठड़ी सिरपै धरके गांव बिचालै गेर कै आईयो।

भोगण खातर कर्म किया है अपयश खुद ही आप लिया है,
म्हारे गुरु ने हुकम दिया है पुछनियां से न्यू फरमाईयो ॥१॥
नगर के ना आए शर्म के मारे सब बनगे पापी हत्यारे,
तुम सो बली तपस्वी सारे किसे कीमत दहशत खाईयो ॥२॥
सबकी बुद्धि कतई वही, उतरेंगे ओघड़ घाट सही,
जत्ती सत्ती कोए रहा नहीं, वे खेड़े बेशक उजड़ जाईयो ॥३॥
गुरु ने इसा खिलाया रंग, होन लगा भक्ति का जंग,
रामेश्वर गुरु भाइयों के संग सेवा कै में आगे पावयो ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनों बाबा मस्तनाथ के शिष्य उनकी आज्ञा के अनुसार गांव में दरिद्र डाल आए। तब गुरु कहते हैं अब यहां से चलो। जोग जमात वहां से चलकर गांव धड़ावठी जिला रोहतक में आ जाते हैं। नगरी के तमाम मुखिया आदमी जाकर महन्त से श्री मस्तनाथ के विषय में झगड़ा करते हैं। जबाब गांव उचाने वालों का मठाधीश से

भजन नं० ३८

टेक--श्री मस्तनाथ जी योगी पूरे कलियुग के अवतार,
तनै नहीं करन दिया सत्कार।

धर्म कै में बांझी मारी, गाँव क्यों भरमाया तनै,
गलत राय देकर कै ने पाप क्यों कमाया तनै,
धर्म केमां होडा मारा बताके हथाया तने,

सभ नगरो की श्रद्धा थी हम पूजा भी जरुर देते,
वक्त गए चूक सारे इसलिए कष्ट खेते,
खुश हो कै नै गुरु आर्शीवाद भी जरुर देते,
म्हारे दर से भूखे सन्त गए इस नगरी को धिक्कार ।।१।।
सज्जन पुरुष उचाने वाले बहुत दुःखी होन लगे,
दूर दूर तक फिरकै नै उन साधुओं को टोहवण लगे,
देवी दास नास करता उस आगे जंग झोले लगे,
कालजा सा काढ लिया खोया जैसे धनमाल,
चेहरे पै मुरदाई छागी, हाल से होगे बेहाल,
जहां जोगीराज थे फिर उसी जगह आऐ चाल,
साधू जी फिर मिले नहीं वो रोए टक्कर मार ।।२।।
फिर आए गांव के में, दरिद्र जो राखा गेर,
देगे सै श्राप साधू रह गए हम मन तैं सेर,
गाम का बिचाले साधू गाभे का जो करगे ढेर,
मठाधीश नै लोभी होकै पाप जो कराया सै,
पूजा मतना दियो इनको सारा गांव बहकाया सै,
गांव में दरिद्र मठ के महन्त ने गिरवाया सै,
फिर गांव वालों ने ठाके लोगड़ आसन में दिया डार ।।३।।
देखके न गाभा सारा उस बाबा ने ना आई नींद,
गांव के गोरै गेर गया लाई नहीं स्यात वींद,
पालियों ने खुश होकै नै गाभे की बनाई गींद,
घर घर में दरिद्र बड़ग्या, उत कूढ़ा चाल्या गया,
बचे खुचे भाग निकले जिनपै थी गुरुओं की दया,
एकदम ऊजड़ होग्या खेड़ा नगरी में ना कोए रहया,
रामेश्वर भी साथ गया जो कली बनाके चार ।।४।।

।। वार्ता ।।

श्री बाबा मस्तनाथ जी धड़ाउठी गाँव में एक सूखे वृक्ष (बड़) के नीचे अपना धूणा लगा लेते हैं। गांव वालों को गुरुओं का समाचार मिला तो तमाम गांव सेवा में खड़ा हो जाता है। बाबा श्री मस्तनाथ जी के धूने पर चहल-पहल रहने लगी। रात दिन मेला लगा रहता है। अपने मन की मनोकामना कहने लगे और शीलवचन लेने लगे। एक भक्त और उसकी पत्नी वृद्ध थे। दोनों धूने पर आए। पान फूल धूने पर रखे और कहने लगे महाराज हमारे भी काज करियो। और सेवक जो वहां बैठे थे उन दोनों की हंसी उड़ाने लगे कहने लगे ये भी औलाद चाहते हैं दोनों का शरीर कांपता है क्योंकि ८० वर्ष की दोनों की उम्र हो रही है। लकड़ी शमशान में पड़ी है। अब ये सन्तान की इच्छा कर रहे हैं। जबाब कवि का

भजन नं० ३९

टेक—दूध भात पकवान खीर के भोजन लावण लागे,
अपनी अपनी मनोकामना सभी बतावण लागे।
गुरु मस्तनाथ ने दई भभूति लगते तबीयत हो ज्याए याद,
सब नगरी का कष्ट निवारा याद करन का आया साध,
साधू देखे बहुत घने पर कोई नहीं थारे तै बाध,
कानों के में कुण्डल झलकै, गलकै में थारे जनेऊ नाद,
लेकर आर्शीवाद गुरु को शीश झुकावण लागे ।।१।।
बीस तीस तें बैठे रहे तीन गए तै आज्यां चार,

सभी गांव के गुरु मस्तनाथ की करने लगे जै जैकार,
गांव धड़ाउठी स्वर्ग द्वारा आप पधारे सर्जनहार,
उन बन्दा की मुक्ति होगी जिनने लिए चरण चुचकार,
सेवा में नर नार गुरु से सब फल पावण लागे ॥२॥
ब्राह्मण, बनिया, क्षत्रिय शूद्र सभी वर्ण के धाये,
वैसे ही फल दिए गुरु ने जो कोऐ जिसी भावना लाए,
हमारे पूर्व ले शुभ कर्म थे न्यु होगे म्हारे मन के चाहे,
आखनन्दी सबके आगी घर २ केमां आनन्द मंगल छाये,
सतगुरु की सेवा में आए शुकर मनावन लागे ॥३॥
रामेश्वर उन सिद्ध पुरुषों ने जत्ती सत्ती का राखा ध्यान,
जिनहें करा अपमान गुरु का वे बन्दे फिर हुए विरान,
जो कोए आया सन्त शरण में उनकी ऊँची राखी शान,
श्री मस्तनाथ जी योगी पूरे कलियुग के हैं खुद भगवान,
गुरु जियानन्द का ज्ञान मान लय सुर में गावन लागे ॥४॥

॥ दोहा ॥

श्री मस्तनाथ कहने लगे दिल में करो यकीन,
तुम अपने घर को जाओ पुत्र होवेंगे तीन ॥१॥
सुनते ही इस बात को सेवक बोले एक साथ,
सुखा लकड़ हरा हो नहीं, नहीं जँचन की बात ॥२॥
जबाब बाबा मस्तनाथ का अपने चेलों से—

॥ दोहा ॥

भक्तों की सुन बात को कहन लगे गुरु फेर,
चिमटे से जड़ खोद के तुम लाओ पानी गेर,

दूजै दिन पत्ते आ गए शाखा चाली एक,
तब सेवक कहने लगे सत्यगुरु का लेख ।

।। वार्ता ।।

सज्जनों श्री बाबा मस्तनाथ जी ने सूखा वड़ का पेड़ हरा किया । वो बड़ अब भी मौजूद है । और उस ववृ जाट के तीन पुत्र हुए । अब तक उनका परिवार फैलकर काफी हो रहा है । पूरा ठोला पाना बस रहा है । श्री बाबा मस्तनाथ जी धड़ाऊँठी गांव में सात दिन तक रहे तब वहां से चल करके गांव कलोई में आए । कुछ दिन वहां रहे फिर गांव बोहर में आए । उनके साथ काफी सेवक थे । गांव के पास कै चले हुए जा रहे थे कुएं की पनिहारी जल भर रहीं थीं । उनमें एक अति सुन्दर नारी थी उसको अपने रूप का अभिमान था । वह नारी बाबा मस्तनाथ व उनके सेवकों को देखकर क्या कहती है कि यह दुनियां के लोग बेवकूफ हैं क्यों इस मलंग के साथ फिरते हैं ।

भजन नं० ४०

जबाब जाटनी माई का

टेक–फिरें अघाणें दुनिया के में अपनी लिहाज शर्म ने तारें,
मलंग छड़ से बाबा बनज्यां घर तैं काम करन के मारे ।
पहले धर क्यां तै खटपट करते फिर सिर गुरु चरणा में धरते,
फिर उनसे भी कोन्या डरते, न्यू दर-दर की ठोकर खारे,
टुकड़ा तक की फिर सांसा होज्या पेट के दुखिया फिरते सारे ।।१।

बता ये कौनसा मतलब टोहरे कितने मानस गेल्यां होरे,
अर के खोलेंगे खांड के बोरे, खुद ही भीख मांग के खारे,
सारे गात में धूल रमाकै हाथ में लोटे सोटे ठारे ।।२।।
बता क्यों अकल गई सै मारी, पागल हो रहे सैं नर नारी,
अर कसरैहटी का यो रहबारी कहे भगवान आ गए म्हारे,
जाकै ऊँट चराए कोन्या बुढे मात पिता दुःख पा रहे ।।३।।
रामेश्वर नाथ सोच गए नरमाई ने घाट कुछ घाली ना माई नै,
छेक करे त्रिया जाई ने वहा कह रही थी बिना बिचारे,
फिर गुरुओं ने श्राप दे दिया जा कुत्ते खांगे खीर तुन्हारै ।।४।।

।। वार्ता ।।

श्री बाबा मस्तनाथ जी कहते है जैसे हम नगे फिरते हैं एसे तू भी नंगी फिरेगी माई ।

।। दोहा ।।

माई ने रंग रुप का करा बहुत अभिमान,
याद करेगी बाद में आए थे भगवान ।।

भजन नं० ४१

तर्ज—बहरे तबील

टेक–घनी बक-बक करगी मेरे सीने को भरगी,
तेरी उतरगी शर्म तनैं कतई लिहाज न आई ।
संग में सेवक थे ज्यादा, उनका माना ना कायदा,

राह में बाधा जो डाला बता के फल पाई ॥
घनी तर-तर करती, क्यों काटे सै धरती,
तनै कर दूंगा भरती हम जैसा के म्हां हीं,
घनी बोलै बेढंगी, जा हाँडेगी नंगी,
मतना चालै कुरंगी तनैं बता दूंगा राही ॥१॥
हुई माया में लटपट, घणी करती है खटपट,
तनैं देखूंगा झटपट तूं है किसकी जाई,
वणके पापन हत्यारी, किया रासा जो भारी,
तूं किसकी है नारी कौन तेरा खसम गुसाई ॥२॥
साधु धागा है काचा, मेरा गुरु है साचा,
सबका चाहूं सूं आच्छा क्यों कराई बुराई,
ऐसे मन्त्र जो मारूं चढ़ी कला तारूं,
तने नरक में डारूं जो तू भोगे तवाई ॥३॥
रामेश्वर नाथ चित धरते परमारथ जो करते,
हरदम जो हरते सब की पीड़ परार्ई,
कतई मेंटू अंधेरा हो न्या फजर सबेरा,
तनै पाट ज्यागा बेरा रटै सतगुरु साई ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनों पाई के ज्ञान वैराग्य हो जाता है घर आते ही पानी की दोगड़ उतार कर सब कपड़े उतार देती है और तमाम हार शृंगार उतार दिया। बिल्कुल नंगी हो जाती है और चुल्हे में से भभूती लेकर सारे शरीर में लगा लेती है परिवार की तरफ देखती भी नहीं है। और न ही उनकी बात

सुनती है। शिव गोरक्ष शिव गोरक्ष का जाप करती है और किसी की बात भी नहीं मानती है। परिवार हैरान हो जाता है तब एक पड़ोसी उसके पति हरीसिंह के पास खेत में आया और उसकी पत्नी का हाल सुनाया तब हरीसिंह घर पर आकर के देखता है और क्या करता है।

।। दोहा ।।

मार पीट समझा कै छिका हरीसिंह जाट।
फिर कोठे में रोक दी खूब जमा कै ठाठ।।
एक कुएं की पनिहारी नै हाल बताया आन।
यह माया गुरुदेव की क्यों हो रहे अनजान।।
पाई ने श्रीनाथ का मान दिया जो मार।
श्री मस्तनाथ न्यू कह गए तू फिरेगी नंगी नार।।

।। वार्ता ।।

उस पड़ोसन की बात सुनकर हरीसिंह जाट बाबा मस्तयाथ के ऊपर बड़े अहंकार और क्रोध में होता है। और कहता है कि मेरे घर का नास उस महात्मा ने किया है। यह कहकर बाबा श्री मस्तनाथ को मारणे के लिए हथियार उठा कर धुणे की तरफ चल पड़ता है।

भजन नं० ४२

टेक–तामस अहंकार में घिरकै कुली नरक में डारन खातर,
ले आया हथियार हरीसिंह सिद्ध पुरुष नै मारण खातर।।

तावला तावला चाल हरीसिंह खोखर वण में आया था,
श्री मस्तनाथ जी रास्ता रोकें आगे ए खड़ा पाया था,
फिर गुस्सा वदन में छाया था न्यू लड़ा
हरीसिंह कारण खातर ॥१॥

मेरी नार तने पागल कर दी मैं जिसका धरवारी,
लाखों मैं टोहे ते पावे है पतिव्रता नारी,
गुरु मस्तनाथ के जेली मारी दया, धर्म, गुण हारण खातर ॥२॥

फिर पाछेनै बाबा पाया हरीसिंह ने चकरी खाई,
मन कै में न्यू सोचन लाग्या सेल मारके छक लिया भाई,
गुरुआं ने सिद्धि दिखलाई रुप दूसरा धारण खातर ॥३॥

रामेश्वर जो खानदान के असली सारी शर्म करें सैं,
माता पिता गुरु सन्त के आगे धणा बोलता नरम फरें सैं,
जिसा बणै उसा धर्म करै सैं फर्ज शीश का तारण खातर ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनों हरीसिंह जिधर सेल चलाता बाबा दूसरी तरफ पाता। इधर उधर सेल चलाई फिर तीसरी बार सामने सेल चलाई। फिर बाबा पीछे दिए दिखाई। हथियार कई बार चलाए। बाबा गुप्त होके दूसरी तरफ पाए। हरीसिंह समझ गया यह कोई शक्ति वाला बाबा है। इस पर मेरा वश नहीं चल सकता ना पाई मान सकती। पाई के वैराग्य भक्ति का लगा है। इसलिए मैं गुरु मस्तनाथ के चरणों में पाई को लेकर आऊँ

भजन नं० ४३

तर्ज—इतने में दिन लिकड़ा आया

टेक–मिलकै नै आगे दोनों सतगुरु के पड़गे पाया ॥
जी फिर लाग्या कोन्या घर में प्रेम ना रहा ब्याहे वर में,
सरवर में नहागे दोनों सारा अभिमान मिटाया ॥१॥
खुश होकै नै धुणे पे चलती दिल में जोत ज्ञान की जलती,
गल्ती वै खागे दोनों, विधना ने कष्ट दिखाया ॥३॥
तूं नित गोरख गोरख करती जा इब इनमें होज्या भरती,
सुरति वो लागे दोनों दान किया घर बापस आया ॥३॥
रामेश्वर गुरु जियानन्द ने काटे जन्म मरण के फन्द ने,
छन्द नै वो गागे दोनों धन हो सतगुरु थारी माया ॥४॥

॥ वार्ता ॥

अब पाई को लेकर के हरीसिह और उसके परिवार के बाबा के धूणे पर आए। तब भी पाई नहीं मानती है और कहती है मैं गुरुजो के चरणों में रहूंगी। इसमें ही मेरा कल्याण होगा और में मन लगाकर तपस्या करूंगी। चेली बनी दर्शनी और तमाम जिन्दगी खड़ी तपस्या करी। शिव गोरख का भजन करती करती अस्थल बोहर मठ में समाधिस्थ हुई। आगे की कथा इस प्रकार है। सज्जनों बोहर गांव का एक जाट था जीता नाम था गऊ माता रखा करता। गऊ की सेवा किया करता था। गऊ का दूध पिया करता। गऊ के सहारे अपने बाल-बच्चों का पालन पोषण कर रहा था। एक दिन गऊ चराने के लिए खोखर वण मै आया। उस दिन अचानक गऊ

चरती चरती जमीन पर गिर पड़ती है और पैर पसार गई तथा मर गई जीता पाली गऊ को देखकर बहुत घणा रोया। फिर श्री मस्तनाथ जी के पास आया। आकर के अपनी मरी गऊ के बारे में बात बताई। जबाब पाली का

॥ दोहे ॥

बार बार सुमिरन करूं श्री मस्तनाथ करतार,
थारे नाम से उतरगे भव सागर से पार ॥१॥
जीता रोता रह गया हूं मैं घणा गरीब,
प्रकट करता भावना, आके थारे करीब ॥२॥
मेरी गऊ मरी मैं भी मरा मेरा गया रोजगार,
कपिला से बच्चे पालता सुनियो सरजन हार ॥३॥
सूखा बड़ हरा कर दिया अलख पुरुष रघुवीर,
दूध पिलाया आपने जो मांगे थे नीर ॥४॥

भजन नं० ४४

टेक–धूने में ते लई भभूती गऊ की तरफ फैंक कै मारी,
मतना रोवे जाकै देख ले चरण लागमी गऊ तुम्हारी ॥

मरदाना है खाड़ा यहां पर रण्डी आला नाच नहीं सै,
बुरे भले बन्दे सब आवें तू समझै के जांच नहीं सै,
उस गाडी की बाडी टूटै जिसका पक्का ढांच नहीं सै,
सन्ता कै दिल दया की धारा ऐसा और व्राच नहीं सै,
सच्चाई के आंच नहीं सै समझ गए सच्चे न्यायकारी ॥१॥

जहाँ धर्म की नाव चलै सै सत का मिले मल्लाह,
उन बन्दा की चढ़ी रहे से ढलती नहीं कला,
बुरे कर्म की सज्जन आदमी देते नहीं सलाह,
इस काया का बाग फैलजा बण की तरह फलाह,
हम उसका भी भला चाहते जो करते काट हमारी ॥२॥
माता पिता और गुरु सन्त के पाया शीश धरै ना,
साधु, ब्राह्मण, धी बेटी का खाजा कतई डरैं ना,
शुभ कर्म के करण की खातर आगे कदे कदम धरै ना,
भूले भटके रहे सदा मन चीते काम सरै ना,
भजन बन्दगी कतई करैं ना भोगे बिपता भारी ॥३॥
गुरु जियानन्द वो पार हुए जो भला और का चाहवै,
उनका भला जरुर बने जो पीर फखीर ने ध्यावें,
आपने धन में नीत रहे ना परधन तरफ लखावैं,
रामेश्वर बलियाणे का नित यश गरुआँ का गावैं,
पापी बन्दे नरक में जावें मस्तनाथ कहे दूधा धारी ॥४॥

॥ दोहा ॥

गऊ जीता की जी गई जी में जी गया आ,
फिर मन में न्यू सोचता गुरु से आऊँ बता।

॥ वार्ता ॥

सज्जनों जीता राम चौधरी सारी उम्र पाली ही रहा क्योंकि अनपढ़ था। सादा और नेक इन्सान था। गऊ पालकर अपने बच्चों का निर्वाह करता था।

।। काफिया ।।

गुरुजी भूमण्डल के मालिक हो थारा तो भेद किसे नै ना पाया।
तुम बांझा के पुत्र देते तुम्हें कुबड़ी का कूब बहाया।
आज मरी गऊ जिवादी मेरी जीता पाली ने यश गाया।

।। वार्ता दास्तान ।।

सज्जनों श्री बाबा मस्तनाथ जी अपने चेलों को खोखर वण में धूने पर छोड़कर आप झज्झर के जंगल में चले जाते हैं। बड़ा भयंकर जंगल वहाँ था जिसमें सभी प्रकार के जीव जन्तु रहते थे। शिकारी शिकार किया करते थे। खुद झज्झर का नबाब भी शिकार किया करता था। बाबा मस्तनाथ जी दिल में विचार करते हैं कि इस नबाब को प्रचा दिखाऊं और सबका शिकार खेलना बंद कराऊं। सब जीव सुख से रहेंगे। ये सोचकर मृगा रुप धारण कर लेते हैं और वण में घूमने फिरने लगे। इत्तिफाक से नबाब ही क्यों न आ जाएँ।

भजन नं० ४५

तर्ज—अन्त आ लिया

जबाब कवि का

टेक—झज्झर के जालिम जंगल ने मन भरमा लिया,
वण की शोभा देख गुरु ने धूना ला लिया।
श्री मस्तनाथ जी बड़ के नीचे भजन करन लागे,
चीते और बघेरे वण में शेर फिरन लागे,
भालू बन्दर और भेड़िया आण चरण लागे,

गीदड़ लोभा ससे वीजु धणे हिरन लागे,
शिकारियों हाथ मरण लागे मारया सोये खा लिया ॥१॥
निर्भय होकै जंगल कै में चोला बदल फिरूं,
घणी जीव हत्या करैं शिकारी इनकी बिफत हरु,
सभी जीव सुख पावें इनके बदले आप मरूं,
एसी मन में आई एक बे मृगा रुप धरूं,
मृग रुप गुरु मस्तनाथ नै आप वणा लिया ॥२॥
तरवर सरवर, सन्त, महात्मा चौथे बरसे मेंह,
परमार्थ के कारण जग में चारों धारें देह,
वनी सिंह नबाब चला रायफल हाथ में ले,
उसी मृग के गोली मारी कोन्या करा सनेह,
फिर पाछें भागा ध्यान से दे वड़ नीचे आ लिया ॥३॥
चार दिना की चमक चांदनी फिर अंधेरी रात,
सुकर्म के फल वो ले मूर्ख तज के ने उत्पात,
कर्म करे सो पड़ै भोगना नहीं और का साथ,
किसा नबाब बना हांडे याते कुछ भी ना सै बात,
रामेश्वर गुरु मस्तनाथ निर्गुण पद गा लिया ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनों श्री बाबा मस्तनाथ जी ने मृग रुप में भागते-२ एक बिड़े की आड़ में छुपकर मृग का रुप गुप्त किया और फिर योगी रुप धारण किया और धूणे पर आए पैर में गोली लगी हुई थी। आसन पर बैठकर बड़ के पत्ते के पैर का लहू पोंछ रहे थे और शिकारी शिकार मरा समझकर उठाने के लिए

पीछे भागता हुआ आया। बड़ के नीचे श्री बाबा मस्तनाथ जी पाए। आकर के देखता है तो सोचता है यह महात्मा तपस्वी बड़ा भारी योगी बैठा है और पैर से लहू निकाल रहे हैं तब अपने मन में बनी सिंह घबराया और हथियार पृथ्वी पर डाल दिये। फिर हाथ जोड़कर सामने खड़ा हो जाता है और ये सोचता है कि साधू मेरे को श्राप जरुर देंगे इसलिए में इस गलती की योगीराज से क्षमा मांगू।

भजन नं० ४६

जबाब बनी सिंह नबाब का

टेक—गेर दिए हथियार फेर एक दम गुरुओं के पाँ चुचकारे,
गल्ती करियो माफ महात्मा हम सेवक दास तुम्हारे।
सिद्धां की माया जिया जून बहुत सी मारी,
इसा मृग कदै देखा कोन्या मैं पापी बनया सिकारी,
मतना श्राप दियो तुम भारी खुद मरज्यां में हम बिना मारे ॥१॥
मैं अपराधी सेवक थारा गल्ती के में आग्या,
मृग रुप में गुरु घूमते भेद मनैं यो लाग्या,
अपने मन में खुद सरमाग्या इसे कर्म जो हुए न कारे ॥२॥
मेरे भेद ने तू के जाने मैं साधारण नाथ नहीं,
हम दुनियां के दुनियां हमारी कोए दूसरी बात नहीं,
ये नौकर चाकर साथ कई वो पैरों कै में पड़गे सारे ॥३॥
रामेश्वर या अन्धकूप में सच्चाई का राह बतलाया,
झझर के मुखिया सब आए जंगल के म्हां मंगल छाया,
जियानन्द गुरु की माया खोल दिए फिर मोक्ष द्वारे ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनों अब झज्झर का नवाब कहता है कि गुरु जी आपकी क्या सेवा करूं। श्री बाबा मस्तनाथ जी कहते हैं कि सेवक हमें किसी चीज की आवश्यकता नहीं हैं, तुम इस वण में शिकार मत किया करो और सबको यही उपदेश दो कि कोई भी यहाँ शिकार मत खेले। महाराज जैसा आपका हुकुम होगा आपकी आज्ञा के अनुसार कार्य करेंगे। सबसे पहले आपके आदेश का पालन होगा उसके अनुसार तमाम नगरी काम करेगी। गुरु जी से आशीर्वाद लेकर नवाब वनीसिंह और मुखिया आदमी तमाम नगरी में चले जाते हैं। श्री बाबा मस्तनाथ जी अपने दिल में विचार करते हैं कि दिल्ली आलमशाह बादशाह को अपना पूरा पर्चा दिखाऊँ तथा पंच कुइया मोड़ पर धूना लाऊँ। अपने चेले साथ में लिए और उनसे गुरु जी क्या कहने लगे—

॥ दोहा ॥

ज्योति स्वरूप निरंजन अटल अगम का नूर।
पर्चा दिखलाऊँ जायके दिल्ली में भरपूर ॥

भजन नं० ४७

(जबाब श्री मस्तनाथ जी का)

गुरु मस्तनाथ के मन में आई दिल्ली जाणा चाहिये।
साधु सन्त महात्मा ने कुछ गुण दिखलाणा चाहिये ॥टेक॥

सारे चले कठ्ठे होकै मेरे पास में आओ,
जमुना माई करे सहाई निर्मल जल में न्हाओ,
वेद पुरान का ज्ञान मानकै ध्यान धणी का लाओ,
श्रद्धा सच्ची भक्ति देखोगे चलो आसण बिस्तर ठाओ,
चलकै दिल्ली शहर चिताओ ना घबराणा चाहिये ॥१॥

प्रमारथ की धार भावना दिल्ली कै मां आगे,
पंच कुइया मोड़ के ऊपर करण तपस्या लागे,
जत्ती सत्ती सब पां चुचकारें भाग पुर्व ले जागे,
कोए मौनी कोए दूधाधारी घणे तपस्वी नागे,
मन इच्छा सेवक फल पागे सुकर मनाणा चहीये ।२।

अस्थल बोहर मठ से चलकर योगी आया है मस्तनाथ,
सारे शहर में जिकरा चाला बादशाह नै सुणी या बात,
उस जोगी के धोरे हरदम मेला भरा रहै दिन रात,
खुद मैं चलके पां चुचकाहूँ मेरा भी शुद्ध होज्या गात,
बाहां बैठी जोग जमात चालकै धर्म कमाण चहीये ।३।

काजी मौला स्या मौलवी सारे तुरन्त बुलाये,
इस रजधानी दिल्ली में कोए मस्तनाथ सिद्ध आए,
दर्शन करना चाहू सू न्यु बादशाह फरमाये,
इब तुम अपना विचार कहो किस ढाल भीसत को जाये,
रामेश्वर जहां साज बजाये सुर में गाणा चहीये ।४।

॥ वार्ता ॥

हाली मुआली काजी मौला दिवान मुस्द्दी चीड़ी चोबदार इस बात को सुणते ही एकदम भड़क कर बोले कि बादस्याह

सलामत तुम उनके पास मत जाओ औ हिन्दू मजहब के महातमा हैं और नंगे बैठे हैं आप सहर पन्हा से बाहर क्या करोगे।

भजन नं० ४८

एक बड़ा मौलवी न्यू बोल्या तू सुणीये ये बात हमारी।
दीन ईमान कुरान धर्म तैं बात करो मत न्यारी।टेक।
पीर फकीर ओलिया साईं इनके बड़े खाड़े,
सारे गात में राख रमारे सिर के बाल बिगाड़े,
गल में नाद जनेऊ माला सब साधू कनपाड़े,
नंग्या के तो दर्शन हजरत कहा करैं सैं मांडे,
धुणी तप रहे कती उघाड़े लीहाज सर्म सब तारी।१।
उतने पैर फलाइये मियां जितनी लंबी सोड़ सही,
तेरा कर्म सितारा साहामी तु मुसलां में अणी मोड़ सही,
बाहर शहर तैं जाइये मतना दिल में लाले जोड़ सही,
कहा करे से काजी जी की मेझत तक की दोड़ सही,
हमने कर दिया तोड़ सही सै जाणे में दुख भारी।२।
फेर मन क मां सोचण लाग्या अब क्या जतन बनाईये,
एक हलकारे ने कहण लाग्या तू नाथ शरण में जाइये,
पांच असरफी एक दुसाला जाके भेंट चढ़ाईये,
उसके बदले शील बचन तू म्हारी खातर लाइये,
रसते में ना ढील लगईये मैं करूं तेरी इन्तजारी।३।

बादसाहा की बात मान कै ऐकदम चला सिपाई,
जा आदेश करी धूणे पर सारी बात बताई,
मोहर दुसाला चरणा के मां जाकै भेट चढ़ाई,
श्री मस्तनाथ ने धर धूणे में एकदम खाक बणाई,
रामेश्वरनाथ करे कविताई सतगुरु महिमा थारी ।४।

॥ वार्ता ॥

सज्जनों बाबा श्री मस्तनाथ जी मोहर और दुशाला उठाकर धूने में रख देते हैं। अग्नि का स्वभाव है हर बस्तु को जलाना। एकदम जोर की अग्नि भड़क उठी फिर दुसाले की राख हो गई। यह दृश्य उस हलकारे के सामने ही हुआ। हलकारा भय का मारा कुछ न बोल सका। आदेश करके वापिस चल पड़ता है बादसाह के पास आकर सभी वृतान्त सुनाने लग्या।

भजन नं० ४६

आके न्यू बोल्या हलकारा ले तने हाल सुणाउ सारा,
थारा फूंका दुसाला उस नाथ नै।
मजबूर हुआ में पाकड़ सका ना हाथ नै ।टेक।
बेपरवा ओलीया साई लोभ ना जिनके मनमें,
बहोत घणे हैं चेले उनके बैठ रहे भजन में,
मन में चाहे सो कर डारे, आसणू लगा आतमा मारे,
तारे पार जो सकल दिहात नै इब तु ध्यान लगाके,
समझ लिये मेरी बात नै ।१।

कफे हुया न्यु कहण लाग्या तू नाथ शरण में जाइये,
उस साधु के धोरे जाकै मांग दुशाला लाइये,
खाईये भय ना कीसे का भाई यह कैसी सिद्धी दिखलाई,
आई उस साधु की स्यात नै,
रै मैं कैद करुंगा देखूंगा करामात नै ।२।
गुरूजनों के धोरे जाके कामदार फरमाया ॥३॥
वादसाहा ने वही दुशाला फेर बापिस मंगवाया
में आया सतगुरू थारी शरण में
बियाले में ही आग्या मरण में
करम में इसे–२ उतपात नै
है गुरू पूरी करियो वादसाहा की चाहात नैं
गोरक्षनाथ गुरू मस्तनाथ खुद अपणा नाम धराया ॥४॥
कीसे चीज की चाहणा ना कुछ देण की खातर आया
पाया फल कर्मा का नाही नाहक दोस धरे सिर सांई
गाई लीला दिन और रात नै
रामेश्वर बख्यान करो हालात नै

॥ वार्ता ॥

हलकारा बाबा मस्तनाथ के पास आया और कहता है महाराज बादसाहा ने दुशाला बापिस मंगवाया है। सो कृपा करके दुशाला वापिस दे दो जी। बाबा अपने मन में जान लेते हैं कि वादसाह अब करामात देखणा चाहाता है। यह बात समझकर हाथ में चिमटा लिया और धुणे में से निका नि काल कर दुसालों का ढ़ेर मार दिया फेर कहा ले जाओ जोणसा तुम्हारा हो।

भजन नं० ५०

टेक–फेर गुरू वां ने धूणे में से काढ़े कई दुसाले
जुणसा तू लाया था सेवक वही दुसाला ठाले

कामदार सर्मिन्दा होग्या ऐसा खेल दिखाया
सिद्ध वुरूष करणी का पूरा धन सतगुरू थारी माया
ये थोड़ी परीती पाले सैंन्यू कहावत के मा आया
हाथ जोड़ आदेश करी चरणा में सिस झुकाया
बादसाहा ने धोखा खाया औ फल कर्मा का पाले ॥१॥

है भगवान दया के सागर रंग रूप थारै रेख नहीं,
थारे जैसी इस दुनिया में लगे रेख पै मेख नहीं
तीन लोक के नाथ तुम ही हो दुमसे न्यारा लेख नहीं
जो चाहो सोए कर डारौ फिर आगै पीछे देख नहीं
कौए और राखनिया टेक नहीं तुम जग के हो रखवाले ॥२॥

नाथ निरंजन न्यू बोल्य हम अगम निगम की जाने बात
चार खूंट में रमते फिरते करते नहीं किसे का साथ,
बादशाह तो अन्ध हो गया करने लगा ज्यादा उत्पात,
विषय वासना के धंधे में लगा रह सै दिन और रात,
या सिद्धो की करामात हाथ में, सैं अमृत के प्याले, ॥३॥

सुरति गई अगाड़ी एकदम सबतैं कहन लगे या बाय,
राम और खुद गए हैं दोनों दिन लिकड़े होते प्रभात,
उल्टा नाद बजाओ योगी सारे मिलके ने एक साढ़,
एक बै तो घनघोर मचेगा हट के सुख से बसै देहात,
रमेश्वर गुरू मस्तनाथ करामात सभा में गाले ॥४॥

॥ वार्ता ॥

हलकारे का शरीर बाबा मस्तनाथ की करामात देखकर कांपने लगता है। एक दुशाला उठाकर आदेश करके चउ पड़ता है। जब बाबा श्री मस्ताथ जी ने अपने चेलो से कहा बादशाह ने दान देकर वापिस लिया। ज्योति स्वरूप निरंजन नाराज हो जाते हैं और बादशाह को श्राप देकर राज बदल जाने की बात बताई।

भजन नं० ५१

(तर्ज–मने तू जोग दिवाण आलीरी)

टेक–चला अज्ञाले सरदार यार फेर दरबारा में आया था।
मैंने मांगा था एक दुशाल है वो योगी अजमत वाला ॥

चीमटा लेके धूणा संभाला कर दिया बस्तर का फरमाला।
लेके चाला एक देखके वो नेक गूरू फरमाया था ॥१॥
तने जोड़ बता दूं सौका खाया बादशाह तने धोक्का,
तेरा समय कट ग्या ओखा दिया काढ़ हाथ ते मोक्का,
तिरेना नोक्का परले पार धार आसार ही फेल बताया था।२।
सुणी शाह ने बात एककम थर-थर कांपा गात,
अब कैसे हो प्रभात रूठेंगे तीन लोक के नाथ,
लीया साथ बुरा दिल बिच डरा में मरा जो संत रूसाया था।३।
रटले वाले गोरक्ष जती उसने भूलो मतना कती जी
थारी होज्या तेज रती जी मिल ज्यागी परम गति जी
कहे रामेश्वर मतितन्द छन्द आन्द राग सुनाया था ॥४॥

॥ वार्ता ॥

बादसाहा अति सर्मिन्दा हो जाता है और कहता है कि चलो इस किस्से को खत्म करो हम मस्जिद में जाकर हजरत की हज करते हैं ओ हिन्दू मजहब के साधु हैं। उनसे हमारा क्या मतलब तब बाबा मस्तनाथ जी अपने चेलो से कहने लगे उल्टा नाद बजाओ राम भी गया खुदा भी गया। सबने नाद सबने नाद बजाया और सबने यह बात कही राम भी गया खुदा भी गया एक शिष्य कीरतनाथ ने नाद नहीं बजाया और न ही यह बात कही जो उसके पास साधु था उसने गुरू से कहा कीरत ने नहीं नाद बजाया न यह बात कही श्री बाबा मस्तनाथ जी ने उसे अपने पास बुलाया।

जबाब बाबा मस्तनाथ का अपने चेले से—

भजन नं० ५२

तर्ज—करी कीधर की त्यारी

टेक—मेरा चातर चेला होके नै तनै कहन पुगाया कोन्या
मेरे दिल में संशय हुई गुरू न्यू नाद बजाया कोन्या
कुन सी दिल में संसय होगी खोल बता दे बात सही
हिन्दू मुस्लिम दोनो दीना यें जग में विख्यात सही
और तीसरा हुकम चलेगा दीख रहा हालात सही
भूल मिटाओ भ्रम रिताओ पूरी करियो चाहत सही
तेरे बिना तै और किसेनै प्रसन ठाया कोन्या
पूरा तै मजबून गुरू जी समझ में आया कोन्या ॥१॥

साधु सन्ता के वचना तै हो जाते सिद्ध काज
बादशाह ने नशे में होके कर दिया गुरू नाराज,
शाह के ऊपर कजा खेलगी ज्यो तीतर पै बाज,
मेनैं बताओ तख्त के ऊपर कौन करेगा राज,
राज फिरंगी करै तख्त पै और पढ़ाया कोन्या,
कौन फिरंगी आवेगा गुरु न्यू समझाया कोन्या ॥२॥

दीन धर्म कुछ रखता कोन्या जात पात का ख्याल नहीं
जो किसी ने ना माने गुरू और इसा चण्डाल नहीं
चण्डाल वही क्रिस्तान वही पर हो सकती अब टाल नही
उनकी भाषा अंग्रेजी हिन्दी की रहे सभांल नहीं
ऐसा तहत जमावेगा इसा राजकमाया कोन्या
उनसे न्यारा और किसे का भाग सवाया कोन्या ॥३॥

रामेश्वर गुरू मस्तनाथ ने दिल्ली से प्रस्थान किया,
शिस्य संघ में बहुत घणे थे बोहर अस्थल का ध्यान किया
कोठ खोखरा बन में जाके सब चेलों से बयान किया
करो गुरु का भजन टेम से एक नजर का ज्ञान किया
कुरु अलख औतारी जैसी देखी माया कोन्या
बिन सतगुरू की टहल बिना कोए रसाता पाया कोन्या। ॥४॥

॥ वार्ता ॥

दिल्ली से चलकर कोठ खोखरे में आ जाते हैं उनका एक शिस्य धणीनाथ निराला ही शिस्य हुआ। उनका बड़ा आले बसाणे का जन्म था उसका नाम राजपूत शेरसिंह था। गुरू ने शेरनाथ नाम रख दिया परन्तु एक घड़ी अन्न नित प्रतिदिन

खाया करता इसलिए उनको साधु शेरनाथ को बजाय धड़ीनाथ कहने लगे । धड़ीनाथ गुरू की आज्ञा लेकर के चारधाम करके फिर गुरू के पास आया गुरू मस्तनाथ जी कुशल क्षेम पूछते हैं। चेला सुनाओ दुःख-सुख की बात कैसे तीर्थ चारधाम किये ।

भजन नं० ५३

टेक–चारधाम करकै आया भोग्या दुःख मोटा पूरा,
एक घड़ी भर नाज बिना मेरा हो नहीं कोटा पूरा ॥

ठौड़ बैठके पूजा ले लूं इसी कोन्या याद हथौटी
चेतन चटक चालाकी करकै अपनी करै मजौटी
गालां के में फिरुं मांगता ठाकर मण्डल सोटी,
वाट चलूं कदे मांगन लागुं लगी बीमारी खोटी,
सारे गाम की खाज्यां रोटी लागे जोटा पूरा ॥१॥

सारे गात में भड़क लागज्या दिन छिपै सी चढ़ज्या ताप
दुःख सुख की कोए बूझंणियां ना तुमसे आज बताऊ साफ,
बहुत घना दुःख पाया जाकै सतगुरु गलती करियो माफ,
साम सवेर भूख सतावे काट दियो मेरे तनों ताप
तुम सतगुरु मां बाप थारा सै भ्रम भरोटा पूरा ॥२॥

सतगुरु महिमा थारी दिल में मेरी नहीं और दूजी,
थारे चरण में सुरति राखी कितनीए प्रतिमा पूजी,
अलख मिलन में लगन मेरी सैं कोन्या और बात सूझी,
जनम मरण से छुटकरा थारे हात ताला कुंजी,,
ना किसैनै तिथि बूझी कर महरम लोटा पूरा ॥३॥

घड़ीनाथ सब कहन लागगे शेरनाथ कोए कहे नहीं,
साधू सन्त मखौल करै सैं चेला थारा फहे नहीं
रमत कै यें चलते फिरते विप्ता मुसीबत सहै नहीं
ऐसा दो वरदान गुरुजी भुख रती भर रहै नहीं
रामेश्वर कुछ लहै नहीं लागे बिन घोटा पूरा ॥४॥

॥ वार्ता ॥

धड़ीनाथ की बात को सुनकर जबावा श्री मस्तनाथ जी का चेला तेरे को कभी भूख नही लगेगी। उसी वक्त से कुछ खाए पीए नहीं तब उसको सकल नरनारी साधू समाज पाथरनाथ बोलने लगे शेरनाथ को धड़ीनाथ से भी ज्यादा शर्म पाथरनाथ की आने लगी फिर गुरुजी से पार्थना करता है कि गुरुजी मेरे को ऐसा वरदान दो कुछ भूख लगे श्री मस्तनाथ जी कहने लगे आज से तुम पाव भर दूध जरुर पिया करोगे । इतनी भूख लगेगी तुम खुश रहो तबसे उनका नान दूधाधारी हुआ कोठ खोखरे के पास चौपट का शहर लालपुर है यहां दूधाधारी बाबा समाधिस्थथ हुए।

भजन नं० ५४

(तर्ज राधेश्याम)

टेक–श्री भरथरी धूणे ऊपर आण अचानक दिए दिखाई ।
बिन बोले गुरुमस्तनाथ ने हाथ की अंगुली फेर हलाई ।।
भरथरी हाथ धरा कंधे पर समझ गए वे सतगुरु साई
भर्तहरि ने फिर धरी नाक पै अंगलो गुरु धारण में देत

टिकाई सिद्धसेन से बतला कै नै रमता होग्या नाथ
फिर चेले न्यू कह रहे हम ना समझे या बात ।

॥ वार्ता ॥

सो कृपा करके हमें बताओ कि आपने क्या वार्ता लाप किया अब गुरुजी कहते हैं कि यह नाथ श्री भर्तहरि जी थे उनको देखकर मैं ने हाथ की उगली हलाई मैंने पूछा आप कहां से पधारे हो तो उन्हानो कंधे पर हाथ रखा में समझ गया बंगाल से आए हैं फिर उन्होनो नाक पर ऊगली रखी कहा कि नाक में दम आ रहा है मैं ने जमीन पर ऊगली रखकर बताया कि जबतक धरती रहेगी तब तक रहना होगा । यह थी सिद्ध सेन । सज्जनो श्री बाबा मस्तनाथ जी कोठ खोखरे से अपने चेलों को लेकर खरक गाव में आ जाते हैं ।

भजन नं० ५५

टेक–एकदिना गुरु मस्तनाथ जी खरक गाम में आया ।
नगरी से पश्चिम की ओड़ा आके धूणा लाया ॥
खरक गाम के नरनारी फेर आगे पास घनेर
श्री मस्तनाथ जी न्यू बोले यहां दो चेले हैं मेरे,
इणपतधाता चरण के चेहरे न्यू सतगुरु फरमाया ॥१॥
कहन लगे नगरी के सेवक एक या भी बात बताईयो
कौन से चेले थारे सैं उनको संग में ले जाईयो
उनके मातपिता ने पास बुलाई यो जब हो मन का चाहा ॥२॥

इणपत धाता दोनों चलकै धूने ऊपर आए
गुरु मस्तनाथ के चरणा के में आके शीश झुकाए,
सतगुरुजी ने वचन सुनाए करियो कर्म सवाया ॥३॥
रामेश्वर वे न्यू बोले गुरु हमें साथ ले चालो
थारे मात पिता ने पुछ के आना उनकी आज्ञा पालो
ज्ञान गंग के जल में नाहलो अगम भेद बताया ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनों श्री बाबा मस्तनाथ जी खरक से रमतेराम हो जाते हैं उसी दिन से रणपतधाता के मन में वैराग्य लग जाता है गुरु मस्तनाथ जी ही उनके दिल में रहने लगे। अपने घर से घी दूध दही मख्खन रोटी चावल उठाते और भूखे प्यासो को खिलाते और कुत्ते बिल्लियों को भी दूध पिलाते यह आचरण देखकर उनके माता पिता समझ जाते हैं कि ये अलली बाबा हैं। इनको श्री गुरु मस्तनाथ जी की शरण में ही जाने दो। माता पिता रणपतधात को खुश होके अनुमति दे देते हैं और कहते हैं कि अब तुम श्री बाबा मस्तनाथ जी के पास जाओ। इस वचन के सुनते हो श्री रणपतमान धाता श्री गुरुमस्तनाथ जी के धूने पै आए। कोठ खोखरा दे आले पर दर्शन पाए।

भजन नं० ५६

(तर्ज–तेरा चेहरा क्यु मुरझाया)

टेक–गुरु मस्तनाथ के चेले होगे सिद्ध नागे पीर।
आके गुरुभाई बनगे दोनों माँ जाए वीर ॥

वे थे रातपूता के लाल खड़ा तप करगे ३६ साल
हुए योगी बड़े विशाल जो करगे भक्ति में शीर ।।१।।
गुरु ने भेजे उस काम गए थेलाकड़ गोसे के नाम गए थे
जो खडवाली गाम गए थे ठाकै लाये शहतीर ।।२।।
न्यू गुरु मस्तनाथ फरमाए कलानौर से जल्दी आए
भटकया में भरके ने लाए गंगा जमना नीर ।।३।।
रामेश्वर नाथ हरि गुण गाले, सहज में मुक्ति पद
को पाले, गुरुओं के वचन पै चाले,
बणगे परम फकीर ।।४।।

।। वार्ता ।।

श्री बाबा मस्तनाथ जी आपने शिस्यों को अस्थल बोहर मठ में ही छोडकर एक रुपनाथ चेले को साथ लेकर ग्राम पिहोपे के जंगल में नगरो के निकट धूणा लगा लेते हैं महात्मा के आणे का पता लग्या यह सुनकर नगरी के सभी मुखिया बहां आए। आकर के आदेश प्रणाम करते हैं द्रसन करके प्रसन्न हो जाते हैं। नगरी में सूख शान्ति बढ़ी उसी नगर में देवीदास नामका एक गाम का साधू था आदर मान भाव नगरी के सेवक प्रति दिन किया करते थे। श्री बाबा मस्तनाथ जी के बारे में नगरी के सेवक देवीदास के सामने जाकर तारीफ करते हैं और कहते हैं कि आज यह नगरी उनके चरण फिरने से पवित्र हुई है यह देश विदेसों में सरनामी योगी हैं। श्री बाबा मस्तनाथ जी सिद्ध योगेश्वर हैं कि

आज गाम पिछोपे में विराजमान हो रहे हैं। यह सोभ्या लोगों के मुख से सुनकर जबाब देवीदास का—

भजन नं० ५७

(तर्ज—धीरे धीरे वोल कोये सुणना ले)

टेक—करामात लो देख खरी फेर तुम सेवा करो फीरी,
जै वो सक्तीवान सै तुम कहते हो भगवान से

हम भी ले टुक देख श्री
सब जन्त्र मन्त्र तन्त्र म्हारे पास
न्यू कहके बतलाये देवीदास
कर ख्यासलो विसवास लो अब प्रचा उनह कैपासलो
कर पूर्ण अपनी आस लो मेरै तै मन नहीं जरी ॥१॥
जो खुद दुखिया वो के और की पीड़ हरै
उनके ना मन चीते काज सरै विफता भरै खुद ही मरै
साधू धनेरे न्यू फिरें लगा खाख आप ऊदर भरै
डरे नहीं खुद बनें हरी ॥२॥
चाहे कोए बहका दे तुमको आन
तुम क्यों इतने बणरे सो अणजाण
कर भाण लो पहचाण लो समता दिल में ठाणलो
और झाल सबर की ताण लो
दुःख बंधन से रहो बरी ॥३॥
रामेश्वर या मान गये सब बात
फेर वहां गले जहां बैठे थे श्री नाथ

पंचात ने देहात नै पुजागे दिन और रात नै
हम देखेंगे करामात न
जग में चर्चा खास तीरी ॥४॥

॥ दोहा ॥

हाँसी ठठ्ठा करणे लगे उस नगरी के लोग ।
खर ज्यु मुखड़ा पाड़ते लाग्या आण कुजोग ॥

॥ वार्ता ॥

यह कह कर उठकर आपणे धर चले जाते हैं यदि तुम करामत नहीं दिखाते तो हम सेव नहीं करते बाबा मस्तनाथ जी के पास एक सेवक नगरी से आया और कहता है कि नगरी के मालिक ने हुकम दिया है कि कोई उनके पास मत जाओ तब श्री नाथ जी उस सेवक से कहने लगे आपने कुटुम परिवार को लेकर नगरी से बाहर हो जाओ गुरु बचनों से गाम में आग लगेगी जो सत सील नर नारी हैं उनको भी कह देणा जो तेरी मान जायें । वो सेवक उसी समय वहां से चल पड़ता है। रास्ते में एक बिल्ली अपने बच्चे को मुख में दबाये गाम से बाहर आ रही थी वो सेवक समझ जाता है कि साधू का वचन अवश्य सत्य होगा नगरी में आग जरुर लागेगी श्री नाथ जी गाम पिछोपे से उठकर पास ही एक आण नगर है उसके पीछे-२ ही गया। जबाब मस्तनाथ जी का सेवक से—

भजन नं० ५३

टेक–आग गाम में लागेगी तू अपना कुटुम बचाइये
धन दौलत सामान उठाकर आण नगर में आइये

सब की बुद्धि उलटी होगी चाले करण नास ज्यू
सबका भला चाहते हैं भाई हमना देवीदास ज्यू
नगरी में जा वेद ब्यास ज्यू कौरो ने समझाइये ॥१॥

उनका भाग सवाया हो जो भले की बात मान ज्यां
कुटुम ने लेके गेल्यां होज्या लगते हाथ मान ज्यां
जो कोय तेरी बात मानज्या सबने बात बताईये ॥२॥

सिर के ऊपर हाथ धरा वो शुभ कर्मा पर जचा दिया
सेवक ऊपर दया करी फेर रामनाम दिल रचा दिया
कस्ट खेद से बचा दिया नित गुण बाबा का गाइये ॥३॥

जियानन्द गुरु की माया कोन्या वचन टलेगा
पीर फकीर ने ध्यावे गाओ फूले और फलेगा
रामेश्वर सन्तोश अिलेगा न्यो कै चाला जाईये ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनो उस सेवक ने गाम पिछोपे में आकर के गामवालो से कहा भाई मैं बाबा श्री मस्तनाथ जी के धूणे पर से आया हूँ । उस साधू ने कहा है कि वन्दो की अगनी सम दृष्टि हो रही है इसीलिये नगरी में आग लागेगी आपने परिवार को

लेकर और जो कोई तेरी बात मान जाए आण नगर में आ जाओ यदि अपना भला चहते हो नहीं तो तुम सबके लिए अच्छा नहीं होगा। यह कहकर अपने पुत्र को बुलाया और सभी समान आन नगर में ले जाने लगे गाम पछोपे के आदमी उसका हांसी ठठा करने लगे। उस सेवक ने लिल्ली की अपने बच्चे को मूंह में दबाकर जंगल की तरफ जाने की भी बात बताई लेकिन उन्होने उस सेवक की एक बात न मानी एक पुरानी कहावत है कि विनाश काले विपरीत बुद्धि विधाता जिसको दारूण दुःख देता है उसकी मति पहले ही हर लेता है।

॥ दोहा ॥

होणहार बलवान है होके रहे जरूर।
कामी क्रोधी पुरुष थे धणे नीच मगरूर॥
आग गाम में लागगी जलण लगी सभ छान।
सन्त निरादर जो किया रूठ गये भगवान॥

भजन नं० ५३

टेक–जागी-२ जी जी वाला जागी अगन वहाँ लागी
जाण बूझ के मूर्ख बणगे न्यू बन्दे मन्दभागी
डांगर बालक बाहर निकाले बने दाग बेदागी
खागी खागी रे न्यू धोखा खागी ॥१॥
देवीदास की बात मान के सब नगरी थरागी
सिद्धा का अपमान किया न्यू आपत सिर पै ठागी
पागी पागी रे नतीजा पागी। ॥२॥

आग बुझाई कोन्य बुझती दूनी बलगी सागी
देवीदास से कहन लगे या घड़ी कहर की आगी
आगी आगी जी ये आफत आगी । ॥३॥

रामेश्वर वे पार उतरगे लाइनागुरू कौ थ्यागी
सच्चे दिल से हरिगुण गाया वे नर पुरे रागी
त्यागी त्यागी जी तृस्णा त्यागी । ॥४॥

॥ वार्ता ॥

नगरी में आग लग जाती है इन्सान बड़े परेशान हुए वो सज्जन आदमी फिर आया ओर कहता है कि श्री बाबा मस्तनाथ जी के पैरों में जाकर पड़ो तुम्हारा श्री नाथ जी अवश्य कस्ट निवारेंगे । तब उस सज्जन की बात मानकर श्री बाबा मस्तनाथ जी के चरणों में सब नगरी के नर नार आ जाते हैं और अपनी गलती की माफी मांगते हैं । तब गुरू जी कहते हैं कि सुख सम्पत्ति फिर से दुबारा हो जायेगी । धर्म कर्म में बाधा डालने वाले की बात (सलाह) फिर कभी मत मानना । तब ये सील बचन लेकर अपने-२ घर वापिस आए । बाद में गुरू रमते हुए श्री बाबा मस्तनाथ जी वहाँ से चल करके रियासत बीकानेर में पहुच जाते हैं ।

॥ दोहा ॥

रियासत बीकानेर में गजे सिंह का रा ।
पुत्र को गोदी दई रचा यज्ञ का काज ॥

।। वार्ता ।।

बड़ा भारी यज्ञ हो रहा था। एक पाली गाएं चरा रहा था बाबा किसी अन्य स्थान पर जा रहे थे साधुओं को देखकर पाली कहने लगे महाराज यहाँ बड़ा भारी यज्ञ हो रहा है। ये यज्ञ गजेसिंह के पुत्र सूरतसिंह के द्वारा किया जा रहा है। मेला सा भर रहा है। साधु, ब्राह्मध दर्शन अमीर गरीब बड़े बड़े सिद्ध महात्मा सब यज्ञ में आए हैं। लगभग पन्द्रह दिन हो चुके हैं बड़े स्वादिष्ट मिष्ठान,भोजन बने माल पदार्थ घुटन लाग रहे हैं। यह समाचा श्री बाबा मस्तमाथ जी ने उस पाली के मुख से सुना। तभी यज्ञ की तरफ जाने का विचार किया।

भजन नं० ५४

टेक–यो हाड़ ऊँट का ठाले चेता इस पै मेरा ख्याल पड़ा।
रूपनाथ झट कांधे धरके पीछे-पीछे चल पड़ा ।।
फिर के मेला देख लिया जित खबा खबे काखसता
आगे-आगे गुरु चल रहे जित के पाया रास्ता
सारे मेले में दिए निखाई, कांधे हाड़ धरा मस्ता,
वो हाड़ कढ़ाह में गिरवाया ये वाणी खास गुरू दसता,
कोए-कोए योगी देख के हसता जो गुरूओ का लाल पड़ा। ।।१।।
फिर वड़ के नीचे बैठ गए गुरू अपना धुणा लाके,
यज्ञ रसोई भ्रस्ट हो गई विप्र कहें समझा कै
दो सन्ता ने यज्ञ भंग कर दी हाड़ कढ़ा में पाकै
पुलिस पकड़ कै लेजा इनके हाथ हथकड़ी लाकै
पास में जाके देखन लागे सिंह रूपवकराल पड़ा। ।।२।।

राजा ने जब पता लग्या फिर गुस्से के में भरग्या गात
कैसे योगी अजमत वाले देखा चाहू मैं करामात,
जाओ मंत्री मुझसे पहले उनके संग में करियो बात,
फिर मेरे से आकर कहना कैसे उनके हैं ख्यालात ।
जब देखा गुरू मस्तनाथ फिर मंत्री का दिल हाल पड़ा । ।।३।।

रामेश्वर गुरू मस्तनाथ कहे हैं तेरा भगा सिकन्दर
गजेसिंह का काज किया तुम्हें दई रसोई सुन्दर
मैंने दक्षिणा दई मिसरो से खुशी रहे मन अन्दर
सूरतसिंह राजा खुश होग्या जैसे प्रसन्न इन्द्र
जाके देखो कढ़ाह के अन्दर सोना कंचन माल पड़ा ।।४।।

।। वार्ता ।।

सज्जनों श्री बाबा मस्तनाथ गुरुओं का नाम लेकर हाड़ पलट के सोने का कौंचा बना देते हैं और मंत्री से कहते हैं कि राजा सूरतसिंह ने साधु, ब्राह्मण व दीन-दुःखियों को भोजन कराया हमने प्रसन्न होकर के इनको दक्षिणा दी ।

"काफिया"

राजा ध्यान लगा के सुन ले बिल्कुल मेरी बात में छोहना,
खुद भगवान चलकै आ रहे मुश्किल हे ऐसा योगी होना,
यो मैंने आख्या देखा हाल बताया हाड़ पल्ट के कर दिया सोना ।

भजन नं० ५५

(जवाब मंत्री का राजा से)

टेक–मूर्ख बन्दे निन्दा करते नगरी में भगवान सिधारे,
तावल करके दर्शन करलो शुभ कर्म थे अच्छे म्हारे

योगी सिद्ध औलिया धाया,
हाल यह मंत्री ने समझाया,
सूरतसिंह धूने पर आया श्रद्धा करके पा चुचकारे ॥१॥
पूजा भेंट चरण में धरकै
दर्शन करले ने मन भरकै,
फिर हाड़ का जिकरा करकै साधु से राजा बतला रे ॥२॥
सारे दोष बतावें थारा, ऊँड़ का हाड खीर में डारा,
यज्ञ भ्रस्ट क्यों किया हमारा, नाथ निरंजन सर्जनहारे ॥३॥
रामेश्वर नाथ बात में धोहना,
हाड़ पलट के कर दिया सोना
ऐसा योगी मुश्किल होना, मनुष्य अचम्भा करगे सारे ॥४॥

॥ वार्ता ॥

श्री बाबा मस्तनाथ जी कहते हैं राजा तुमने यज्ञ किया है मैंने विप्रों को दान दक्षिणा दी है कढ़ाह के अन्दर सोने का कोंचा है। जाकर के देखो। राजा सूरत सिंह ने जाकर के देखा तो कढ़ाह में सोने का कोंचा मिला। और सब जनता पब्लिक श्री बाबा मस्तनाथ जी का नाना प्रकार से हार्दिक स्वागत करने लगी। ब बा जी के धूणे पर मेला भर जाता है।

।। दोहा ।।

सन्त बड़े परमार्थी शीतल जिनके अंग ।
तप्त बुझा दें और की देकर अपना रंग ।।
जती सती विरला लखै सिद्ध पुरुष की सैन ।
सन्त जहां तीरथ वहां प्रयाग राज उज्जैन ।।

भजन नं० ५६

रूपनाथ गुरु मस्तनाथ का चेला था हितकारी ।
उसी नगर में रहा करै थी रूपनाथ की नारी ।।टेक।।
गुरूओं का समाचार मिला जब भागी दौड़ी आई,
श्री मस्तनाथ के आगे आकै अपनी बात बताई,
जो थारा चेला रूपनाथ सै मेरी ननद का भाई
यो मैंने जोड़ के जोगी होग्या मैं इसके संग पर नाई ,
मैंने दुःख में सारी उमर बिताई साधन बिन लाचारी ।।१।।
गुरू मस्तनाथ ने उस अबला की बात पै ध्तान करा था,
एक मतीरा उसको दे दिया जो कि पास धरा था,
हीरे पन्ने जवाहरात का ठाडा कतई भरा था,
ले बेटी तेरा उम्र कुजारा कह दिया बोल खरा था,
फिर सिर कै ऊपर हाथ धरा था खुशी हुए थे अलख अवतारी।२।
हुआ अकीदा दिला कै में ना पावे फरक बात में
इतनी मेरी उम्र रहेगी पैसा रह हाथ में
देशों में सरनामी योगी तप रहा सकल देहात में
भुगये में भगवान बने सें कोप्या कसर नाथ में
लिया मतीरा फेर हाथ में खुशी मनावें भारी ।।३।।

जियानन्द गुरू की सेवा सच्चे दिल तै ठारे सै,
रूपनाथ को साथ राखते गुरुओं का मन भा रहा सं,
चरणों कै मैं चेला रहता समझा स्वर्ग द्वार सै,
जिसने करली टहला गुरु की उस चेले का तप न्यारा सं,
रामेश्वर छन्द गा रहा सै एक छोटा सा प्रचारी ।

॥ वार्ता ॥

सज्जनों रूपनाथ की विवाहित नारी श्री बाबा मस्तनाथ जी से मतीरा लेकर के आतमा प्रसन्न हो जाती है गुरुवों को आदेश प्रणाम करके अपने घर चली जाती है। घर आकर के मतीश फोड़ा तो सभी बीजों के मोती हो जाते हैं। वह नारी फूली नहीं समाई। सबके सामने बाबा की तारीफ करती है। सब आदमी सुण कर कहते हैं कि बाबा सामर्थवान हैं। जो चाहें सो कर सकते हैं। तीन लोक चौदह भुवन इन्हीं के वश में हैं। तमाम नगरी के मुखिया आदमी और राजा सूरत सिंह गुरु जी के पास में आए जबाव कवि का नीमड़ी बाग।

॥ दोहा ॥

सतगुरु की सेवा करो रखो चरण में ध्यान।
फेर पाछे पछताओगे रे मूर्ख अज्ञान ॥

भजन नं० ५७

बाग नीमड़ी घूणा सतगुरु मस्तनाथ ने लाया।
सूरत सिंह सत्तकार करण नै नगरी के संग आया ।टेक।

हीरे पन्ने जवाहरात के कंचन थाल भरे थे,
सतगुरु की सेवा से सारे मनचीते काज सरे थे,
तीन लोक के नाथ स्यात में जन के कष्ट हरे थे,
जती सती सब सेवा करते सेवा बिच खरे थे,
जब सतगुरु जी के चरण फिरे थे होग्या मन का चाया ।१।

कणी मणी सच्चे मोती तुम मुहर अशरफी लियो मुदामी,
फल और फूल भेंट धरी आगे सारे सेवक करें सलामी,
धूप दीप ने विदा मिटाई बाटण लागे आके स्हामी,
बालक बूढ़े सारे मिलके आगे सभी राम और रामी,
पूजा प्रगना लीयो स्वामी न्यू गुरुओं से राजा फरमाया ।२।

सतगुरु के द्रसन की खातर आगी नगरी सारी,
करें आरती भेंट चढ़ावे खुशी मनावे भारी,
लेकै ज्यां प्रसाद गुरु पै सदाव्रत हुया एकदम जारी,
सूरत सिंह राजा खुश होग्या सेवक आज्ञाकारी,
उस दिन की है सोभ्या न्यारी कीतना आनन्द छाया ।३।

शील वचन फैर दिये गुरु भोगो अैस अन्दनै,
हुई आतमा प्रसन्न सभ की काटो फांसी फंद नैं,
आपने-२ घरां गये खुश करके आनन्द कन्द नैं,
साज बाज से गावण लागे राग रागनी छन्द नैं,
रामेश्वर गुरु जियानन्द ने धोरे बैठ पठाया ।४।

॥ वार्ता ॥

श्री बाबा मस्तनाथ जी राजा सूरत सिंह को कहते हैं कि तुम साधू गऊ ब्राह्मण की सेवा करते रहना और धर्म के काम करो इसमें ही तुम्हारा कल्याण होगा यह उपदेश लेकर के राजा प्रजा आपने-२ घर चले जाते हैं श्री बाबा मस्तनाथ जी बोहर आ जाते हैं। दीन दुःखियों पर दया करना प्रमारथ का कार्य है। नाथ जी की शरण में जो भी आये बे सब प्रसन्न होकर चले गये। गुरु जी के चेलो तथा साधू भेस बाणा धारी जितने भी आते बे सब बाबा मस्तनाथ जी को ही सामरथवान बताते और कहते कि इनके सामने हमारी कोए सिद्धि नहीं चल सकती। सब सन्ता की प्रार्थना—

भजन नं० ५८

दीन दयाल दया के सागर दीन बन्धु सरदार तुही।
ब्रह्मा विष्णु शिवशंकर गुरु गोरख के अवतार तूही ।टेक।

दण्डी स्वामी ब्रहमचारी तुम हो पूरे सन्यासी
त्यागी ओर वैरागी योगी काटत यम की फांसी
धीसा पंथी रोढ़ा स्वामी हो निर्वाण उदासी,
सन्त कबीर रविदास की बनगी मीरा दासी,
लख चौरासी जिया जून से करने वाले प्यार तुही ॥१॥
काली चरण और तानसेन ने देख्या कलवा टोह कै न
तनुस्य देवता पशु और पक्षी तानसैन नै मोह कै न,
काम क्रोध मद लोभ मोह नै जड़ा मुल तै खो कै नै,

वाल्मीक और तुलसीदास गए बोल लड़ी हैं पो के नै,
निती बिच निपुण हो के नै चाणक्य जेसे सार तुही ॥२॥
नारद जी कूट के नीति ध्रुव भक्त में भर दी
सातित्री ने सत्यवान पै कलन तोड़ कै धर दी,
सती देहुती इसी हुई ना धूप गिनी ना सर दी
अनुसुइया ने दूध पिलाया करके नै हमदर्दी,
भक्त कबीरा की यज्ञ कर दी बणगे सरजनहार तुही। ॥३॥
रामेश्वर प्रणाम करें सब जितने नगर नरेश
सभी पन्थ के सन्त महन्त दुम्हें आकर करें आदेश
निराकार साकार तुम ही हो युग युग एको भेष
सात दीप नौ खण्ड भवन में थारी कथा महेश
गुरू जियानन्द उपदेश दे रहे वेदों का प्रचार तुही। ॥४॥

॥ दोहा ॥

सतगुरू की सेवा करो रखो चरण में ध्या।
फिर पीछे पछताओगे रे मूर्ख अज्ञान
सभी सन्त कहने लगे श्री मस्तनाथ गुरूदेव।
इस आलम अकलीम में कोए जाण सके ना भेव ॥

॥ वार्ता ॥

एक समय श्री बाबा मस्तनाथ जी धूने पर बैठे थे अचानक अपने चेलों से कहने लगे कि एक गऊ गार मे धंसी है कहो तो उसे निकाल दें फिर शिस्य कहने लगे गुरू जी गऊ कहाँ है

जल्दी ही कृपा करके उसे निकालो। तब गुरूजी यह दास्तान बताते हैं राजा मानसिंह का भीमसिंह राजा ने बड़ा भारी अपमान किया है। बिना ही चेतावनी दिए राजा मानसिंह पर चढ़ाई कर दी है। जालौर किला घेर लिया है उसने अपने सभी जोद्धा कोने कोने से बुलाकर इकट्ठा किए हैं और राजा मानसिंह इस समय बड़ा घबराया हुआ है उसके पास गोला बारूद भी नहीं है। गुरू गोरखनाथ को याद कर रहा है।

कभी कमर कस कर हथियार उठाता है लेकिन शक्ति बिना हीनता मानकर वापस तख्त पर बैठ जाता है।

भजन नं० ५९

टेक–जालौर किले पै भीमसिंह ने आके डेरा लाया।
गोला बारूद पास नहीं न्यू मानसिंह घबराया॥

भेज बुलाया इकट्ठे कर लिए सब योद्धा बलदाई,
हफते भीतर फतेह करो फिर ये आवाज लगाई,
सेना का सरदार यार एक बुद्धिवान था भाई,
मानसिंह की देख योग्यता ढील युद्ध में लाई,
उनकी होती कला सवाई जिनने सतगुरू ध्याया॥१॥

भीमसिंह ने जंग की खातिर रचा मोर्चा भारी,
सबके ओहदे तुरन्त बड़ाऊ दिया हुकम सरकारी,
मानसिंह ने पकड़ के लाओ कर दूं जान उधारी,
शत्रु है मेरा मनमाना मैं दिल भर करूं खवारी,
जुटा दियो तुम शक्ति सारी एकदम करो सफाया॥२॥

लगा तोप का पहरा चारों दरवाजों पे आड़ग्या,
मानसिंह भय मारपा हो कै किले के अन्दर बड़ग्या,
कमर कसो हथियार उठाए फिर तख्त पै पड़ग्या,
बिन सामे सूरा के करले सहम सांप सा लड़ग्या,
फौज देख के नक्शा झड़ग्या टुक भी ना कान हिलाया, ॥३॥

रामेश्वर रब की माया भक्ता कै निशाना लागे,
मानसिंह खामोश तख्त पर कुछ सोवै कुछ जागे,
चिन्ता कै में नींद ना आई कित लिकड़ कै भागे,
सिर के ऊपर दुश्मन चढ़ग्या भर भर गोले दागे,
गुरु मस्तनाथ ने चेला आगे ये मज्जून बताया ॥४॥

॥ काफिया ॥

हे मेरे गुरु अलख अवतारी थारे बिन होना मेरी सहाई ।
मेरी तुम आके धीर बंधाओ सिर पै गहरी आफत आई ।
मेरा पूर्ण विश्वास थारे दर्शन दियो मैंने रघुराई ॥

॥ वार्ता ॥

श्री बाबा मस्तनाथ जी ने अस्थल बोहर से एक शिष्य लिया और रमतेराम हुए । जाकर जालौर किले के बुर्ज पर विराजमान हो जाते हैं और आवाज लगाते हैं ।

॥ दोहा ॥

बुरज के ऊपर बैठ के देने लगे आवाज,
तीजे दिन पर मिल जावे तनै जोधपुर का राज ॥
यह सन्ता का आदेश जोधपुर का बने नरेश ॥

॥ वार्ता ॥

इस आवाज को सुनकर राजा मानसिंह तख्त पर से उठकर किले के अन्दर घूमके देखता है तो कोई मनुष्य दिखाई नहीं दिया फिर सिंहासन पर लेट जाता है फिर उसके नयन नींद से भर जाते हैं क्योंकि परेशानी और बैचेनी थी फिर वही आवाज आई। यह हैं "गुरु का आदेश जोधपुर का बने नरेश।"

॥ दोहा ॥

कतई रत्ती चिन्ता नहीं कहने लगे मस्तनाथ।
मस्तक तिलक जरूर हो तीजे दिन प्रभात ॥

भजन नं० ६०

टेक–किसका है यो बोल तोल कुछ पाटया ना तेरा।
साहमी होके दर्शन दे मैंने पट ज्यागा बेरा ॥

ब्रह्मा विष्णु शिव शंकर कृष्ण बलराम पधारे,
भूत प्रेत के दाना दुश्मन जिन्दा पीर सिधारे।
खेचर भूचर गंधर्प आ रहे जो नभ पै करते डेरा ॥१॥

कच्छा मच्छा जच्चा सै तेरा लग्या ना भेद कतई,
के मनुष्य देवता साच बतादे कामदेव पास रत्ती।
मेरी सुधर ज्या मूढ़मती मैं पा लिया काल बहतेरा ॥२॥

मानसिंह के वचन सुने थे खुशी हुए कृपाल गुरु,
सिंह समान थी गठन शरीर की नहीं वृद्ध ना बाल गुरु।
प्रकट हो तत्काल गुरु ने कर दिया दुर अंधेरा ॥३॥

रामेश्वर नादान मान यो ज्ञान सभा में गाया,
फिरे गुरु की मेहर देर ना होज्या भाग सवाया।
जियानन्द गुरु की माया धन विद्या गुण दे रहा ॥४॥

॥ वार्ता ॥

श्री बाबा मस्तनाथ जी राजा मानसिंह को सन्मुख होकर दर्शन देते हैं और जोधपुर का राज मिलने की सारी बात बताते हैं और एक कुआं किले के अन्दर ही बताते हैं। एक अन्न का भरा कोठा बताते हैं। इस भांति राजा मानसिंह को धैर्य देकर आते हैं।

भजन नं० ६१

टेक–प्रकट मूर्तिधार गुरु ने दर्श दिए आगे आकै।
मान भया कुरबान शान के सन्मुख ही दर्शन पाकै ॥

एकदम करदी मदद आण कै देख कसूते ढंग नै,
गुरु गोरखनाथ जी देख सके ना अपने चेले तंग नै,
आण अचानक दे लिया घेरा भीमसिंह छड़े नंग नै ॥
आखानन्दी दीखाई करकै एकदम दूर कुरंग नै,
गुरु मस्तनाथ जी मानसिंह को चाले भेद बताके ॥१॥

मानसिंह न्यू कहन लगे के नाम है सतगुरु साई,
मस्तनाथ है नाम भेद तू के बूझेगा भाई,
गुरु और चेला दोनों रमगे फिर ना दिए दिखाई,
शिव जी के मन्दिर में आकै वही आवाज लगाई।
देवनाथ से विधि बताई मन्दिर कै में जाकै ॥२॥

प्रातःकाल इस मन्दिर कै में मानसिंह आवेगा,
तीजे दिन पर जोपुर का राजपाट थ्यावेगा
चिंता की कोई बात नहीं तू राजतिलक पावेगा
मानसिंह से न्यू कहिए तू दिल से सेवा ठावेगा
भीमसिंह के सुख पावेगा मरज्या धोखा खाकै ।।३॥

रामेश्वर कर गुरू कौ सेवा ज्ञान का दीप जलेगा
शुभ कर्म में नीत रहे वो फूले और फलेगा
कर्म करा हुआ उस बंदे का हरदम साथ चलेगा
त्याग बिना ते राज नही न्यू काले हाथ मलेगा
मानसिंह तनै राज मिलेगा न्यू सिद्ध कहगे चित लाकै ॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनों राजा भीमसिंह के तीसरे दिन पेट में बहुत ज्यादा सख्त दर्द हो जाता है। दर्द पीड़ा के कारण से राजा भीमसिंह की मृत्यु हो जाती है। जोधपुर के दरबार में चारों तरफ सन्नाटा छा जाता हे तथा दरबार के सभी मंत्रीगण व विद्वान तथा राज दरबारी इस नाजुक समय विचार विमर्श करके, राज मानसिंह को इस नाजुक समय में राजा बनाना चाहते हैं

सो राजा मानसिंह के पास सब विद्वान मंत्री आदि राजा को बुलाने गए व अपना राजा बनाकर राजतिलक करने की बात कही। राजा मानसिंह हैरान व भयभीत होकर विचार करने लगे एक राजा दूसरे राजा के राज्य को हड़पने के लिए कई प्रकार के प्रपंच रचा करता है! शायद ये सभी राजदरबारीमंत्री आदि राजा भीमसिंह के भेजे हुए जासूस हों तथा मुझे छल कपट मे बुलाकर व अपने राज में ले जाकर तरह तरह की यातनाऊं देकर कही ज्यान से ही न मार डालें। ये विचार कर के उनके साथ जाने से इन्कार कर देता है। तब राज दरबार का एक वृद्ध मंत्री राजा मानसिंह के पास आया, ओर राजा मानसिंह को पूर्णरूप से विश्वास दिलाया तब तो राजा मानसिंह मंत्री जी के साथ अपने दल बल सहित जोधपुर राजदरमार में पधारे। सभी मंत्रीगणों ने तथा दरबार के सभी मुख्य मुख्य विद्वानों ने राजा मानसिंह को राजगद्दी पर तुरन्त बैठाकर राजतिलक कर देते है। धर्मात्मा और पराक्रमी तथा परोपकारी राजा था। अतः धूमधाम के साथ प्रजा ने जय के नारे लगाकर राजा के प्रति अपना आभार प्रकट किया। चारों ओर राजा मानसिंह की जय जयकार हो रही थी। राजा मानसिंह ने इस अवसर पर बहुत सा दान पुण्य किया। अनेक साधु सन्त महात्माओं गरीबों आदि की तरह तरह के दान दक्षिणा में गहनें आभूषण आदि देकर के उनको प्रसन्न करता है और योगी देवनाथ को अर्थ पालकों एक नीलम के दर्शनों की जोड़ी कुछ मोहर अशरफी इस अतसर पर मेंट करता है तथा आशिवाद लेता है। राजा मानसिंह गुरू गोरखनाथ जी के चेले थे।

राजस्थान हरियाने, पंजाब में आठ मान बांधी। जहाँ भी श्री नाथ जी की माया का पूरा प्रचार मिला। वहाँ ही एक एक पालकी एक अर्थ और नीलम के दर्शनों की जोड़ी और कुछ मोहर अशरफी भेट में दिये और भी कई स्थानों पर अस्थान मकान राजा मानसिंह ने बनवाए। उन जैसे धर्मात्मा और सत्यवादी बहुत कम मिलते हैं।

भजन नं० ६२

दोहा–मंगते, भिखारी आ रहे सबका राखा मान,
जैसा जिसका कर्म था वैसा दे दिया दान,
जं जं कार होण लगी गावें मगलाचार
सब नर नारीजगत के करें राजा का सत्कार।

सवैया–सबसे पहले मानसिंह ने देवनाथ के भेंट चढ़ाई
शाल, दुशाले, अरथपाल कीमोहर अशरफी रोकड़ पाई
मन्दिर का जो रहापुजारी गुरू गोरख की सुरति लाई
जोधपुर का राज मिलन की जिसने पहले बात बताई
रामेश्वर वलियाणे आले बिना भजन ना लगे दवाई॥

भजन नं० ६३

टेक–गाम मेठरी आदर के संग तांबा दफ्तर किया तकाजा,
श्री मस्तनाथ की गद्दी ऊपर आंके भेट चढ़ावें राजा।

शाल दुशाले सेज पालकी हाथी घोड़े ऊँट नालकी,
सारी दे दी चीज हालकी सब थारी माया मेरे ख्वाजा ।१।
सतगुरू थारी माया कोन्या भेद किसैनै पाया
चरण शरण जो थारे आया उनके सफल हुये सिद्ध काजा।२।
गुरू का सुमरण कर दिनरात जिनके पहुच गए ख्यालात
इसे सिद्ध हुए मस्तनाथ पहले ही ला लिया अन्दाज्या।३।
रटले मस्तनाथ गुरू साई होज्या पूरी मन की चाहाई
रामेश्वर हो कला सवाई आन्दी का सुण के बाजा

॥ वार्ता ॥

श्री नाथ जी जोग जमात के साथ रमते हुए किसी दिन खड़वाली गाम में आये। श्री रणपत जी श्री मानधाता जी दोनो प्रिय शिष्य उनके साथ थे।

भजन नं० ६४

टेक– गुरूमस्तनाथ की आसपास की सारी नगरी देखी भाली
चेलों के संग रम्मत करते पहुच गए सांधी खड़वाली ॥
अन्न पानी पूजा पत्री से दे दिया त्याग हरि ने,
जती और सती कहां बसते हैं देखा भाग हरि ने,
हफ्ता बिताया गाम के गोरै भजन मेंलाग हरि ने,
आसन बासन जमा के राख्या अपना राग हरि ने,
येसंसारी बाग हरि ने आप लगाया वण के माली । ॥१॥

धूने खातर लाकड़ गोसा और नहीं कुछ चाहता,
सतगुरूजी का हुकम मान के चाले दोनों भ्राता
दुनिया में ना कोई किसै का वचन शब्द का नाता
शब्द गुरूऔर सुरति चेला वो अपना फर्ज निभाता
गए गाम में रणपत धाता चाल पकड़रे गुरुओं वाली । ॥२॥

सभी गांव के मुखिया बन्दे एक जगह पाए थे,
श्री रणपतधाता पास बैठ के उनसे बतलाऐ थे,
यौ शहतीर ले जाओ बाबा न्यू सेवक फरमाए थे,
चलो तपस्वी ठाकै दोनों धूने पै आए थे
हम गाड़ी कै में लाए थे वे ठालेगे सहज सुखाली । ॥३॥

बहुत धने हैं बली तपस्वी धणा अचम्भा करगे,
दान किया शहतीर आपतैं फेर लोभ में फिरगे,
वापिस लेने चाल पड़े वो धर्म कर्म तैं गिरगे,
खेंच लिया उल्टा धूने से धड़ा पाप का भरगे,
रामेश्वर वो पार उतरगे गुरूओं की जिननैं ठोकर खाली । ।४।

॥ वार्ता ॥

सज्जनों खिलवाड़ी गांव के कुछ आदमियों ने धूने में से शहतीर वापिस लाने की तजवीज बनाकर शहतीर को बिना श्री नाथ जी के पूछे निकाल लिया और लगे उल्ट पुल्ट बोलने। हमने तो ये शहतीर चौपाल में चढ़ाना है। श्री मस्तनाथ जी कहते हैं की सेवकों चौपाल के लिए शहतीर दूसरा ले आओ इससे चौपाल नहीं बनेगी। दान देकर वापिस कभी भी नहीं लेना चाहिए परन्तु खिलवाड़ी गांव के कुछ आदमी जो धूने से

शहतीर उठाने आए थे श्री मस्तनाथ जी की बात को नहीं मानते तथा शहतीर वापिस अपने गांव में ले जाते हैं और महात्माओं को मन्दा माड़ा भी बोलकर जाते हैं तब गांव के जत्ती सत्ती बन्दे इस विषय (झमेले) में शामिल ही नहीं थे, वे सेवक भेंट पूजा लेकर श्री नाथ के धूने ऊपर आए श्री नाथ जी कहते हैं कि अब तुम्हारी पूजा हम स्वीकार नहीं करते तुम्हारी पूजा फिर कभी लेंगे तब गुरू श्री मस्तनाथ जी सेवकों को बताते हैं ।

भजन नं० ६५

टेक–जंगी के तंगी कर दूं धोघड़ में लोगड़ भर दूंगा,
जै या वणगी परस थारी मैं दरज हाजिरी कर दूंगा ॥
जो मेरा चेला लायक हो इस नगरी में आवै ना,
जै मजबूरी में आना होत्या तै अन्न पानी खावै ना,
पूजा पतरी चाहवै ना मैं सारीये मेट कसर दूंगा । ॥१॥
जब भी परस बनाओगे थारे होज्या हादसा
खून खराबा हो ज्यागा थारी होज्या बुरी दशा
बन शेमयाम का बादशाह मैं उस ओहदे में पां धर दूंगा ॥२॥
जाओ धरा जत्ती सत्ती अब नहीं रहम लाऊं मैं
या भी मेहर थारे ऊपर ना तै और वचन ठाऊं मैं
भूतनी दरवाजे आऊं मैं शील वचन तुम्हें फिर दूंगा ॥३॥
रामेश्वर ये वचन दिये थे फिर गुरू मुड़ग्या पुट्ठा,
मन्दे भाड़े काँचे कुराड्डे सब देख्या झूठा ठूठा
कालर कै में गाड़ कैं खूंटा चौगरदे तैं दर दूंगा ॥४॥

॥ वार्ता ॥

श्री बाबा मस्तनाथ जी अस्थल बोहर मठ में आ जाते हैं। और अपने शिस्यों श्री रणपत जी तथा श्री मानधाता जी से खडी तपस्या करने का आदेश देते हैं। उसी दिन से वे गुरु की आज्ञानुसार खड़ी तपस्या करने लग जाते हैं। श्री नागे पीरों ने ३६ वर्ष १९ दिन (छत्तीस साल उन्नीस दिन) खड़ी तपस्या करी। श्री नागे पीर गुरूवचन पर चले। श्री गुरु महाराज ने प्रसन्न होकर श्री नागे पीरों को सरभंग अर्थात मनुष्य जाति को (कोई ऊँवा नहीं) सबको समान दृष्टि से देखें। अपने मन में आत्मा में बिना ऊँच नीच का भेद किए सभी को एक समान रुप से समझे फिर श्री नागे पीरों ने श्री रणपत जो श्री मान-धाता जी ने कर्मशील तपस्या अर्थात जीवन व्यतीत करते हुए अस्थल बोहर मठ में ही समाधिस्थ हुए। इन्होने जीवित अवस्था में ही समाधि ली थी। श्री नागे पीरो के प्रिय शिष्य श्री मजलिश नाथ ने उनकी समाधि पर उसी दिन से देशी घी की ज्योति जो कि अखण्ड बारहों मास चौबिस घंटे दिन और रात समान रुप से जलती रहती है शुरू की। तथा एक आलीशान समाधि स्थल पर पवित्र मन्दिर का अपने गुरूओं की स्मृति में मन्दिर बनवाया। जिसे कि दूर दूर देश विदेशों के तीर्थ यात्री इन महान श्री नागे पीरो की समाधि पर प्रति वर्ष मेले में अपने मस्तक नवाने आते हैं।

भजन नं० ६६

टेक–भरत पुर रियास के धोरै नगर पिगोरा साथ,
वहां के बासी तोता नाथ ॥

अंश वंश राजा का कहिए, बड़े बड़े अस्थान मकान,
बैठ तिमंजले माला फेरै, ईश्वर का लगावै ध्यान
बदल गया सब ध्यान, ज्ञान ना करें फालतू बात ॥१॥
परम पिता का नाम रटै, नित चकमक हो कै गका जो लाग,
सुस्ती आलस्य दूर भगा दिए नींद नशे तैं गया जो लाग,
हुआ ज्ञान वैराग्य त्याग दिए, सारे सांसारिक उत्पात, ॥२॥
मात पिता भाई बंधू सुत दारा में मोह ना,
भव सागर से पार समझ ले भजन बिन कोए हो ना,
घर में चित्त फिर लाग्या कोन्या लगन लगी दिन रात । ॥३॥
श्री मस्तनाथ का नाम सुना था । उस दिन तैं सुरति लाई,
हरियाने में 'बोहर बंगाला' वहां मिले सतगुरु साई,
रामेश्वरनाथ केरे कविताई जैसा सुना हालात । ॥४॥

काफिया

श्री गुरू मस्तनाथ के आगे जिसने आकै शीश झुकाया
सिर पै हाथ धरा सतगुरू ने उसका स्थूल बनाया,
सेवा टहल बंदगी करता शुभ कर्मों से ये फव पाया ॥

॥ वार्ता ॥

श्री गुरू महाराज वाणा देने से इंकार करते हैं तथा कहते हैं कि तुम अमीरी मत छोड़ो और अपने घर जाओ तब श्री तोतानाथ जी नही मानते हैं। तब श्री मस्तनाथ जी महाराज ने मजबूर होकर उसको वाणा दिया, तथा अपना प्रमुख चेला समझा और अस्थल बोहर मठ का तमाम कार्यभार उस पर छोड़ दिया। तब से तमाम जिम्मेवारी तोतानाथ की हो जाती है। श्री तोतानाथ जी ने राज दरबार का नक्शा बनाया। तब श्री बाबा मस्तनाथ जी मसाराज ने सिद्ध श्री चौरंगी नाथ जी महाराज को अखण्ड परम ज्योति के सामने आसन लगाया तथा अपाणे प्रमुख शिष्य श्री तोता नाथ जी से कहने लगे कि मेरा समाधि मन्दिर इस स्थान पर बनाना फिर श्री गुरू जी ने चिमटा लेकर चिमटे शे निशान लगाकर समाधि का नक्शा बनाकर समझाया। श्री तोता नाथ जी उसी नक्शे से समाधि स्थल की नीव खोदने लगे, तो नीव पहले ही की भरी हुई मिली वहां पर श्री तोता नाथ जी ने समाधि स्थल एवं एक भव्य मन्दिर का का निर्माण करवाया। तब श्री तोता नाथ जी रियासत बीकानेर चले जाते हैं। वहां पर श्री सूरतसिंह राजा वर्षा न होने के कारण राजा तथा प्रजा अत्यन्त दुखी थे। श्री तोतानाथ जी माला लेकर भजन में बैठ जाते हैं और कहते हैं कि अभी वर्षा आएगी। भक्ति दरसने लगी और वर्षा होने फिर थोड़ी देर में मूसलाधार पानी पड़ने लगा तब श्री राजा सूरत सिंह ने प्रसन्न होकरके थेहड़ी गांव श्री तोता नाथ जी महाराज को भेट में दिया। यह भेट पूजा लेकर के अस्थल

बोहर मठ में पधारे तब श्री गुरू जी के पास उन्होने श्री सिद्ध चौरंगी नाथ महाराज पाए और उन्होने देखा कि दोनो महात्माओं में वार्तालाप हो रहा है तब श्री तोता नाथ जी भी उनकी बातचीत ध्यान से सुनने लगे। उन्होने रम्मत में चलने की कही अर्थात उन्होने (चौरंगी नाथ ने) कहा चलो गुरूजी रम्मत में फिर गुरूजो उनपे करार करते हैं फाल्गुन सुदी नौमी को मैं तुम्हारे पास अवश्य आऊंगा।

जबाब श्री चोरंगी नाथ जी महाराज का।

भजन नं० ६७

टेक–श्री मस्तनाथ जी कै आकै सिद्ध चौरंगी न्यू कहन लगे
प्रस्थान अब करो गुरू क्यों एक जगह पर रहण लगे॥
भक्तों के वर पूरे कर दिए खुशी रहो राजा रानी,
धर्म हेत अवतार लिया है हो हो कै दुनिया जानी,
सर्वसीद्ध कर निर्मल पानीगंगधार ज्यूं बहन लगे ॥१॥
चौरंगी की वाणी सुनकै ये प्रवचन उचारे
फाल्गुन सदी और नौमी कै दिन गुप्त रूप हो म्हारे,
जितने सुनै थे चेले सारे बुर्ज किले ज्यो ढहण लगे।॥२॥
सतगुरू के उत्तराधिकारी दरगाह में श्री तोता नाथ,
सेवा का फल मेवा हो सै सुकर मनाओ दिन और रात,
गुप्त होन की बात सुनी फिर सबदगुरू के लहन लगे।॥३॥
तोता न थ को पास बुलाकै उसके सिर पै धर दिया हाथ,
सेवा भजन बन्दगी करिये न्यू कहन लगे श्री मस्तनाथ
कह रामेवर नाथ बात वो गुरू जुदाई सहन लगे।॥४॥

॥ वार्ता ॥

सज्जनो गांव विधराण के सेवक भक्त गुरू मस्तनाथ जी को अपने गांव ले जाने के लिए फरियाद कर रहे थे उन सेवको का अति भाव देखकर श्री बाबा मस्त नाथ जी गांव विधरायन में चले जाते हें। वहां कुछ दिन आराम किया सेवा टहल परम रस लिया। अपने मुख से वचन का फिर ध्यान किया कि हाँ गुप्त भी होना है समझ बूझकर अपने सब शिष्यों को अपने पास में बुलाया तथा सबको उचित रूप से समझाया। तुम सब राजी रहो।

॥ दोहा ॥

तुम राजी सारे रहो कहे मस्त नाथ भये राम।
वचन सिद्ध थारा रहैं नित करियो शुभ काम॥

चोले को मैं छोड़ता होना अर्न्तधान।
चौरंगी के सामने होली मेरी जुबान॥

नौवीं फागणतिथि सुदी वार बृहस्पत वार।
१८६४ संमत सही कहगे गुरु विचार॥

प्राणायाम बल योगसे शरीर दिया त्याग।
सारै बेरा पाटग्या सब सेवक आए भाग॥

॥ वार्ता ॥

गांव विधरायन के सेवक सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी महाराजके मृत शरीर को उठाने लगे। श्री मस्तनाथ जी

स्थूल में बहुत भारी थे। उन सेवकों से श्री नाथजी की मृत दे ह उठाए सभी न उठी तब तो बोहर गांव के सेवक श्री बाबा मस्तनाथ जी के मिरतक सरीर को उठाकर विधराण से बोहर मठ में लाए।

भजन नं० ६८

टेक–सब सेवक दर्शन कर लेगे चोला खूब सजाया।
प्राणहीनता देख सती ने ये संकेत उठाया॥

यो ना गोरख नाथ कती विधरायन मरा जो जाके,
ये संशय उपजी मेरे दिल में रहे जो धोखा खाके,
इतनी सुणकै मस्ननाथ ने देखा पलक उठाके,
गोरखनाथ सदा अमर रहे न्यू कह दिया बोल सुणाके,
राजा बाबू हाकिम आके सबन सिस झुकाया।॥१॥

सत्ती बुलाए एक वे बोले फेर मीचगे आंख कती,
ये आवाज आपनै कानो से सभी सुनै थे जत्ती सत्ती,
मस्तनाथ गुरू मरे नहीं अजर अमर हैं छत्रपत्ति,
दी समाधि फेर गुरू नै जिनकी हरदम तेज रत्ती,
श्री मस्तनाथ जी जन्म जत्ती इसे ना टोह्यं तै पाए॥२॥

गुरुआं के पश्चात मठ में एकदम हुई उदासी,
वकशीनाथ बड़े गुरू भाई दे रहे शिक्षा खासी
बालकनाथ बलम्भे आला जिनकी एकै राशि

श्री मिरचनाथ भालोट आले ने ज्योत आण कै चासी
श्री तोतानाथ भरतपुर बासी करगे कर्म सवाए ।।३।।
गुरू मस्तनाथ के चेले सारे सांझा सीर बमा कै
दरगाह कै में भजन करें ऊँची तकदी बना कै
सतगुरू जी का मेला कर दिया हलवा खीर बना कै
याहा समाधी दियो मने कह गये न्यु लीर बणकै,
रामेश्वर फेर पीर बना कै श्री तोतानाथ बठाया ।

।। वार्ता ।।

सज्जनों श्री गुरू मस्तनाथ जी ने श्री तोतानाथ जी कौ अपने पास बुलाकर समाधि का मुख्य दरवाजा पूर्व दिशा की तरफ खुलने ली बात कही थी । श्री गुरू मस्तनाथ जी महाराज की इच्छानूसार श्री तोतानाथ जी ने वहीं पर समाधि स्थल बनवाकर समाधि का मुख्य दरवाजा पूर्व दिशा की तरफ ही बनवाया । उसी दिन से समाधि पर दिन रात और अखण्ड ज्योति परमपिता श्री सद्गुरू महाराज सिद्ध शिरोमणि शिव स्वरूप गोरक्षावतार श्री बाबा मस्तनाथ जी महाराज की स्मृति में जल रही है । ठीक समाधि स्थल पर ही एक भव्य मन्दिर का निर्माण हो चुका था । बन महान गुरुओं की समाधि पर हर साल फाल्गून की सातम आठम नौमी को बड़ा भारी मेला लगता है। देश विदेश के नर नारी भक्तगण बच्चे वृद्ध, श्रद्धालु, बड़े तपस्वी साधु सन्त महात्मा सन्यसी योगी हाकिम राजा बड़े

चाव से उमंग में भरकर समाधि पर शीश झुकाते हैं तथा मन वांछित फल पाते हैं।

॥ दोहा ॥

गुरू मस्तनाथ प्रताप से हुआ बोहर का धाम,
चार खूंट में साख है सब देशों में सरनाम।

भजन नं० ६६

टेक–१८६४ सम्वत में सतगुरू जी ने लई समाधि।
पैंसठ में मेला भरवाया माया बहुत पुण्य में लादी

आपने गुरू भाइयो ने कहकै मेले का समान मंगाया,
जगह –२ पर चिट्ठी भेजी जत्ती सत्ती को पास बुलाया
बड़ा घी का होद भराया बूरा चावल लो प्रसादी।।१।
एक लाख मूर्ति का भोजन तीनो दिन भोजन करवाया,
श्री तोतानाथ ने खुश होके नै गुरू पीछे पैसा लाया,
सालाना मेला ठहराया सब दुनिया में खबर पहुचा दी।२।
श्री मेघनाथ है चेला जिनका सब चेलां तै प्यारा,
मन्दिर कुएं अधिक बनवाए तप और बल में भारया
उनको काम सौंप दिया सारा तीन वर्ष जिनने भोगी गाद्दी।३।
मेघनाथ गुरू तोतानाथ का लगे हाथो मेला करगे,
धन माया के नगद खजाने दरगाह कैं में भरगे,
रामेश्वर वै पार उतरगे गमी रही ना जिनकै सादी।४।

।। वार्ता ।।

अब श्री मेघनाथ जी अपने गुरूश्री तोतानाथ जी का लगे हाथों मेला करके गद्दी पर विराजमान हुए श्री मेघनाथ जी हाथी, घोड़े ऊँट गाय इत्यादि बहुत ज्यादा रखते थे और रजवाड़े में जमात घुमाते दे जो भी दान दक्षिणा उस धन राशि से दीन दुखियो को बांटते थे और सदाव्रत बांटते थे श्री मेघनाथ जी ३० वर्ष गद्दी पर रहे। उनके बाद उनके प्रमुख शिष्य श्री मोहर नाथ जी गद्दी नशीन हुए।

श्री सिद्ध मोहर नाथ जी प्रारब्ध के बहुत भारी महात्मा थे। उनका जन्म बजाने ग्राम में हुआ था।

भजन नं० ७०

टेक–सम्वत २२ चैत का महीना तोष चान्दनी का सनमान,
श्री मोहर नाथ को गद्दी देकर सतगुरू हो गए अर्न्तध्यान ।।

जो भी आया शरण तुम्हारी उस पर दीन दयाल रहे
कभी चालते अर्थ पालकी कभी मौज में पैदल चाल रहे
जहां भी जोग जमात गई वहां संगगुरू बां के लाल रहे
कुएं घाठ मन्दिर बनवाए धर्म कर्म पर ख्याल रहे,
न्वो महीने बारहा साल रहे फिर गद्दी ऊपर चतुर सुजान।१।

मोहर नाथ साधु सिद्ध होग्ये पूरे करामात के
दिल से कती दीवार अटा दीना झगड़े जात पात के

संमत ३५ झिलमिल तारा होग्ये घड़ी स्यात के,
जो भी मुख से बात कही वै पूरे रहे बात के,
मोहर नाथ के बाद पीर जी चेतनाथ हुए पुरुष महान । ।२।

माल अफसर के पद के ऊपर चले था हुकम सरकारी,
दे असतिया एकदम बणगे गुरु अग्याकारी,
गद्दी नशीन हुए चेतनाथ जी थी पूनम बधवारी,
गाम गाम नोबित बाजी खुशी मनाई भारी
सभ परजा नै भेंट गुजारी अन्न वस्त्र का कर दिया दान ।३।

श्री चेतनाथ ने गुरू मोहरना का मेला खूब रचाया,
घी वूरा की दई रसोई मुंह मांगा सोऐ पाया,
देस का मेला करपा भाव से फेरी अद्भुत माया,
उनके शिष्य पूर्णनाथ हुए जो गुरूवों कै मन भाया,
रामेश्व जीसा पाठ पढ़ायावैसा ही कर दिया बखान। ।४।

।। वार्ता ।।

श्री चेतनाथ जी सम्वत १६३३ में अस्थल बोहर मठ के महन्त वणे पोह सुदी पूर्ण बासी श्री चेतनाथ जी अति पराक्रमी सिद्ध योगी थे। ज्योति स्वरूप नारायण ने अच्छी खासी परीक्षा ली। उनके समय में कई साल तक वर्षा नही हुई प्रजा तंग हुई।

भजन नं० ७१

टेक–श्री चेतनाथ के समय हरी ने लई परीक्षा पूरी ।
अन्न मुसकल तैं मिलण लग्या होग्या केसर कस्तूरी ॥

भुरठ भाखड़ी पीस मिलावे माणस सभी नाज में
टूक बाट के खाण लगे नहीं बाजै तान आज में,
कड़के नोली बांध के मरगे भुखे शर्म लिहाज में
कती गाम में जी ना लागे घर के काम काज में
हरियाणा पंजाब राज में हुई धणी मजबूरी ॥१॥
राजस्तान बिहार के बन्दे फिरते भागे- भागे
बहोत धणे तैं भूखे मरते बाड पीस के खागे
भूखे मरते रूखा के पत्ते भी तारण लागे
अन मिलता न पेट भरण नै बखत मरण के आगे
बहात धणे तैं कुटुम ने त्यागे मन्जल चले गये दूरी ।२।
श्री चेतनाथ ने मठ के अन्दर सदा वरत राख्या जारी
दोनुं बखता बणे खिचड़ी भरकै डेग बड़ा भारी
स्याम सुवेरे वरतावे थे सुकर भनावे नर नारी,
बाकी दिन में बांटे भूगगड़ै ऐसे हुए दयाधारी
अन खाकै ने खलकत सारी पकड़ अकल सहुरी । ।३।
रामेश्वर रब की माया बे बखत ने पूरा करगे,
संमत १९६२ में खुद परलोक डिगरग्ये,
बन्जड़ धरती तोड़ी जिसने खेत फसल के भरगे,
श्री पूरणनाथ जी चेला था हाथ सिस पर धरगे,
बैतरणी से पार उतरगे ना चाले वाट अधुरी ॥४॥

॥ वार्ता ॥

गद्दी नसीन पूर्णनाथ श्री चेतनाथ के बाद में ।

भजन नं० ७२

टेक–पूर्णनाथ तकत पर बैठे उसी साल का है प्रमाण,
संमत १९६३ था चेत कृष्णा पंचम जाण ॥

सं० १९६३ था उस दिन तारीख देखी १५ पाई,
पूर्णनाथ तकत पर बैठे चोगरदे ने खुशिया छाई,
सत्तगुरू जी का मेला कर दिया, घी बूरा की नहर चलाई,
३६ सौ बाजे बाजे दिए धारमिक नौबत बजवाई,
हाथी पर जमात घुमाई प्रमपरा की राखी बाण ॥१॥

फिरते-२ पिरजीयां का उदेपुर में लाग्या दौर,
धर्मी दाता कहां बसे सैं जातगां करणे के तोर,
श्रद्धा भगती माहाराणा की हमने देखी करकै गोर,
माहाराणा ने पता लगा जीब सारे काम छोड़ दिये और,
गिन्नी मोहर भेंट में देके गुरू लिये फेर मन में ठाण ॥२॥

दूर-दूर तक जमात घुमाई सारे वार पार में,
उत्तर में दो गाम खरीदे कीमत चार झार में,
उनकी आमदनी सब लागे धर्म के कारोबार में,
सबसे मिलकै चाले जीन्दगी करगे पास प्यार में,
योग आश्रम हरीद्वार में मन्दर का करगे निर्माण । ।३।
शुभ कर्मा का फल मिलता देखो खास अगत में
पणमेसवर की भगती करले कोन्या कमी सगत में

सभी भावना पूरी होंगी जै श्रद्धा हो खास भगत में
१० दुतिया का जाल पड़े जब कोन्या आवे ठगत मे
रामेश्वरनाथ अमर जगत मे कुछ आगे को करो पिछाण ।४।

।। वार्ता ।।

श्री पूर्णनाथ अस्थल बोहर के महन्त होते हुए भी स्वामी जी ने अतीत बिरती रखी उन्होने हाथी घोड़े और जमात साथ लेकर के सभ रजवाणों में जमात घुमाई । धर्म का प्रचार किया धर्म संस्थाएं खोली एक समय उदयपुर गये ।

भजन नं० ७३

टेक–योगी पूर्णनाथ पहोचगे उदेपुर में खास
राजा महाराणा के पास ।।

महाराणा फेर प्रसन होकै सेवा कै मां आगे आवें,
ताम झाम गाजे बाजे तें महलाकैमां लेके जावैं
धूल चरण की माथे लावै वणया चरण का दास ।१।

गुरू मस्तनाथ की गद्दी ऊपर जिन्ह की लिहाज बड़ी भारी
जिन्ह का तप बल सारे जग में आज तलक भी है जारी
पूर्णनाथ प्रम हितकारी पूरे ही सुखरास । ।२।

५००० मोहर सोने की जिसने भेंट चढ़ाई थी,
महाराणा ने कमी ना छोड़ी दिल से सेवा ठाई थी
ईज्जत करी सवाई थी हुई दिल की पूरी आस ।३।

महाराणा का खानदान जो सालाना मेले पर आवें
जितनी उनकी श्रद्धा भगती सच्चे दिल से सेवा ठावें
रामेश्वर नाथ थारे गुण गावे ६ रूत १२ मास ॥ ।४।

॥ वार्ता ॥

पीर पूर्णनाथ जी ने संस्कृत विद्यालय कई स्थानो पर खुलवाये। हरिद्वार में योगाश्रम बनवाया। हजारों लड़के वैज्ञानिक बणे और भारत को लाभ हुआ श्री पूर्णनाथ जी साधु होणे से पहले बैरिस्टर के पद पर थै। ३० वर्ष की आयु मे योगी सम्प्रदाय में शामिल हुए स्वामी जी इस रोहतक जिले मे सबसे पहले बाईसकिल लाये थे। दिल्ली से १० रुपये कीमत में पीर जी उस पर बैठकर उसे चलाते और मठ से रोहतक जाया करते थे। उसे कल का घोड़ा कहते थे उस कल के घोड़े को देखणे गावों के आदमी आया करते थे। साईकिल को अजनबी चीज समझकर वे अचम्भा किया करते थे स्वामी जी के १४०० शिस्य थे वे शरीर के बड़े भारी बलवान थे एक सेर घी एक सांस में पी जाया करते थे रोजाना की खुराक थी।

हमने बुजुर्गो से सुना है कि बैलगाड़ी लाते समय जो गाम की तरफ दरवाजा है उसके बड़े भारी किबाड़ हैं किबाड़ का चुला उतर गया पांच सात वकती पंचे परन्तु किबाड़ का चुला नहीं चढ़ा। पीर जी का ध्यान हो गया आकर के एक झाड़ू वाले ने कहण लगा पकड़िये गुरू ने नीचे से डोगा लगा करके किबाड़ चढ़ा दिया। किसी रोज मठ मे अंग्रेज लोग आये और

कहणे लगे कि तुम कुछ करामात भी रखते हो या खाली मठाधीश बणे बैठे हो फिर पीर पूर्णनाथ जी यह सुनकर कहते हैं कि लाओ एक चांदी का रुपया दो तुम्हें करामात दिखाएंगे पीर जी मे सिद्धी और ताकत दोनों ही बाते ग्यान का काफी अनुभव था।

भजन नं० ७४

टेक–शब्द गुरू सुरती चेला, हमारा ऐसा नाता जोड़ दिया
दो अंगलिया पर धरकै ने गुन्ठे तै रुपया मोड़ दिया

फेर उनसे न्यू कहण लगे ले इसने सिद्धा करियो
जै यह सीधा नहीं हुया तै म्हारा अकीदा करीयो
न्यू अपणे घर मे जिद्दा करियो कहयो १०० का तोड़ दिया।१।

तुमसे सीधा नहीं होग्या मनें रुपया ठेठ दियो
फेर गुरु ने चोहटी से धरके नम्बर तक भी मेट दिये
फेर काढ वे आउगेट दिये, कर विद्या ब्रिटिश को होड़ दिया।२।

अब ना रहणा राज तुम्हारा समझो बखत आलीया
स्वामी जी ने आपने मन में पक्का जोड़ ला लीया
अब थारा हिन्द से ओड़ आ लिया भ्रम का भांडा फोड़ दिया३

एकदम गोरे होण लागगे भारत से छिन्न भिन,
भारत माँ के लाल हाल मे सभ होगे दुश्मन
रामेश्वर उस दिन गुरुवां ने सिद्धी का कर तोड़ दिया।४।

।। वार्ता ।।

पीर पूर्णनाथ जी धर्मयात्रा करते हुए अलवर पहुँचे ।उन दिनों वहां पर राजा जयसिंह राज करते थे। प्रगतिशील विचारों के व्यक्ति थे तथा वे संस्कृत विद्या के बड़े प्रेमी थे। अलवर नरेश श्री जयसिंह ने योगी श्री पूर्णनाथ जी का अच्छा सत्कार किया और योगाश्रम हरिद्वार के लिए और संस्कृत विद्यालय के लिए अच्छी धन राशि भेंठ मे दी इसी तरह अन्य रजवाड़ों मे आप जहां-जहां गये वहां-वहां आपका अच्छा स्वागत हुआ तथा आपके मान सम्मान मे आपको भेट पूजा दी गई इससे अस्थल बोहर मठ मे बहुत जागृति आई व तरक्की हुई।

भजन नं० ७५

टेक–पीर जीयां ने चक खरीदा गंगा नगर मे जक
बैठक नोहरे अधिक वणाये गुरूवां ने चित लाके
योगी सम्प्रदाय की असली जाणकारी दिलवाणे मे
पुस्तक एक छपाई थी बढ़िया पढ़ने और पढ़ाणे में,
हिन्द केसरी रहे आप इस देश की स्यान बढ़ाणे मे
इसे इसे इन्सान जगत मे गाये जा से गाणें में
स्वामी जी भगमावाणे में दया रूप दर्शन पाकै ।१।

जीस दिन पैर धरा होदे में फेर रहे वसूल खरे पैं
राज ताकत पर बंठ गये माया के थाल भरे पैं
आत्मा तन को मिलै शान्ति दीनन के कष्ट हरे पैं
स्वामी खुश रहन लगे मन चिते काज सरे पैं
रोहतक के खुद बीच दरे पैं बेठठे जगह बणा कै ।२।

पूर्णनाथ प्रण के पूरे होगे योगाचारी,
परम हंस की पदवी पाई आप वणे तपधारी,
सन् १९३९ में माया तजदी सारी
उसी दिन से श्रयोनाथ जी बणगे कारो बारी
सतगुरू देह परलोक सिधारी ४० कै मे आकै ।३।

उस भगवान निरंज की जिसनै चरचा दिनरात सुणी,
आद में तन से त्यारी हमने देवता की कई जात सुणि
कलियुग के मां सिद्ध होगे ला सन्ता में करामातसुणी,
जो कोए आया शरणतुम्हारी उन पर पूरी राहत सुणी
रामेश्वर जी की बात सुणी उसी कही सभा मे गाकै ।४।

॥ वार्ता ॥

पीर पूर्णनाथ जी के बाद उनके शिष्य श्री योगी श्रेयो थना जी अस्थल बोहर मठ के महन्त बने ॥

भजन नं० ७६

टेक–इस रजधानी दिल्ली में एक नगर ननेरा गाम सही,
घरा जाट कै जन्म लिया सतगुरू का खास मुकाम सही।

सामान्य था किसान कोये घणा ज्यादा साहुकार नहीं,
माता पिता और घर कुणवे तै कती हुई तकरार नही,
१५ वर्ष की आयु में आच्छा लाग्या संसार नहीं,
अस्थल बोहर मठ में आगे कती लगाई वार नहीं
ओर किसेतै प्यार नहीं वो भजन करै सुबये स्याम सही ।१।

देह के मां गुण पैदा करके कर दुनियां का भला दिया
मठ कै मां जागृती ल्यादी काम चोगणा चला दिया
करी पढ़ाई डटकै तूमने दिया ग्यान का जला दिया
जितना धन था राजकोष उसमे चोगुणा मिला दिया
चक चन्दन सा खिला दिया ये उज्जवल कर दिया धाम सही।२

थारी आत्मा जाणैं जो विद्या पढ़णे में कस्ट किये
चेतन बुद्धि सर्वज्ञानी थे करे काम फस्ट किये
जिन्ह की नीत दूसरी देखी वे दुनिया से नस्ट किये
धीरज धर्म धारणा करकै दाग दिलो के स्पष्ट किये
सब्र सासत्र कंठस्थ किये और पूरण पाये राम सही ।३।
श्रयोनाथ महातमा जैसे कोए कोए जन्मती माता
डाक्टरी में सारे हिन्द में पहला नं० आता

राम कृष्ण भगवान सम झेले पुर्ण योग विधाता
जितना तेज सुभा था उतना दया धर्म का खाता
रामेश्वर कुणदाता हो सै करले दुवा सलाम सही ।४।

॥ वार्ता ॥

योगी श्रयोनाथ जी संस्कृत पढ़णे के लिये जयपुर गये। कालेज में द्यिा पढ़ते-२ आपने शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। आयुर्वेद के माध्य से जनता का कस्ट निवारण करते हुए आप कठियावाड़ गुजरात में पहुच गये आपकी प्रर्शसा होणे लगी। कठियावाड़ के नहाराज मुलराज काफौ दिन से बीमार पड़े थे उन्होने डाक्टरौं के पास काफी इलाज करवाया लेकिन स्वास्थ ठीक नहीं हुआ शहर में कहीं चलती बात में योगी श्रयोनाथ की तारीफ सुणी उसने श्रीनाथ जी को अपने पास बुलवाया और पूरे दिल से सेवा की अपने पास में रखा महन्त श्रयोनाथ ने उसा इलाज शुरू किया महन्त जी के हाथ से मूलराज महाराज का स्वास्थ बिल्कुल ठीक हो जाता है महाराज मूलराज ने विदाई के समय आपको काफी धनराशि भेंट में दी उस धनराशि से आपने हैदराबाद में एक चिकित्सालय की स्थापना करी। वहां भो आपके ऊपर कंचन बर्षने लगा काफी दूर के रोगियों की भीड़ रहणे लगी आपने जिसको यह कह दिया यह कहीं ठीक नहीं होगा औ कही ठीक नहीं हुया जिसका इलाज किया वो राजीकरके भेज्या।

भजन नं० ७७

टेक–हैदराबाद में एक चिकित्सालय खोल्या लाके ध्यान तुम्हें ।
समय बतावै बखत जाणता जो कुछ पाया मान तुम्हें ।।

विद्या पढ़ी वैदक सीखी तप करकै न राज किये,
फेर गुरूवा ने चिट्ठी भेजी दिल कै मां अन्दाज किये
लगातार चिट्ठी भेजी फेर थी दिल में लीहाज किये
थारे पूर्वले शुभकर्मों ने सिधां के सरताज किये
बिगड़े हुये इलाज किये कर दिए मुस्कल आसान तुम्हें ।१।

जिन पर होज्या मेहर गुरू की सभ मुस्कल आसानी
भला जगत का करने वाले ना भोगें परेशानी,
दिई डिबटी मठ में आकै खूब करी कुरबानी
कायर पसु और चितर आदमी कितं रहे ना छानी
सतगुरू जी की वाणी मानी सासत्रो का ज्ञान तुम्हें ।२।

सपूत बिना कोए समझ सके ना गुरू पीरा की रमज्या
दिल कै मां बिसवास खास बिन ईलमदार भी दमज्या'
कुछ चेले इसे हुया करे आपनी मन मरजी से रमज्यां
मठ अस्थल का काम सै भारा बिम ग्यान के थमज्या
१४०० के मां समज्या एक महान तुम्हें ।३।

कह रामेंश्वर १९३९ के मां मालीक बणे लिखत पर
सभ चेला में बाध योगता देखी गई बखत पर
पचपन कै मां करी तपस्या कानून खास सकत पर,
परमारथ की राह देखकर कर दिया काम अगत पर
हुई गुरू की मेहर तकत पर कर दिया विराजमान तुम्हें ।४।

।। वार्ता ।।

महन्त श्रयोनाथ जी अस्थल बोहर मठ में आये तो यहां भी रोगियों की भीड़ रहने लगी सौ-२ दो सौ-२ रोज आणे लगे तब महन्त जी ने अपने गुरू जी की यादगार में एक अस्पताल की स्थापना करी जिसमे आखो का ठीक इलाज होणे लगा। हजारों व्यक्ति लाठी का सहारा लेकर आते और उनको दीखणे पर बाबा की दुवा मनाते जै हो माहाराज थारी। खुश होकर आपने घर जाणे लगे। बड़ा भारी परमारथ का काम रोगियों का अस्पताल न्यारा आखों का न्यारा अच्छे अच्छे डाक्टरों को रखा। उनको रहणे के लिए जगह बनवाकर दी क्यों जरूरत पर तैयार मिले। इन सब कर्मचारियों को तनखा मठ की तरफ से दी जाती है। मठ अस्थल बोहर की तरफ से लोगों का भला किया जाता है।

भजन नं० ७८

टेक– बाबा श्रयोनाथ महन्त की झूठी गई बोर नहीं
आयुर्वेदिक कालेज जैसा हरियाणे में और नहीं

विद्या में परिपूर्ण होकै बड़े प्रवीन हुये चातुर
फेर दुनियां का भला करण में धणे मस्त लवलीन हुए
धणे ईलमदार आधीन हुए कोऐ कर सकता इसी गौर नहीं।१।

सारे हिन्द में पहला नं० नाम थारे विखात हुऐ,
काया कलप बणा दी उनकी जिस पर थारे हाथ हुए
ऐसे गुरू श्रयोनाथ हुए डटे कामी कपटी चोर नहीं ।२।
जितने महल पुराणे थे वहां कोठी चिणा दी नई-२
श्रयोनाथ सिनयर साधु काम बान्धग्या सही-सही
धर्म योजना कई-२ रहे ठन्डे शील कठोर नहीं ।३।
देवता लोगरहे प्रसन्न जित सन्त ग्रन्थ का गाणा
दरशन करत सकल दुःख भाग्ये जो सिधा का थाणा
रामेश्वर हो एक दिन जाणा सदा रहण ने बोहर नहीं ।४।

॥ वार्ता ॥

श्री गुरू मस्तनाथ जी के बाद जितने भी उनके शिष्य हुए उन सबकी प्रतिमा संगमरमर की जयपुर से बणवा कै मंगवाई और गीताभवन बड़ा विशाल मन्दिर बणवाया। उसमे प्रतिमा पधराई इस मन्दिर जैसा हो सकता कि हरियाणे में और नहीं ५० लाख की लागत से पूज्य महन्त श्रयोनाथ जी ने तैयार करवाया था महन्त श्रयोनाथ एक धर्म परायण योगी थे जो मुह से कह दी सोई करके दिखा दी सच्चे और इमानदार थे। हरियाणा विधान सभा से चुनाव जीतकर स्वास्थ मंत्री के पद पर आये। ७ महीने ११ दिन इस पद पर रहे लेकिन तनखा का केवल एक रुपया लिया। भ्रष्टाचार को देखकर खुद

अस्तीफा देकर आये थे। क्योंकि महन्त श्रयो का स्वभाव बहुत तेज था इसलिए कुछ आदमी उनकी बुराई भी करते हैं उन्हें गलती पर पकड़ बाहर कर दिये कई सर्विसमैन इसलिए बुराई करते हैं।

भजन नं० ७६

टेक–पूज्ये महात्मा श्रयोनाथ करकै काम दिखाये,
अस्थल बोहर मठ में जिसने अैस आराम दिखाये ॥

अमरत रस बरसे वाणी प्रेम प्यार में भरकै,
पक्के थे मजबूत बात में कभी रहे ना डरकै,
सभ की एक भावना करकैं दुवा सलाम दिखाये ।१।

रहे जमी के साथ बात गुरू इसे बान्धगे पाले,
पैतालिस बर्ष रहे गद्दी पर सबके देखे भाले,
नल पाणी विजली के उजाले आठों याम दिखाये ।२।

भीसम जैसी ताकत थी उसा कर दिया मान गुरू नैं
सभ की कला सबाई राखी धरकै ध्यान गुरू नैं,
चिमका दिया अस्तान गुरू नैं गंगा धाम दिखाये ।३।

पूज्य महन्त जी श्रयोनाथ का चेला रहे पुजारी,
श्री हजारीनाथ महात्मा विद्या रखते सारी,
रामेश्वरनाथ कहे प्रचारी सुभा मुलास दिखाए ।४।

भजन नं० ८०

टेक–करके आन ज्या कुरबान मान
भगवान ध्यान में जो लीन रहे।

४५ वर्ष रहे जो रज के भगती के जेवर सजकै
मेर तेर और हेर फेर
वण शेर सही आसीन रहे।१।

जो श्री गंगा में जो बोगे अगम अगत की राही टोहगे
वे होग्ये धार से पार सार नर नार
नहीं वो आधीन रहें।२।

थारे दर्शन नै मनवा भटकै एक बार फेर दर्श दियो हटकै
रटकें राम नाम सुबये स्याम
धाम धन स्याम का दिल आकीन रहे।३।

सारे जगत की खैर मनावें इसे पुर्षों ने दुनिया चावै
म्यू गावै रामेश्वर नाथ बात दिन रात साथ प्रवीन रहे।४।

।। वार्ता ।।

ता० ७–१–१९८५ में पूज्य जी ने शरीर पूरा किया सम्वत २०४१ तिथि पौह की पूर्णमासी वार सोमवार

भजन नं० ८१

७ जनवरी पूर्णवासी भवसागर से पार गये
सिद्ध शिरोमणि श्रयोनाथ योगी परलोक सिधार गये ।।

होगी पूरी जोत एकदम जिसको पूरे कहते सांस,
सेवा कै मां बहुत धणे थे रहगे खड़े आपके पास,
हुआ अचम्भा जीर चला ना एकदमा सारे हुए निराश
मंगलवार को दई समाधि अमरापुरी में हो गया बास
२०४१ संवत वार खास सोमवार गये ।१।

होग्गा पूरा यीग आपक लख चौरासौ करगे पार,
सतगुरू जी ने चोला छोडा चेले रोये टक्कर मार
गुरूभाई जो रहे आपके सभी भेष ने किया विचार
कर कमलों से चादर देगे चांदनाथ जी आज्ञाकार
निति के अनुसार काम कर सारया भार उतार गये ।२।

चार चांद दिए लगा आपने करगे कठिन कमाई,
तीन-२ मंलि की बिल्डिंग खुद तैयार कर ई
सोने के समान ठेठ तक चेहरे की रुसनाई
आणे वाले नक्शे में हो दिन दिन कला सवाई
गुरू मस्तनाथ जैसी पदवी पाई कर बहोत घणा विसतार गये
कर बहुत धणा विस्तार गए ।३।

कित दुनिया में टोहवेंगे ना सतगुरू पाणे के
इसी जगह पर चले गए ना वापिस आणे के
भूत पूर्व रहे मंत्री इस हरियाणे के
लीया ननेरैं जन्म नाथ थे सादे बाणे के,
रामेश्वर बलियाणे के कर धारमिक प्रचा गये ।४।

।। वार्ता ।।

सज्जनों सन १९८४ में महन्त श्रयोनाथ जी अपने उत्तराधिकारी शिष्य श्री चांदनाथ को गद्दी पर बैठाया। सन ८५ में गुरू जी ने शरीर पूरा किया सन १९८६ में श्री चांद नाथ जी ने अपने कुरू का मेला किया जिसमे आठ मान १२ पंथ अन्य सभी सम्प्रदाय के साधू आये। देसी घी की सत सतपकवानी ३ दिन भंडारा चला। एक सौ ग्यारह रूपये चीपी सबको दी व एक-२ कम्बल दिया सभ साधू सन्तों को।

भजन नं० ८२

टेक–बाबा श्रयोनाथ महन्त का मेला हुआ बड़ा भारी।
योगी और सन्यासी आये सीताराम धनूषधारी ।।

देसी घी की सतपकवानी चला तीन दिन भंडारा,
जो जाड़े की टक्कर ने आटैं रोटी जीसा कम्बव भारा
सभ सन्ता ने एक-२ कम्बल चीपी के एक सौ ग्यारह,
इन्तजाम में कसर नही थी नारायण झुककर आरा
पंथ जुड़े थ १२ अठारा उस दिन की सोभ्या न्यारी ।१।

सभापति अवैद्यनाथ जी मंत्री रामनाथ आया
८ मान के पीर विराजे फिर होग्या मन का चाया
श्री मस्तनाथ का जीतना वेड़ाकर आदर चादर लाया
सभ पीरा ने चादर दे दी तब से मान बराबर पाया
हीर के घर का जन्म बताया जिसकी पूर्ण जिम्मेवारी ।२।

लगन मुहरत सुभ दिन देख्या ऐसा विधी विधान कीया
वेद सासत्र जाणन आला उन सारा का मान किया
सर्व आत्मा एक समझकर आनन्द पद का ग्यान किया
श्री चांदनाथ ने सतगुरू जी के बिस्तर पर अस्तान कीया
दर्व बहोत पुन्न दान किया फेर बणे आप धणे उपकारी
योगी ओर सिनासी आये सीताराम धनूषधारी ।३।

लखीनाथ दिल्ली तैं आया धन माया बर्षा ने आला
जुगतीनाथ सुमेरनाथ पहोंचा खास मुहाणे आल
गान्धरा आले सिद्ध का चेला हरदम मान बढ़ाणे आला
गोज्या आले सिद्ध का चेला सीतानानाथ सुसाणे आला
रामेश्वर बलियाणे आला छोटा सा प्रचारी ।४।

भजन नं० ८३

महन्त चाँदनाथ योगी

टेक–बेगमपुर सूबे दिल्ली में श्री चाँदनाथ नै जन्म लिया
अस्थल बोंहर मठ में आकै भगती प्याला आण पीया।

श्रयोनाथ मिले गुरू पूरे चरण में सिर डार दिया'
सारी जिन्दगी याद रहेगा जितन उनने थ्यार किया
सिर का भार उतार दिया करके सतगुरू ने नरम हिया ।१।
उस राही के उपर चाले जिस पर योगी भले गये,
करया काया का सुधार प्यार तें सांचे कै में ढले गए
जहां भेजे वहां चले गए तुम्हें ठीक ध्यान से काम किया ।२।

थारे पूर्वले शुभ कर्म थे न्यू रिषीयां कै द्वारे आगे,
अब भी अच्छे कर्म तुम्हारे इसीलिए तो फल पागे,
फेर गुरूवां गे मन को भागे बन्धन कट कै हुए रिहा ।३।
ज्यु के त्यु श्री चांदनाथ के समय चालरे छातर
चार गुणां माया फैला दी धणे अक्लमंद चातर
रामेश्वर दर्शन की खातर फिरे भटकते रामसिया ।४।

॥ वार्ता ॥

सज्जनों श्री चांदनाथ गऊशाला में सेवा करते हुए गुरुजी ने वाणा दिया और पूर्ण ऐतबार समझकर गुरूजी ने थेहीड़ दरगाह की ताली देकर कै राजस्थान मे भेज दिया वहां जाकर के अपने सभ गुरूभाइयों से ठीक काम किया। गुरुजी आपसे अति प्रसन्न हुए फिर आपको थेहड़ी से बुलाकर अस्थल बोहर मठ का महन्त बना दिया। जेठ वदी अष्टमी हठ यी २१-५-१९८४ ता० थी।

भजन नं० ८४

टेक–सन १९८४ था इकीसमई वार सौमवार।

गद्दी अस्थल बोहर के ऊपर चांदनाथ होगे हकदार
सतगुरु जी के ऊपर कितनी आफत आई थी-
जो मठ के अन्दर रहा कुठारी उसने गद्दी चाहाई थी,
सतगुरु जी से बेमुख होके माया बहोत लुटाई थी

आजादनाथ कारौर आले नै कितनी गलती खाई थी
फेर गुरुजी ने बात दबाई थी पुलिस मंगाके बेसुनार ।१।

जिसने सेवा करी दरगा में उनके भाग सवाये,
ऊँच नीच कर्मों से होते न्यू लिखकर वेद वणाए,
ऋषि महात्मा बिन दुनियां के हो ना मन के चाहे,
सभ का मान राखने आला आनन्द पद को पाए
नेम टेम से होते आए मठ अस्थल के कारीबार ।२।

शुभकर्मों से कटज्या लख चौरासी का फेरा
वरतवान जो पीर आजकल जुम्मेवारी लेरा
मिन्ट-२ में सभ बातां पर सही ध्यान जो देरा
धर्म संस्था कई कई है कारोबार घनेरा,
भारत कै में पहला डेरा धौके पूजै सब ससार ।३।

गुरु मस्तनाथ भगवान हुए अस्थल बोहर पुराणाधाम,
जहां आरती पुजा होती दोनो बखत सुब और शाम
भजनानंदी रहे महातमा सेवा के मां सुभा मुलाम,
धारमिक प्रचार जहां पर परमारथ के होरे काम,
रामेश्वर नाथ रट राम नाम जो रहै चरण का तावेदार ।४।

॥ वार्ता ॥

महन्त श्रयोनाथ के बाद कुछ कालिज के कर्मचारियों ने सतझा कि अव हड़ताल करके जन्दी-२ अपनी तनखा बढ़वाओ

जीब मन करा तभी हड़ताल कर दी वह स्टाप तीसरे महीने हड़ताल कर लेते थे कि हमारी तनखा बढ़ाओ महन्त चांदनाथ जियो ने उस स्टाप को ही बदल दिया कर्मचारी और आ गए वे हड़ताल करे बैठे रहे आयुर्वेदिक कालेज सुरक्षित रखा होस्पीटल फार्मेसी और सदव्रत तथा मन्दिर मे ५ चिराग पहले से ही जगतौ आ रही है। श्री महन्त चांदनाथ जी ने शिवजी के प्राचीन मन्दिर और गुरू श्रयोनाथ की समाधि पर २ चिराग चेतन करवाये देसी घी के अस्थल बोंहर मे ७ चिराग रात दिन चेतन रहते हैं।

"काफिया"

एक-एक डग पर चलते ३-एकदम दे सैन्या काम दिखाई
पात फूल फलां से हरदम बाग मे बहार जोर की आई
देख रेख मे माली रहते करते दोनो बखत तराई
जहां कहीं मे बेकार जमीन पड़ी थे उसमे वृक्ष लगाए
जहां मन्दिर मे फर्श टूट गए थे
वहां संगमरमर के पत्थर बिछाए
चौखट देहल कीवाड़ हटकै सानदार नए-२ करवा दिए
मन्दरों की सभी रीपेरिंग रंग रोगन

भजन नं० ८५

टेक—श्री चांदनाथ ने चोगरदे की एकदम करदी चारदीवारी
पहला नं० काम करा यो जीत्या खास मोर्चा भारी

६ फुट ऊँची भीत काढ़ जाली कै नैट लगाए,
चारो तरफ बड़े से बड़े दरवाजे बणवाए
कदम-कदम पर न्ए काम न्यु मतलब से करवाए
बेमतलब दरवाजे भीतर कोए ना घुसने पाए
सभ पर चौकीदार बैठाए पूछताछ की जुम्मेवारी ।१।

सभी जगह करे काम सही ये आदि और अनादि
सदियों पुराणे मन्दिर मे हटके मरम्मत करवादी
संगमरमर मन्ढ़ दिया सारा घी को जोत जला दी
टूटे फूटे महक मन्डी एकदम सारी तुड़वा दी
वहां बड़ो-२ वारिक बणवा दी चांदनाथ ने कर हुशियारी ।२।

चाले एक इशारे मे रहे योगी एक सांस के
लगी चिणाई रहती हरदम धन्धे बारों मास के
आलीस्यान कमरे बणवाए बढ़िया खास राहास के
छोटी फुलवाड़ी मे बच्चे पढ़ते एक रास के
लड़के पढ़ते आसपासके बैठण खातर मोटर लारी ।३।

हे प्रताप पुन का ठाडा बन्धे धर्म के पाले
इख चोरासी जियाजून का भला चाहने वाले
८ वर्ष हुए गद्दी पर सबके देखे भाले
गुरू मस्तनाथ के बेड़े के हैं चांदनाथ रखवाले
राबेश्वरनाथ बलियाणे आलेन या कथा सुणा दी सारी ।४।

।। वार्ता ।।

श्री चांदनाथ जी ने गीता भवन मे श्री बाबा मस्तनाथ जी ने जहां-जहां पर्चे निए वे सभ चित्र छपवाकर गीता भवन मे लगवाए गुरू श्रयोनाथ की प्रतिमा संगमरमर की जयपुर से मंगवाई और गीता भवन मे पधर ई। गद्दी बैठने के समय शंकर भगवान का मन्दिर और गद्दी भवन दोनो निर्माणाधीन थे। आपने सम्पूर्ण करवाए और गुरु जी की समाधि मन्दिर ५० लाख की वनराशि से ३ साल मे तयार करवाया।

।। दोहा ।।

लगे नौकर आणकर सभ तें राखा मेल।
इब खुद मालिक बण गए हैं कुदरत का खेल ।।

भजन नं० ८६

टेक–जगत मे करामात थारी,
आरती मस्तनाथ थारी
तुम्ही हो कलियुग के अवतार
थारी माया है अपरम्पार
मार के पांच लगे ना आंच
सांच ये ईलामात थारी ।१।
जिन्होने धरा तुम्हारा ध्यान
हो गई सभ मुश्किल आसान

करी ना देर सुणी है टेर
मेहर दिन रात थारी ।२।
रटो गुरू मस्तनाथ का नाम
देव की पूजा आठों याम
सुबले और स्याम करो शुभकाम
राम जी रहे साथ थारी ।३।
रामेश्वर चरण के मां ध्यान
मेरा गुरू राखियो आदरमान
ग्यान के धणी लीहाज से धणी
वणी तणी रहे बात थारी ।४।

भजन नं० ८७

टेक–ईब श्री चांदनाथ महाराज आज
सरताज भेख ने जो मान किये ॥
कदै ना गये धर्म तै हटकै
जिसने योग कमाया डटकै
रटकै राम नाम सुबये स्याम काम सही
शुभ कर्म में दान किये ।१।
जीन्हे सतगुरू की वाणी लही
हो गये पार धार से वही
सही ग्यानवान विद्यवान मान
भगवान आनकर स्यान किये ।२।

चतुर श्री चांदनाथ जी पाये,
सलामत कारोबार चलाये
आये न्यारे प्यारे सारे द्धहारे
उज्जवल कर अस्थान किये ।३।
गुरू पीरा ने पहले ध्यावे
कोन्या फरक बात मे पावं
न्यू गाव रामेश्वर नाथ बात सुख साथ
रात दिन ध्यान किये ।४।

भजन नं० ८८

टेक–गुरू मस्तनाथ भगवान स्यान दिखलाओगे ।
पूर्ण करकै मेहर फेर कद आओगे ॥
थारी लीला जग में न्यारी तुम सच्चे परोपकारी,
एक बारात जो प्यासी जारी दे दिया
प्रचा ये बड़ा भारी दूध पिलाओगे ।१।
थारे दरशन की अभिषा म्हारी पूरी करियो आसा
मतना करो निरासा हर जीव मरे था प्यासा
मेह बरसावोगे ।२।
ना हटना थारे दुवार तैं कही मत होणा तलबगार तैं
बचा दे न्यारा चार तै मेरी नईया बिच धार तैं
पार लगाओगे ।३।

कह रामेश्वर नादान सुमर के मस्तनाथ भगवान
जीसने लिया गुरू पै ग्यान उनकी ऊँची होगीस्यान
सुभा में गाओगे ।४।

।। वार्ता ।।

श्री चांदनाथ योगी ने गांव समाल में पश्चिम की तरफ दिल्ली रोड पर बहुत बड़ा पहलवानों का अखाड़ा बनवाया। कुछ जमीन हरिद्वार में खरीदी है

भजत नं० ८६

टेक–अस्थल बोहर में मन्दिर सुन्दर बाबा मस्तनाथ
सरण मनें थारी सै
सालाना मेला भरता दुनियां पुजण आवै स
मनोकामना पूरी होज्या जो कोए जैसा चावै सै
मनाइच्छा फल पावै सै जो रटता है दिन रात ।१।
माता पिता सत्तगुरू कीं वाणी सच्चे दिल तै लहया करे
मन की विरती रोक लिये ना भरम जाल में फहया करे,
बड़े बढ़ेरे कहा करै ना रहती करी खुभात ।२।
चक चन्दन सा खिला हुआ है मन्द्र आलीस्याम तेरा
ओर ग्यान सब झूठे होज्यां ब्रहमज्ञान सोई ग्यान तेरा
मैं खडा दास भगवान तेरा मैं कहूं जोड़ के हाथ ।३।

कह रामेश्वर नाथ सही माया अजब निराली है
सब फुलवाड़ी थारी है तु ही बाग का माली है
थारी कीरती गाली है ये थारे हवाले गात ।४।

।। वार्ता ।।

श्री सिद्ध चौरंगीनाथ और श्री बाबा मस्तनाथ गोपीचन्द भर्तहरि तथा रणपतमानधाता तथा पीर तोतानाथ, मिजलस नाथ, रामचन्द नाथ जैसे सिद्ध पुरुष यहां हुये और अब भी यहां हैं।

भजन नं० ६०

टेक–आठ पहर सुर्ती रहती सच्चे भगवान में।
लाए आसण बैठे सैं सतगुरू के ध्यान में ।।

कोयल से भी मीठी वाणी प्रेम से भरी
गोपीचन्द तप रहे धुणे पर गेल्यां भरत हरी
तपे तपेसरी धूणे पर बोहर अस्तान में।१।

मस्तनाथ सतगुरू की माया चलते रहे भन्डारे,
नोमी नै मेला भरता सभ द्रसन करणे आरे।
लगे सों से चीमकारे देवता थारी स्यान में।२।
आदी और अनादी चलता आवें भगवां वाणा,

प्राचीन इतिहास खास है जो सिद्धां का थाणा
मठ अस्थल है बहुत पुराणा हिन्दुस्तान में ।३।
जिनकी सिधी नीत रहगी उनका भाग सवाया।
थोड़े दिन का मेला से ना ज्यादा टेम बताया
जीयानन्द गुरू की माया ओ भरदे ग्यान में ।४।

भजन नं० ६१

तर्ज–सांगीत

टेक–जी इस धर्म कथा ने बरणुगा एक भजन में
बेगमपुर सुब्ये दिली में राव कै घर पुत्र कुहाया
जीव तो अमर है सदा सुभ कर्मों सें मन का चाया
बचपन में पढ़ाई करी फेर अस्थल बोहर आया
सतगुर श्रयोनाथ जी ने गओ की सेवा फरमाई
वणा दिए फेरनाथ द्रसनी झट होगी तकदीर सवाई
फेर भेज दिए थेहड़ी पूर्ण थारी डीवटी पाई
कर राखी थी कठन कुमाई न्यु आगे राज भवन में ।१।

सन उनीसो ८४ था २१ मई वार सुमार
इस दिन गद्दी नशीन हुए थाम लिया कारोबार
प्राचीन नागा का धुणा डस पर संकर दिए पधार
सारा धुण पक्का कर दिया तकत बिछाए तीन चार
तीखर सर्वर कैर आदी उसको न्यारी नमस्कार

दो दो होके भरके धरते पिवण आवे स अवतार
गंगा जमना धुणे ऊपर ले अटल भावना मन में ।२।
बीचा लेकै भीत काढ़ी कालीज और मन्द्र न्यारे
बच्चा का सकुल बणाया सरु से इंगलीस उन्हे पढ़ारे
चोगीर देकी चार दिवारी दरवाजा पर चोकीदारे
प्रराचीन संकर का मन्द्र उसकी मरम्मत करवा दी
पाथर से मन्ढ कैने सारी घी जोत वाहा लादी
सतगुरू श्रयोनाथ समाधी ऊंची बिल्डिंग बणवादी
इब ७ चिराग जल रहै घी के सैं कसर हवन में ।३।
चांदनाथ ने रौहतक कै मां एक सकुल बणाया रैं
गाम गेला मोटर लादी इसा इन्तजाम कराया सैं
गाम समाल पहलवाना खाड़ा भी खुलवाया सैं
फर्स गिलोरी बिछा दिए मंद्रों में करके ख्याल
बढ़ा होल एक बणन लागरा बणते ने हुए कई साल
प्रउपकारी जीव आप आछी करते देखभाल
रामेश्वर नाथ रीषी मुनीया का जस गाले नए सन में ।४।

भजन नं० ६२

तर्ज–चोकलिया

टेक–गुरूमस्तनाथ का मन्दर सुन्दर सदियों से चलता आरा
पूज्ये महन्त श्री चांदनाथ ने नकशा बदल दिया सारा

सतगुरू जी ने आपने सिषों में छाटे सिनयर
इनको गद्दी सोप दिई फेर होगे बेडर
श्री चांदनाथ को काम करण में छोड़ी नहीं कसर
एक-२ डग पर चलकर देखो काम मिले न्यारा न्यारा ।१।

पांच चिराग जला करते दो ओर कर दिये बाध तुम्हैं
मन्दरों कै माँ माया ला दी निया देई मरयाद तुम्हें
पड़ी भूल में ना कीते छोड़ी गुरुवां की जय जाद तुम्हे
ना तुरसाई कीसे कै दिल पर राखी तबीयत स्याय तुम्हे
धरू कहू के पहवाद तुम्हे राम कहूँ के मोहन प्यारा ।२।

गुरू मस्तनाथ अवतार हुए ना घाट करामात का
जाहा तांहा पर वचन दिए नित साचा रहा बात का
वही सरीर औ मढ़ का पीर जो करते काम चाहात का
महमा बाणी डबल कहानी साथी रहे साथ का
चन्द्रमा ज्यु चांदनाथ का खिला रहगा फुल हजारा ।३।

सतगुरू जी के बाद आपन आछी राखी टेक
कीसे बात में फरख नहीं दिई मार रेख में मेंख
काम चोगणा कर दिखलाया नही बाल की छेक
सोच समझ के चालणीया हो सादा भोला नेक
रामेश्वर नाथ कह ऐक जगह पर पड़ा हुया
पाथर वी भारा ।।४।।

।। वार्ता ।।

महन्त चाँदनाथ ने जीव से इस मठ का कार्य सम्भाला है तब से कीसी बात में फरक नही आण दिया कई संहता अस्थल वोहर में चल रही है सदाव्रत आयुर्वेदिक कालीज फारमेशी नेत्रों का अस्पताल बच्चों का स्कूल ज्यु के त्यु कर्या होर हैं एक महन्त श्रयोनाथ जी के सिष आनन्द नाथ हुए जो कि गुरू गोरक्षनाथ मन्दर भरथरी गुफा भेष १२ पन्थ का दलीचा हरिद्वार अखिल भारतीय योगी महासभा प्रधान मंत्री के पद पर उपस्थित हैं इनके विसे में एक काफिया सन १९८६ के मां मंत्री जी के पद पर आये ऊपर के दो होल बणा के तुमने कमरे साठ बणाए फेर भन्डार और धुणा भी दो-दो मंजिल के करवाये ।

भजन नं० ९३

तर्ज–सदके जाँवा

टेक– जीला चतोली यू पी के मां राज पुताना जात
बाहा पर जन्मे आन्दनाथ ।।

बाहाण और भाई काका दादा जोधे और मजबूता की
घर कै मां जी लाग्या कोन्या मेहर फिरी अवधूता की
नगरी गोचर राजपुता की बसे पिता और मात
गाव घर छोड़ दिई सब बात ।१।

श्रयोनाथ गुरू कै आगे आके सिस झुकाया था
लेके बाण दूर डिगरगे भजन ध्यान जमाया था
फेर नजरा के मां आया था धणा भजन कर दिन रात
खुशी में भरगी सब पन्चात ।२।

वाराह पंथ योगी नाथ ने प्रधान मंत्री लीये
हरीद्वार पर नाथ दलीचा फैस्लटी के काम किए
अखिल भारतीय महासभा की बैठे जोग जमात
ये सर्म समाई के ख्यालात ।३।

रामेश्वर नाथ जत्ती सत्तीयो के दरसन से मन का चाहा
सभी देवता खुश हो जाते प्रसन मन का चाहाया
बरसन से हो मन का चाहाया प्यार की को बरसात
गुरू जी धरगे सर पे हाथ ।४।

।। वार्ता ।।

जवाब कवी का

सज्जनों महंत श्रयोनाथ के एक शिष्य श्री हजारी नाथ सारी उमर मंदरों की सेवा करते रहे इसलिए उनको पुजारी के नाम से पुकारते हैं हजारी नाथ नाम तो जो जाणते हैं पहले से वही कहते हैं पुजारी जी का राजस्थान में जनम हुया घर से अणपढ़ आए थे बाबा के दरबार में आकर के नाथ जी के घर में पूर्ण ग्यान लीया ।

भजन नं० ६४

टेक–योगी श्रयोनाथ गुरु ने धर दिया न।म हजारी नाथ
मंदरो की सेवा में लगाया पकग्या नाम पुजारी नाथ
सील सुभा संयोष रूप से खानी बानी राखी
अस्थल बोहर मठ के अंद्र आवा दानी राखी
कीते आणा जाणा दिकतदारी ना परेसानी राखी
कीसे किसम की आसा त्रसना नहीं हैरानी राखी
सारे के निगरानी फेर बणे आप दरबारी नाथ ।१।
पूर्व जनम के सुभ कर्मों से बणग्या अदना से आला
ज्ञान का अंकुश दिया गुरू ने हाथा में गुर माला
कर्म योग बिन कोण जीत ले समंद रिषी का पाला
सिबकी पुरी व्रहन का बासायो होत बड़ी धर्म साला
जीनके हाथ अमरत का प्याला औ हैं बाबू रह भारी नाथ ।२।
आड़ै रहण की रिवाज नहीं में देखू नजर ताड़ कैं
एक दिन सबने जाणा होगा ज्यान से हाथ झाड़ कै
सींगड़ी के केहरी की त्ररीया चाले गए दहाड़ के
इंद्र आला ताज मिले ईपे बेठे बाट हाड़ क
बहोत धणा के कान पाड़ कैं बणा दिए त्रिपरारी नाथ ।३।
दया धर्म का मूल जगत में ध्यान भजन में लाया
जनम जात का जोर चले ना कर्म ही बड़ा बताया
पुर्व जनम के सुभ कर्म का समझ लीए फल पाया
रामेश्वर ले दार प्यार से जस गुरु बाका गाया
जीयानंद गुरु यी भाया बणा दिया प्रचारी नाथ ।४।

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पथ योगी महासभा

नाथ सम्प्रदाय द्वारा चित्र तथा प्रकाशित पुस्तकें

पुस्तक सूची

१. अस्थल बोहर संक्षिप्त इतिहास
२. श्री गोरक्ष सहस्त्रनाम स्त्रोत
३. योगी सम्प्रदाय नित्यकर्म संचय
४. श्री नाथ चरित्र
५. अनुभव भजन माला
६. श्री मस्तनाथ चरित्र
७. श्री भर्तृहरि निर्वेद नाटक
८. भारत दर्शन
९. शब्दावली व भजन
१०. योगी सम्प्रदाय मंत्रावली

११. नाथ शाबरी मंत्रावली
१२. योगमाया पूजा पद्धत
१३. श्री गोरक्षनाथ स्तवाँजलि
१४. गोरख बानी
१५. गोरक्ष सिद्धांत संग्रह
१६. गोरक्ष पद्धति
१७. गोरक्ष शतक
१८. योग बीज
१९. नाथ सिद्ध चरितामृत
२०. सिद्ध सिद्धांत पद्धति
२१. सिद्ध प्रयोग चिकित्सा
२२. वैराग्य शतक
२३. अमनस्क योग
२४. हठयोग प्रदिपिका
२५. योगासन
२६. योगवाणी अंक (गोरखवाणी)
२७. योगवाणी अंक (सिद्ध दर्शन)
२८. योगवाणी अंक (गोरक्ष चरित्र दर्शन)
२९. योगवाणी अंक (शिव संहिता)
३०. योगवाणी अंक (नाथ तीर्थ स्थल)
३१. गोरक्ष दर्शन (हिन्दी फिलासॉफी)
३२. फिलासॉफी ऑफ गोरक्षनाथ
३३. आदर्श योगी
३४. गोरक्ष वैदिक पूजा पद्धत

चित्र (फोटो)

१. गोरक्षनाथ जी के छोटे बड़े कैलेन्डर
२. गोरक्षनाथ जी के छोटे बड़े फोटो
३. राजा भर्तृहरि, गोपीचन्द, बाबा मस्तनाथ, नवनाथ चौरासी सिद्ध, मत्स्येन्द्रनाथ, बाबा बालकनाथ, सुन्दर नाथ, भैरवनाथ, ज्वाला माई आदि सभी नाथ सम्प्रदाय के फोटो

कैसेट

१. श्री गुरू गोरक्षनाथ चालीसा
२. श्री चौरासी सिद्ध चालीसा
३. अन्य भजन कैसेट

चाबी के छल्ले

लॉकेट–I

लॉकेट–II

नोट—मूल्य, पार्सल खर्च, मनीआर्डर भेजने पर फोटो, पुस्तकें व कैसेट भेजी जायेंगी।

मुद्रक :—
शिव शक्ति प्रिन्टर्स
पालीवाल धर्मशाला, अपर रोड, हरिद्वार।

❀ श्री नाथाय नमः ❀

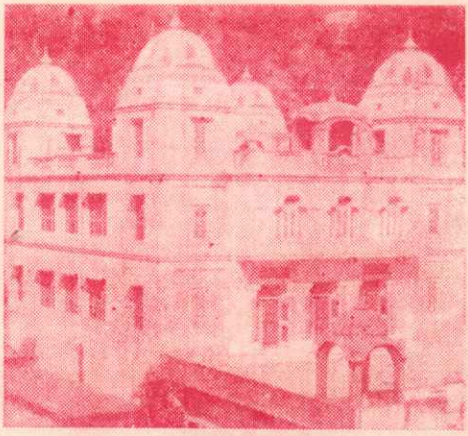

गुरू गोरक्षनाथ मन्दिर तथा

श्री भर्तृहरि जी की प्राचीन गुफा

राजा भर्तृहरि नीति, वैराग्य, श्रृंगार तीनों के रचियता थे। श्री योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के शिष्य हुए। उज्जैन मालवा राजधानी छोड़कर श्री गंगा भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर में गुफा का निर्माण करके यहाँ तपस्या की थी। उस समय से यह मन्दिर व गुफा विद्यमान है। हरकी पैड़ी का राजा विक्रमादित्य ने भर्तृहरि के नाम से निर्माण किया था।

नोट— हरिद्वार में तीर्थ यात्रा पर आने वाले भक्तजन इस प्राचीन गुफा के दर्शन करके पुण्य लाभ प्राप्त करें।

पुस्तक प्राप्ति स्थान—

गुरू गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार (उ० प्र०)

मुद्रक—

शिव शक्ति प्रिन्टर्स, पालीवाल धर्मशाला, अपर रोड, हरिद्वार